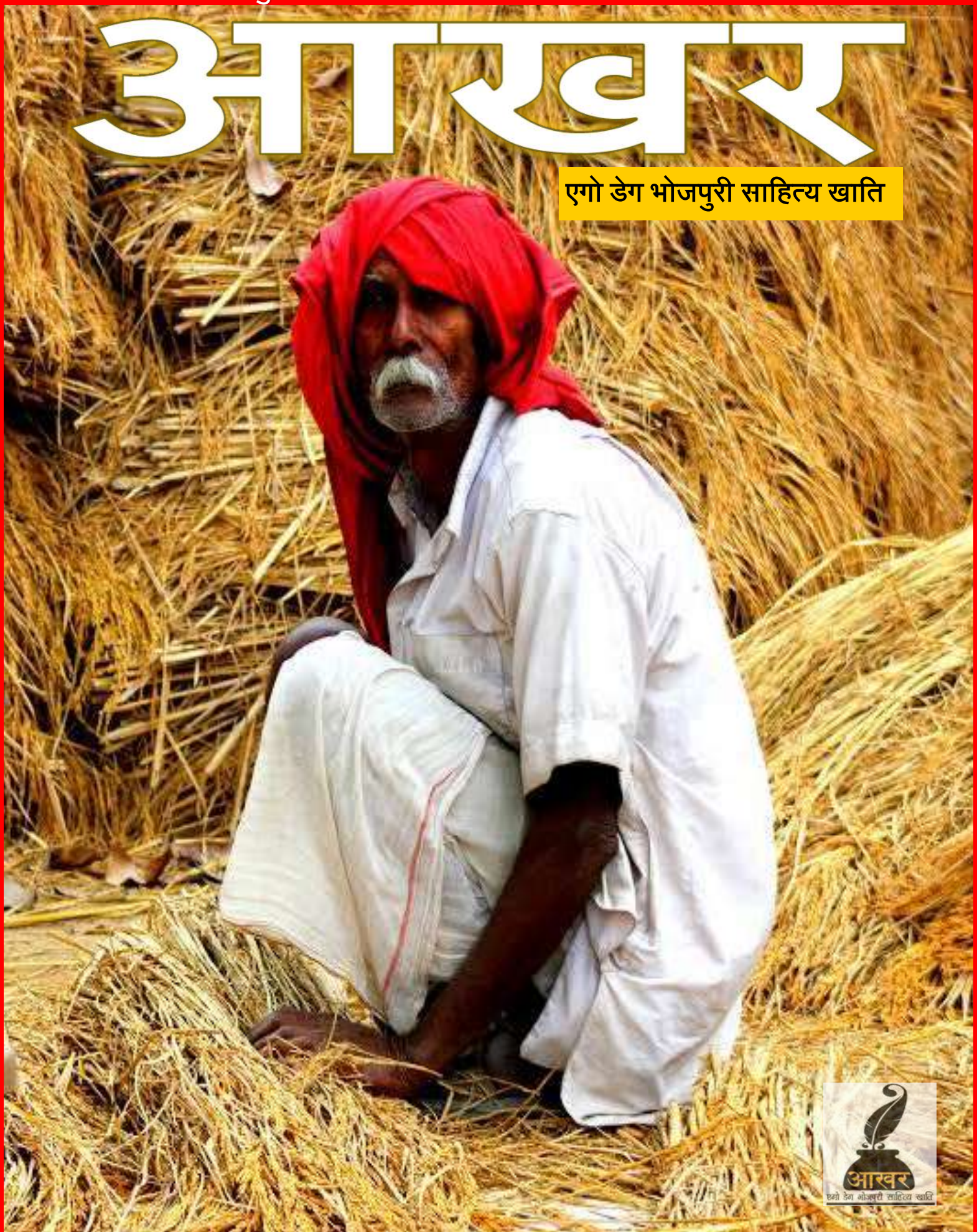
मासिक भोजपुरी ई-पत्रिका 2015 फ़रवरी, प्रवेशांक

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति



www.aakhar.com facebook/aakhar

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनिकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयंवरा बक्सी, पी. राज सिंह

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

आखर

वर्ष: 2015 अंक 1 फ़रवरी । ई - पत्रिका



पुरबी
जौहर शाफियाबादी

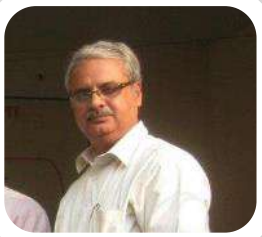
भोजपुरी सिनेमा
प्रमोद तिवारी





भोजपुरी के स्वरुप आ अपेक्षा
डा॰ गुरुचरण सिंह 'गुरु'

बतकूचन
सौरभ पाण्डेय





बेमार बचवा के हंसी
ध्रुव गुप्त

भोजपुरी के सेवा में आखर
रीता सिन्हा





बेद - बदलाई
निलय उपाध्याय

जाति, पार्टी आ पुरस्कार
जितेंद्र वर्मा



परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
राजेश सिंह , ओमान
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र

प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिम्मेदारी लेखक के बा । कवनो भी विवाद के बात प न्यायालय क्षेत्र सिवान रही ।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं । सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं ।

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter: @aakharbhojpuri
www.bhojpurisahityangan.com

आखर के फुलवारी से :

शुभकामना	:	पाण्डेय कपिल	4
आपन बात	:	आखर जमात	5
भोजपुरी साहित्य के जतन - अब ना त कब ?	:	आखर	6
बतकूचन	:	सौरभ पाण्डेय	8
भोजपुरी के सेवा में आखर	:	डा० रीता सिन्हा	10
बेद – बदलाई	:	निलय उपाध्याय	11
जात पार्टी आ पुरस्कार	:	जितेंद्र वर्मा	14
दिल जब बच्चा था जी	:	बृज किशोर तिवारी	16
ग्राम कथा	:	शशि रंजन मिश्रा	18
काल चक्र	:	अश्विनी रुद्र	21
हरवाहा के मान	:	प्रभाष मिश्रा	24
घूस	:	धनंजय तिवारी	27
हथेली में समय	:	डा० अनिल प्रसाद	33
पुरबी	:	जौहर शाफियाबादी	37
बेमार बचवा के हंसी	:	ध्रुव गुप्त	38
बाल - गीत	:	शचि मिश्रा	39
फुआ	:	शैलजा पाठक	40
ए सुरूज़	:	ऋषिकेश चतुर्वेदी	41
एगो घर लिखत	:	डा० सोनी पाण्डेय	42
मनवा हमार	:	मालती त्रिपाठी	43
भोजपुरी के स्वरुप आ अपेक्षा	:	गुरु चरण सिंह	44
भोजपुरी के संतमत - सरभंग संप्रदाय	:	संतोष पटेल	46
जँतसार	:	अतुल कुमार राय	53
यूरेका	:	आशुतोष सिंह	55
टोना ,टोटका , टोटरम	:	उदय नारायण सिंह	57
महफ़िल	:	चन्दन सिंह	60
बिदेसिया के पाति	:	निराला	64
रोजगार, खाड़ी (गल्फ) देश	:	अनिमेष कुमार वर्मा	66
भाषाई एकता आ लोकगीत	:	देवेंद्र नाथ तिवारी	68
कवना समाज के प्रतिनिधि हऽ भोजपुरी सिनेमा?	:	प्रमोद कुमार तिवारी	70
भोजपुरी संस्कृति के वाहक भोजपुरी सिनेमा ?	:	डा० एस० के० सिंह	74
इहाँ से कहाँ - भोजपुरी सिनेमा के भविष्य	:	नितिन चंद्रा	77

शुभकामना



आज के जमाना इंटरनेट आ सोशल साइट के जमाना ह। एह जमाना में विकसित देश के अग्रणी लोग के चुने प्रचार-प्रसार के एगो बड़ माध्यम ह। एह युग के प्रतिष्ठानी एगो के मुखिया के निर्वाचन में सोशल साइट के बहुत बड़ महत्व बा। अइसन जमाना में भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर आ भोजपुरी-भाषी क्षेत्र खातिर भोजपुरी-भाषी लोग होये के चाहीं 'आखर' के अभाव के ('आखर' के हम हार्दिक बधाई आ शुभकामना। भोजपुरी के साहित्यिक आ सांस्कृतिक अइना के रूप में हम एह पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति चाहीं।

— पाण्डेय कपिल

2-2-2015

भोजपुरी संस्थान

2, डेस्पेंसरी रोड,

पटना-800024

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

आज से लगभग सवा साल पहिले “आखर” आकार लिहलस । उद्देश्य स्पष्ट रहे, भोजपुरी में उपलब्ध साहित्य भंडार के जन जन तक पहुँचावल आ युवा उर्जा के भोजपुरी लिखे खातिर उकसावल । ई दुनू काम शुरु भइल । भोजपुरी से डाह करेवाला लोग एगो हौवा खड़ा कइले रहे कि भोजपुरी में गद्य साहित्य के अभाव बा । आरोप इहो रहे कि दिन प्रतिदिन लिखाये वाला पद्य भी साहित्य के श्रेणी में ना आवे । आखर गद्य साहित्य लेखन प्रतियोगिता शुरु करवलस आ हर महीना दस गो श्रेष्ठ रचनन के चयनित क के लेखक गण के लगे पुरस्कार/प्रोत्साहन के रुप में भोजपुरी साहित्य के किताब पठावे के शुरुआत भइल । भोजपुरी साहित्य के बढ़ावा देबे खातिर ई एगो अभिनव प्रयोग रहे जवना के खुबे सराहल गइल । लोग जुड़े लागल । धुंध छँटे लागल ।

आज सतरह हजार से बेसी लोग हमनी के साथे बा । हर महीना अलग अलग विधा के लगभग ढाई सौ रचना आखर के अँकवारी में अवतरित होत बाड़ी सन। लिखे वाला लोग समाज के हर तबका के बा । हर आयु वर्ग के बा । कुछ स्थापित साहित्यकार बाड़न त कुछ उभरत भी । पाठक लोग के संख्या भी हजारों में बा । निश्चित रुप से ई जमल पानी में कंकड़ फेंकला खानी बा । हिलकोरा उठे लागल बा । आखर के ईमानदार कोशिश रंग देखा रहल बा । शुरुआती सफलता काम करे खातिर आत्मबल त देबे करेला ,नैतिक दायित्व भी बढ़ा देला । हमनी के अपना नैतिक दायित्व के निर्वहन करे खातिर प्रतिबद्ध बानी जा । ओही दायित्व बोध के पहिलका फूल “आखर ई पत्रिका” रउआ सभे के सोझा बिया ।

साहित्य के साथे ई विडम्बना देखल गइल बा कि ओकर कई गो चेहरा होला । दरबार में पनपी त दरबार के सोझा ढरक जाई । खुशहाली देखी त नाचे लागी । तकलीफ देखी त दरद से बेहाल हो जाई । शायद एहिसे साहित्य के समाज के दर्पण कहल गईल बा । दरबारी साहित्य उच्च वर्ग के ध्यान में राख के लिखल जाला। लेखक के सफलता एह बात पर निर्भर करेला कि जेकरा बारे में लिखाता उ केतना सफल बा । राजनीतिक आ आर्थिक सत्ता के दम पर लिखेवाला रचनाकार हो जाला आ लिखाये वाला महान । मध्यम वर्ग के केंद्र में राख के जवन साहित्य रचाला ओकरा में सौंदर्य आ संघर्ष के अद्भुत समन्वय देखे के मिलेला । एकर कारण इहो बा कि मध्यम वर्ग अपना दुनिया में मगन रहेला । अपना हास्य आ विषाद में केहू के साझेदार ना बनावे के चाहे । समाज के अंतिम आदमी के जब साहित्य अपना में लपेटेला

आज सतरह हजार से बेसी लोग हमनी के साथे बा।

www.bhojpurisahityangan.com

त करेजा बहरी निकल आवेला। भोजपुरिया समाज के बनावट में उच्च वर्ग नदारद बा। एह कारण "आखर" दरबारी साहित्य से परहेज करी। आखर के अँगना में अगर सौंदर्य के शर्मीलापन ,संघर्ष के ताप , विरह के वेदना आ वंचना के छटपटाहट दिखाई पड़ी त ई स्वाभाविक बा । भोजपुरिया समाज में ई सब कुछ लउकेला आ खुबे लउकेला।

"हमनी के ई दावा नइखे कि हमनी के विशेष बानी जा . विशेष बने के चाह भी नइखे ."

हमनी के ई दावा नइखे कि हमनी के विशेष बानी जा। विशेष बने के चाह भी नइखे । बस इहे कामना बा कि माईभाषा के सेवा होत रहे। देश दुनिया में फइलल आखर के एक एक सदस्य अपना माई भाषा के प्रति इहे समर्पण भाव राखेलें । समर्पण के एह यज्ञ में कुछ प्राप्त करे के कामना नइखे। बस होम करत रहे के बा आपन हिस्सा। विश्वास बा एक ना एक दिन एह यज्ञ से "भोजपुरी माई" के पुनर्जन्म होई । अपना गौरव के साथे ...अपना सौंदर्य के साथे।

- आखर

भोजपुरी साहित्य के जतन-अब ना त कब ?

आखर के पहिलका अंक रउवा सभ के आँखी के सोझा बा। नवका लोग के उतजोग के पहिला डेग रउवा सभ के अँगुरी पकड़ के आगे बढ़ो। रउवा सभ के प्रेम आ दुलार से इ नवजात के लालन पालन रउवे सभ के हवाले। अब एकरा के आगे बढ़ावे आ ऊँचाई पे पहुँचावे के जिम्मा रउरा कोरे।

बिसरत बिलमत आपन साहित्यिक थाती के सम्हारे खातिर इ हमनी के लघु प्रयास बा। पिछला दू-तीन दसक में भोजपुरी के रंग रूप बिगड़ल आ साहित्यिक धार लगभग भोथर हो गईल। अश्लीलता के फइलत अन्हार भोजपुरी के मुंह पे करिखा पोत देहलस। एह बिगड़त रूप में आपन आँचर बचावे खातिर बढियां लिखे पढ़े आ गावेवाला लोग भोजपुरी से मुंह फेर लेहल। इक्का दुक्का लिखनिहार आपन ब्लॉग आ एकाध पत्रिका तक सिमट गईले । जवन भोजपुरी साहित्य आ साहित्यकारन के मामिला में भरल पुरल एहवात रहली उनका मुसमात के जिनगी भेंटा गईल। नवका पीढ़ी के भोजपुरी में लिखे के कहे बतियावे में भी शरम बुझाला । पिछला दस बरिस में सोशल मीडिया प क्रांति भईल त ढेर लोग एक दूसरा से जुड़े लागल, आपन राय विचार एक दूसरा के बतावत समझत एगो नवका राह पकडले। एही उतजोग में आखर के जनम भईल । फेसबुक प भोजपुरिया जमात के चिंता खाली अश्लीलता तक ही ना रहल, भोजपुरी से जुड़ल हरेक पहलु प बात होखे लागल। एही क्रम में विचार जनमल आपन साहित्यिक थाती के संभारे के... भोजपुरिया समाज के आपन भाषा में लिखे के प्रेरणा देवे के। हमनी के विचार बस लुत्ती रहे जवन अब सूनुगि रहल बा। अब एह क्रांतिकारी हवन में राउर नेह छोह के आहुति ही भोजपुरी के शुद्ध करी।

हमनी के जवन करे जा रहल बानी जा, पता ना आवे

वाला समय एह के कईसे देखी ? आ वर्तमान मे लोग एह के कईसे लेबे वाला बा ? हमनी के कबो एह बात के विश्वास ना रहे कि एह जिनगी मे हमनी के अईसन जमात के सदस्य बनब जा जे भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति दिन रात लागि के मेहनत करी। हमनी के जतना भी आदमी एह जमात मे बानी जा भा अउरी हमनी के संघतिया लोग जे एह जमात मे नईखे आ जे भी एह पत्रिका खाति लेख भेजले बा उ कंही ना कंही अपना मातृभाषा से तनी बेसी प्रेम करेला एहि से भेजले बा।

ई-आखर हमनी खाति पत्रिका भा पेज भर नइखे, इ एगो दिया बा जवन घनघोर अन्हरिया में राहि देखावत बा। इ सांच बा कि ओह दीया खाति वर्तमान परिदृश्य अनुकुल नइखे बाकि जवन समर्पण के तेल एह दिया में भरल गइल बा उ एकरा के मद्धिम ना पड़े दीही। उम्मेद ही ना विश्वास बा कि एह दिया के अंजोर आपन चमक जरूर छोड़ी आ एह खाति एगो अलौकिक संतोष मन में हो रहल बा।

आजू के वैश्विक जुग मे जब तनी-तनी बात खाति लोग पईसा कमाये के सोचत बा ओह समय मे हमनी के एह आखर परिवार के इ उतजोग प गर्व हो रहल बा। हमनी के एगो सपना रहल ह आ शायद हमनी के जतना भी आदमी एह जमात मे बानी जा आ अउरी भी संघतिया लोग के भी इ सपना रहल कि भोजपुरी मे लगातार लिखाउ, आ शायद " आखर " पेज आ अब ई-पत्रिका ओह सपना के जमीन प ले के आ रहल बा। हमनी के मय आदमी कही ना कही कवनो प्रोफेसन मे बानी जा बाकि आपन मातृभाषा भोजपुरी के रसरी से हमनी के एक दुसरा से बन्हाईल बानी जा। हमनी मे से केहू लमहर भा हमनी के बड़का साहित्यकार ना हईं जा, बस साहित्य आ आपन भाषा के प्रेमवश आपन थाती के सजावे सरिहारे में लागल बानी जा। नया बानी जा, एह पत्रिका में गलती के संभावना बा , कोशिश करत बानी जा की भाषाई अशुद्धता ना रहे, बाकी कहीं ना कहीं भाषा, वर्तनी, अलंकार भा व्याकरण के गलती मिल सकेला। गलती त गलती होला, बाकी कुछ अंक खातिर एह तरह के अशुद्धता के नजरअंदाज करी भाव पे ध्यान दिहीं। गलती खातिर पहिलहीं माफी मांगत बानी जा। एह तरह के गलती कवनो पत्रिका खातिर आ भाषा खातिर अपराध ह, रउरा सभे से निहोरा बा कि हमनी के हरेक गलती पे टोकिं, सलाह दिहीं, आलोचना करीं। रउवा सभ के इहे कुल्ह बात हमनी में आउर सुधार ले आई आ आगे बढे के राहि देखाई।

- आखर जमात

www.bhojpurisahityangan.com

बतकूचन



सौरभ पाण्डेय

"सौरभ पाण्डेय जी के पैतृक भूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा क्षेत्र हऽ। पिछला बीस बरीस में राष्ट्रीय स्तर के अलग अलग कॉर्पोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी। आजकाल केन्द्रीय सरकार के ग्रामीण-परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के रूप में कार्यरत बानी। परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़यॉं जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (विधान) नाव से किताब प्रकाशित.

पुरनियन के कहल हऽ, हर काम के खास उद्देश्य होखे तबे ऊ कवनो माने-मतलब के काम होला। तबे ओह काम के भइल सकारथ बा आ ना, त ओके भइल बेजाइँये बूझीं। बाकी ईहो ओतने सही हऽ जे कतनो नीमन उद्येश्यपरक काम काहें ना होखो, ओकर निकहा साइत ना भइल त ओकर उजियाइल असम्भवे बूझीं। माने उद्येश्य आ साइत के संजोगहीं प कवनो काम के भइल सम्भव होला। ई कुल्हि कहला के माने का बा? ईहे, जे, करम के गती आ दासा दूनो प धेयान राखे के चाहीं। एही दूनो के गुनि के आगा विचार कइल जरूरी बा। तबे कवनो सुकाज के पुरनाहुती के माने-मतलब सकारथ हो सकेला। कहनाम अतने बा जे भोजपुरिया पाठक के हाथ में आजु जे ई-पत्रिका 'आखर' के प्रति आइल बा त ई 'इलेक्ट्रानिक पत्रिका' एही सुघड़ी आ साइत के इंतजार करत रहे दूका! काहें जे एक अरसा से भोजपुरी भासा के उत्थान के बात हो रहल बा। भासा के उत्थान खातिर होत काम के गति में, साँचो देखल जाए त, कवनो कमी नइखे लउकत। बाकी तबो अकाज काहें होता ? बिन्दुवत कवनो बात होखीत त निकहा अकाज के कारन कहइबो करीत।

गोजर के हजार गोड़ त भोजपुरिया समाज के लाख कहीं! बाकी लाख गोड़वन के दिसा एक लाख! इ समाज एकमुड़िये आजु ले ना सोचलस आ ना। जाये दीहीं आगा के आगे देखल जाई। अबहीं इहे झलकत बा जे एह ई-पत्रिका के नाँवें एगो अइसन चउतरा बन्हाइल बा, जवना के मजगर वैचारिक रौशनी मिली, इहे उम्मीद बा। एही सुघड़ी, एही साइत के बुला इंतजार रहे। कवनो बन्हाइल चउतरा खातिर दियरी जरत लउके त बूझि जाये के चाहीं जे अन्हार बड़ुए। अइसना में दीया के जरल कतना जरूरी हो सकेला, ई कहे के ना बूझे के बात हऽ। आ, अन्हार के कवनो रंग-ढंग हो सकेला। तबे नू, दियरिया रोसनिये के साधन ना हऽ, बलुक ई एगो प्रतीक होले। प्रतीक अपना आप प विश्वास के, तलफत मन के उछाँह के। एकवटिये लगन के, हिरदा के फफाइल भाव के! ई दियरी प्रतीक हऽ, सँकरात काल-घड़ी में जरूरी जीवनी-शक्ति के, आरोग्य के आ आरोग्य खातिर जरूरी सफाई के!

आजु जीवन के हर क्षेत्र में लउकत ह्रास के देखत साहित्यकारन प सजग आ सचेत होखे के बड़हन जिम्मेदारी बा। काहें जे, समाज के कुल्हि कमवे

आपना मूल से भटकल जा रहल बा। का परम्परा, का परिपाटी, का बात-व्यवहार, का लोकाचार । सभे प जइसे कवनो गरहन लागि गइल बा। ई काहें ? काहें जे, हमनी के शिक्षा के आ विद्या के बीच के भेद बिसरा देले बानी जा। दूनों में घालमेल भइल चलल जा रहल बा। विद्या-बुद्धि के बात करत आपन समाज, पेट-भराउआ जोड़-तोड़ आ कागजी शिक्षा का पाछा पड़ल बा। लोक-समाज विचारपरक विद्या से दूर भइल जात बा। खाली, देह-सुख खातिर मताइल लोग मन आ बुद्धि के सुख प सोचल बंद क दिहले बा ।

जवन लोक-समाज में अन्तरिक्ष भा धरतिये ना, एकर कुल्हि अवयव, जइसे जीवन, जल, औषधि, बनस्पति के कहो सभे के शान्ति आ समृद्धि के इच्छा राखत रहे, जवन लोक-समाज सउँसे जगती के अवयव के बीचे सहयोग-सुयोग के बात करत रहे, ऊ समाज बुझाता जइसे मतिसुन्नी में परल बा। जवन भूमि प गते -गते परमार्थी, परमहंस, मुनी-ज्ञानी लोगन के उपस्थिति रहल बा, ओही भूमि के लोक-समाज सँकेत विचार आ घनघोर स्वारथ के अन्हार में आन्हर भइल जात बा। कबो आध्यात्म के भावना एह समाज के नसे-नसे बहत रहे बाकी आजु के स्थिति का बा एह प का कहल जाए? इ कहे के नइखे। आध्यात्मिक विचार आ पंथीय विचार में ढेर फरक होला। दूनो एक्के ना हऽ, जइसन अपना समाजे के एगो वर्ग प्रचार करे में लागल बा । बलुक ई आध्यात्मे हऽ जे आम-जन के सफलता भा असफलता के सहज भाव से सँकारे के सोचगर बनावेला ।'उभय सुकृत-दुष्कृते' तबे संभव हो सकेला ।

आध्यात्मिके मन, सोच में विवेक के जगहि देला। आ, कवनो विवेकिये मन शुचिता आ शुद्धता खातिर आग्रही हो सकेला। शुचिता माने स्वच्छता। एकरा बिना देह-मन कुल्हि प तामसिक प्रवृति हावी होत चलि जाले। शुचिता खातिर आग्रह कबो कवनो राजनैतिक भा पंथीय मंतव्य ना हऽ, आ ना अइसन माने के चाहीं। लोग आपन-आपन घर-दुआर, दर-दोकान, गली-मोहल्ला आदि के सफाई कइल सुरु कऽ दीही त कवन बेजायँ होई? गंदगिये आ कुव्यवस्था के कारन त शुद्ध, सकारथ आ सजग विचार सूति रहल बा! कवनो सचेत आ निष्ठावान समाज कर्मप्रधान होला। कमवे तपस्या हऽ। कर्म देह से होखो भा मन से, एकरा खातिर तत्परता कवनो सजग समाज के परिचायक हऽ। आ ई सम्भव होला साफ मन से, साफ माहौल से ।

सिद्धसरस्वती स्तोत्र में स्वच्छता के आह्वान देखे जोग बा --

स्वच्छव्रतः स्वच्छचरित्रचञ्चुः स्वच्छान्तरः स्वच्छसमस्तवृत्तिः।

स्वच्छं भवत्या प्रपदं प्रपन्नः स्वच्छे त्वयि ब्रह्मणि जातु यातु ॥

आजु अतने ले। फेरु भेंट होई त अइसहीं 'बतकूचन' होई।

www.bhojpurisahityangan.com

"भोजपुरी के सेवा में आखर"

आखर , भोजपुरिया समाज अपना मातृभाषा के लुकाईल गुन के उजागर करे के कोशिश में लागल पत्रिका बा । इ शब्द लिखत मन भर आईल कि अइसन भरपूर समृद्ध भाषा के इ दिन कांहे आवे के ह कि ओकरा के उजागर करे के पड़ल। भोजपुरी हिन्दी के छोट बहिन हई । हिन्दी के बरियार करे में भोजपुरी के बड़हन योगदान बा । हिन्दी में कई गो बात स्पष्ट करे खाती भोजपुरी के शब्दन के जरूरत पड़ेला ।

भोजपुरी बोले आ सुने में मीठ भाषा ह । महीन से महीन बात कहे खाती शब्दन के ढेर बा । जइसे देखीं- 'बतीया' फरहरी में बतीया लाग गइल। अब इ बतीया में जवन भाव बा ओकरा के हिन्दी भा अंग्रेजी में का कहाई । अब देखीं 'टटइनी' । देह टटाता । अब कहल जाव देह में दर्द बा, देह दुखाता । इ कहला से 'टटइनी' जवन होता उ भाव ना नू आई। अजब 'खजाना' बा भोजपुरी के लगे ।

जिनगी के हर संस्कार खाती एक से एक गीत बा। शायदे कवनो भाषा के गीत एतना समृद्ध होई । सब गीत अपना प्राचीनता, समृद्धता, सामाजिकता, संस्कार से भरल पड़ल बा । जनम, जनेऊ, बिआह, गौना, के अलावे कृषि प्रधान देश के चलते, सब काम खाती- जतसार, कूटनी, पीसनी, कटनी, सोहनी, मेला सबका खाती गीत बा । एकरा अलावे बारह-मासा अलगे बा । सब देबी-देवता के गीत अलगे बा । सब भाव से भरल। अब लीं, प्यार, दुलार से भरल 'गारी' । बिआह में चाहे अईगा आइल पहुना, अगुआ, समधी जले औरतन से 'गारीवाला' गीत ना सुनीहें 'खइबे' ना करीहे। गारी आ उहो प्यार भरल। वाह रे ! अब इहे बसंत बा। गांवे गांव फगुआ रात भर गावल जाइ। फगुआ बीती ना कि 'चइता' शुरू ।

आज भोजपुरी सिनेमा में काफी अश्लीलता घुस गइल बा । द्विअर्थी गीत भोजपुरी के पहचान हो गइल बा । एकरा के दूर कइल बड़ी जरूरी बा । 'आखर' के धन्यवाद बा कि ओकर ध्यान ए पर बा । 'आखर' अपना मातृभाषा के ओकर आपन स्थान दियावे खाती भरपूर प्रयास कर रहल बा। फेसबूक से जब हम जुडनी त 'आखर' के भोजपुरी खाती मन से लागल देख संतोष भइल।'आखर' अपना उद्देश्य में जरूर सफल होई। मन से लागल काम पूरा होला । देर-सबेर से घबड़ाये के नइखे । हृदय से हमार शुभकामना अपना मातृभाषा से जुड़ल 'आखर' से बा ।





डा. रीता सिन्हा

गोपालगंज, बिहार के रहे वाली डॉ0 रीता सिन्हा जी MA , Ph.D. हईं । शोध विषय- "भोजपुरी साहित्य में गीति काव्य", रहल बा । सेवानिवृत शिक्षिका वी एम इंटर कालेज के आ हिन्दी भोजपुरी साहित्य मे बरिआर काम । इँहा के लिखल उपन्यास - **" धरनी में धसौं कि अकासहि चिरौं "** काफी चर्चित रहल बा । **"नमक रोटी"** सहित कई गो कहानी पत्र पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा । **"अटल स्वराज"** नामक पत्रिका में स्तंभकार भी बानी ।



निलय उपाध्याय

आरा , बिहार के रहे वाला निलय जी , हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य मे उत्कृष्ट रचना कईले बानी । इँहा के लिखल हिन्दी नाटकन के मंचन भी होला । कई गो भोजपुरी सिनेमा आ हिन्दी धारावाहिक के स्क्रिप्ट भी लिखले बानी । हाले फिलहाल इँहा के गंगा यात्रा (गंगोत्री से गंगासागर तक) भी कईनी ह । भोजपुरी भाषा आ साहित्य मे बहुते गुढ़ आ पोढ़ जानकारी इँहा के जरी बा । सम्प्रति मुम्बई में बानी ।

बेद -बदलाई

भोजपुरी के नाट्य शैली में प्रहसन एगो महत्वपूर्ण शैली रहे । लोग कउडा प बईठ जास, कल्पना के एगो आधार भेटाईल ,आ सुरू हो जाय प्रहसन । बाद में इ नाटक के बीच में दू गो सीन के बीच मनोरंजन के बहुत बड आधार रहे ।

आखर खाति लिखे के भइल ह त सोच लेनी कि अबकि प्रहसन लिखब । प्रहसन सामने बा , अब इ फ़ैसला रउरा सब के हाथ में बा, इ बेद बदलाई कि ना ।

शुभम् करोति कल्याणम् ।
आरोग्यम् धनसंपदाम् ॥
शत्रु बुध्दि विनाशाय,
दीपः ज्योति नमोऽस्तुते ॥

[मंच प शहनाई आ एह मंत्र के आवाज के साथ तनी सा अंजोर लउकत ई कलसा प जरत दिया के अंजोर ह । धीरे से रोशनी कही उपर से बड कलसा प आवता आ सुन्दर घडा जवना के मिथिला पेंटिग स सजावल गईल बा। घडा के उपर आम के पलो प ढ्कनी , ढ्कनी प लागल दिया आ दीया के अंजोर मे गणेश जी के खूब निमन तस्वीर लागल लउकता ।]

[तस्वीर प आवते मानर के आवाज आवे लागता।]

[रोशनी पूरा आ जाता आ पता चलता कि स्टेज ना कवनो शादी के मंडप ह। कोना से एगो औरत पीयर साडी पहिनले आ रहल बिया आ आपना गर्दन में टीमकी सामने की ओर लटका के दूगो छिऊंकी से बजावत आ रहल बाडी मानर चाची। मंडप मे आके कलसा के प्रणाम करतारी ।]

[नाच के संगे गीत आरम्भ हो जाता ।]

मानर चाची : आरे आरे सगुनी, आरे आरे सगुनी,
सगुनवा ले के आव
तोहरे सगुनवा ए सगुनी होखेला बियाह

[एह गीत के आखिरी कडी मे एक ओर से लोकरानी जवन दुश्यंत के शकुंतला नियन सुनर बाडी. नाचत झूमत आवतारी। उनका नाच से इ

www.bhojpurisahityangan.com

बात समझ में आ जाए के चाही कि इ पंच तत्व के प्रतिनिधि हई। अब दूनो अब दूनो लोग मिली के गावता ।]

लोक रानी : आरे आरे बेद बाबा आरे आरे बेद बाबा,
पोथिया ले के आब तोहरे पोतिया ए
बेद बाबा होखेला बियाह ।

[बेद एह तरीका से आवतारे कि उनकर चार पुरूषार्थ झलक जाय। आके लोक रानी के सामने थोडा अकड के बाकी झुक के प्रणाम करs तारे]

बेद : माते रउरा ।

[बेद नफ़रत के साथ मानर चाची के देखतारे]

बेद : तू एह पवित्र मंडप में कईसे आ गईलू ?

लोक रानी : बेद !

बेद : माते अब के मानर बजावता ?

लोक रानी : नईखे बजावत।

बेद : अब त केहु के बजावे भी ना आई।
भुला जाई !

लोक रानी : तू अपना पोथी में त राजा के लिखल।
राजा के गावल, आ आजो गावs तारs,
कबो समझल कि इ के ह ?

[बेद नफ़रत से देखतारे]

लोक रानी : मानर ना ,मां नर.. ! उ माई जे जनम
भईला प तहार नार कटले रहो,

बेद : ई ! हमार लईका अस्पताल मे होईहे स

लोक रानी: तहरा जन्म के समय हमार दूध ना
उतरल त दूध पियवले रहे।

बेद : इ..हमरा के, उ तोहार कमजोरी रहे कि ए
बोतल दूध के भी इंतजाम ना कर सकलू

लोक रानी: जा हम त तहारा के बेद बनवले रही ,तू
लबेद हो गईल। राजा आ रिसि आ सुविधा
के चक्कर में आगमन के संगीत के भुला
गईल।

बेद : देखी,अब इ ना हो सके, बियाह
होटल में होता आ हमहू सकेत में बानी।

लोक रानी: देख एकरा के बाजे द । एकरा लय में
महतारी के गरभ बाजेला, धरती के गर्भ
के बाजे के संगीत ह मानर। एकरा के
कला बनके त बाजे द। देख हम बजा के
सुनावतानी।

[परी लेखा सजल कुछ लईकी एगो बड नगाडा नियन लेके आवता लोग, लोकरानी दू गो बाडी नियन रंगीन डंडा से बजावतारी आ उ एकदम मातृत्व वाला माहौल मे लेके चल जाता। लोक रानी के कंठ से पुर्वी के तान के साथ मानर के संगीत चढता आ रुक जाता।]

[बेद अनमना सा बा, ओकरा इ सब अच्छा नईखे लागत । परी लोग नगाडा लेके निकल जाता।]

बेद : छोडी इ ना बाजी, बात साफ़ बा।

लोक: काहे ना बाजी ?

बेद : अब बेद बजिहे बस,अब होटल के बियाह मे
सगुन त उठेला ना , जवन होला तवन बेद
से होला।

[लोकरानी के गुस्सा चढ़ता]

बेद : मंत्र के ताकत बा

लोक रानी: तहरा मंत्र के हम स्वर देले रही। जाके भारद्वाज मुनि से पूछ लिह, सोहर सुन के साम बेद गवले रहन।

[एक तरफ़ से साम बेद दूसर तरफ़ से सोहर के आवाज आवता।]

बेद : मतलब जे शास्तर लिखल, ओकरा पासे शैली ना रहे ?

[लोक रानी गुस्सा मे]

लोक रानी: चलs गा, गा, हम बतावतानी शैली !

[बेद पंडित चुनौती स्वीकार क ले तारे]

बेद : मंगलम भगवान विष्णु

लोक: ब जा व भ ई या ब ज ना

[लोक एक दम उनके सुर मे गा दे तारी। बेद तनी अउर जोर लगावतारे]

बेद : मंगलम भगवान विष्णु,मंगलम गरूण ध्वज:।

लोक रानी: ब जा व भ ई या ब ज ना , ब जा व श ह ना ई।

बेद : मंगलम।

[लोक रानी बेद के रोक देतारी। आ अपने अलग सुर मे गावतारी]

लोक रानी: बजाव भईया बजना।

[बेद एह धुन के अनुकरण करे के कोशिष कर तारे]

बेद : मं ग ल म भगवान विष्णु।

लोक रानी: बजाव भईया बजना , बजाव शहनाई

बेद : पंडित मंगलम भगवान विष्णु

[बेद पंडित के लय-स्वर टुटे लागल बा , उ सम्हार नईखन पावत। लोक रानी विजई भाव से कहsतारी।]

लोक रानी : बजाव भईया बजना , बजाव शहनाई
बाजा के बजाई लेहब , बेद बदलाई।

[बेद बदलाई के स्वर कई तरह से आवता जवन लोक रानी के नजरिया, आ मानर चाची के नजरिया के गूंज दिखाई पडता।]

www.bhojpurisahityangan.com

जाति, पार्टी आ पुरस्कार



जितेंद्र वर्मा

सिवान , बिहार के रहे वाला जितेंद्र वर्मा जी भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति अब ले कई गो किताब लिख चुकल बानी । हिन्दी आ भोजपुरी में इँहा के लिखल कई गो किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी स। बिहार टेक्स्ट बुक के कक्षा ६ से ८ तक के भोजपुरी साहित्य के सिलेबस निर्माण समिति के महत्वपूर्ण सदस्य रह चुकल बानी । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़ल बानी ।

भोजपुरी सम्मेलन जब खत्म भउवे तबले रात हो गइल रहुवे । बुझाते ना रहे कि रास्ता केने बा । हमरा घरे लवटल जरूरी रहुवे । के पड़े जाई ? बुझाते ना रहुवे । तले देखुवीं कि एक किओर भोजपुरी के बहुते भाग्यविधता लोग जाता । हम ओही लोग का पाछा लाग गउवीं - महाजनो येन गतः सः पंथा । सभे खुसुर-फूसूर करत जात रहुवे । हमरा बुझउवे कि कवनो महान साहित्यिक बात होता । हम ध्यान से भाग्यविधाता लोग के बतकही सुने लगुवीं ।

"ई त भोजपुरी सम्मेलन ना भइल ।"
"त का भइल ?"
"ई त फलाना पार्टी के सम्मेलन हो गइल ।"
"ऊ कइसे जी ?"
"देखनीं हऽ ना, सभे नेता ओही पार्टी के रहल लोग ।"
"हँ, हँ....."
"ठीक कहऽतानी ।"

गोल में एगो सहमति बनल बुझाइल । तले दोसर भाग्यविधाता जी कहले -

"ई ना त भोजपुरी सम्मेलन भइल ह, ना पार्टी के सम्मेलन भइल ह ।"
"त का भइल ह जी ?"
"ई जाति के सम्मेलन भइल ह ।"
"ऊ कइसे जी ?" "देखनी ह ना, सभे नेता एके जात के रहलन । पार्टी भले दोसर-दोसर रहे ।"
"ई बात त रहल ।"
"हँ हँ..."
"चुप रहीं ई पार्टी के सम्मेलन रहल । फलाना जाति के बदनाम मत करीं ।"
-पहिलकूँ भाग्यविधाता जी गरमा के कहले ।
"हँ हँ, ना ठीक ना होई ।"

..."रउवा सभे साहित्यकार होके गुंडई करऽतानी । हम डेराएवाला नइखी ।"
"हँ, हँ । ई फलाना जाति के सम्मेलन रहल । दोसर लोग थपड़ी बजावे खातिर बोलावल गइल रहल ।"

“हँ, जी। ठीक कहऽतानी।”

....“ई पार्टी के सम्मेलन रहल।”
“ई जाति के सम्मेलन रहल।”
“पार्टी के।”
“जाति”
“पार्टी।”
“जाति।”

बुझाईल जे मारा-मारी होता। हम केहू तरहा जान बचा के ओह गोल में से निकललीं। आगा दोसर भोजपुरी भाग्यविधाता जी लोग के दोसर गोल रहे। हम ओह लोग के पाछा लाग गईनी।

“रउवा फलनवा के हाथे पुरस्कार काहे लेनीं हऽ ?”

-ई आवाज हमरा एगो जानल-पहचानल लेखक के लागल। बात पुरस्कार के चलत रहे त हमार उत्सुकता आउर बढ़ गईल। हम पुरस्कार निर्णायक समिति के सदस्य रहीं आ ई लेखक अपने पुरस्कारे लेवे खातिर हमरा के पीठिया मरले रहलें।
“त का पुरस्कार गोड़ से लीं ?”
“बे जी ! रउवा गंभीरता से हमार बात लीं।”
“अब रउवे बताईं, पुरस्कार हाथे से नूँ लिआला।”
“आरे ऊ सांप्रदायिक नूँ हउवें।”
“त रउवा उनकरे पार्टी के फलाना नेता से काहे पुरस्कार ले ले रहनीं।”
“हम काहे ना लेम जी। एमे सांप्रदायिकता के कवन बात बा !”

“

पवन टून





www.bhojpurisahityangan.com

दिल, जब बच्चा था जी !



बृज किशोर तिवारी

पलामू के रहे वाला बृजकिशोर तिवारी जी एह समय सोनभद्र मे कार्यरत बानी । भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के रचना इँहा के एगो अलग आ उंच पहचान बनावेला । आखर पेज से जुड़ल बृजकिशोर जी भोजपुरी मे लगातार रचना कई रहल बानी।

बात त पुरान ह... छठा-सातवाँ में पढ़त होखब। गाजीपुर में रहत रहीं। मुहल्ला बहुत ठीक ना रहे पढाई के मामले में। कहे के मतलब पढाई-लिखाई कम होखे... ओह मुहल्ला के लईका खेले कूदे आ बदमासी में आगे रहस। हमहू उहे बयार में बहत रहीं, पढाई-लिखाई साढ़े बाईस रहे। खेल कूद खूब होखे। ओह में कही छुट्टी के दिन होखो,त पूछही के ना रहे।

ओहू दिन, छुट्टी के दिन रहे। आ कुल टोला के आठ दस लईका...

एगो साथी रहे- "लुल्लू" पुकारू नाम रहे ओकर। घरे के ठीक-ठाक रहे। 8-10 गो भईंस लागस ओकर। दूध के बढ़िया कारोबार। ओही के छत पर खेलत रहीं जा, खूब धमाचौकड़ी होत रहे।

एक दिन खेलते खेलत हमरा लघुशंका लाग गईल। उहवा, देखि की कही जगहे ना लउके की फारिंग हो ली। तले... देखनी के कोना में एगो रेनवाटर के पाईप निकलल रहे,जवन कि छत ले चार पाँच इंच ऊँचा रहे। हम कहनी- नाली त मिलल! के जाओ नीचे... एही में धीरे से समझ लेवे के काम बा।

हमहू पाईप में निशाना लेके निपटा दिहनी। फिर से खेल (धमा - चौकड़ी)चालू हो गईल।

तले नीचे ले लुलुवा के माई (जवना लईकवा के छत रहे) छत पर आ गईनी।

लगली डांट के पूछे- ए, इ नीचे पानी के गिरावल ह यह पाईप से ? अब इ के बोलो की पानी के गिरवले बा ? सबके लगली डांटे।



आखिर हम कह दिहनी-“चाची, हमके लागल रहल ह, ओहिजुगे कऽ लेनी ह।

अरे बाप रे! एतना कहते चाची, करेजा पर हाथ पिटे लगनी, आ धई त लेहनी हमार बार। आ, ले झापड़,त ले झापड़,पीठ ले, कपार ले धुन दिहनी।गारी अलगा ले। मर्किनौनु (इ गाजीपुर में कहल जाला)। केहू तरे उनका से झींगा मुस्ती कऽके छूटनी,आ लगनी भागे।

लेकिन भागी केने ? उनकर छत ले सटल, भैसन खातिर ओसार बनल रहे। ओही पर केहू तरे कूद के नीचे अईनी। केहू तरे जान बचल। सीधे आ के, मांई से कहनी, कि हउ लुलुवा के माई हमरा के बड़ी पिटनी ह।

हमरो माता जी चलनी लड़े,लुलुवा के माई से (आखिर कईसे उनकर लाल पर हाँथ छोड़ देली ह उ)। तनिका देर में माता जी लउट के गईनी।

आही दादा! हमार माता जी भी,हमरा के लगनी कूटे! हमरा कुछ बुझइबे ना करो कि,आज हमार इ दुर्दशा काहे होत बा ? केहू तरे साँझ भईल। बाबु जी अइनी ड्यूटी ले। माता जी हाल-चाल कहले होखब बाबु जी ले। आह दादा! अब त प्रलय नु हो गईल। बाबु जी आउरी लतहरे लगनी आ उहो दमभर। केहुनाठे-केहुनाठे,मुक्का-थपरा,कुछहू बाकि ना रहल ये दादा! हमरा अबो ले ना बुझाईल कि इ कुल काहे होता ? आज केकर मुह देखले रहनी ह ?

दू दिन त लुलुवा के घर देन गईबे ना कईनी। एक दिन लुलुवा भेटा गईल। पूछनी का रे ? “ओह दिन तोर माई हमरा के कहे मरलस ?” पाहिले त, कुछ ना बोललस। फिर जोर से हँसे लागल।

कहऽता - “उ जवना नाली के तू देखला ह ? उ रेनवाटर के पाईप ना रहे। उ त खाना बनावे वाला चूल्हा के धुइया निकले वाला पाईप रहे। आ ओह दिन, ओह घरी उहाँ चूल्हा पर पाँच किलो दूध अउटाये खाती चढ़ल रहे। आ, तू जे बाड़ न, उहे दुधवा में ”क” देले रहला ह!”

अब त हमार का हाल भईल ? हम का बताई! हँसत-हँसत बुरा हाल हो गईल।

“आही रे लुलुवा! आही रे लुलुवा...” कहत-कहत, हंसत हंसत। आ जेतना दरद ओह दिन के मार से पडल रहे, कुल भुला गईनी।

...अगिला अंक में जारी

कबीरा खड़ा बाजार में बेचे आपन नाम।

तुलसी ज़र्दा बेच के चलावे आपन काम।।

राजहंस दाना चुगे मोती गटके काग।

लोक-तंत्र के गाँव में आपन-आपन भाग।।

. तंग इनायत पुरी

www.bhojpurisahityangan.com

"ग्राम-कथा: हमार गाँव पवना"



शशि रंजन मिश्रा

आरा, बिहार के रहे वाला शशि रंजन मिश्र जी , भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के संगे संगे गहिर साहित्य के सिरजना करे खाति जानल जानी , इँहा के हिन्दी आ भोजपुरी भाषा प पकड़ बेजोड़ आ धारदार बा। इँहा के लिखल कई गो लेख हिन्दी भोजपुरी के कई गो पत्र पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा। एह घरी इँहा के दिल्ली मे रहत बानी।

आपन छोटहन नांव के उल्टा बडहन गांव ह पवना। नांव पे मत जायीं, पवना-पवनी भला इ कवनो नांव ह ? इ सही बा कि जगह के नांव से ओह जगहा के उंच-नीच के मालूमात होखेला बाकी एहिजा गांव के नांव से कथानक के कवनो लाग लपेट नईखे। विशेष में इहे बा कि मिसिर बाबा माने कथाकार के लईकाई के देह में एहिजे के धूर लपेटाइल बा। आउरी छोट-बड विशेषता बा, राउर नजरी के सोझा आगे आई।

लीं गांव के नांव से शुरू भइनी आ एहिजे अटक गइनी। कहे के ढेर बा, आ एतने ना रउरो सुने के ढेर बा... मिसिर बाबा के परबचन !!!

अब रउओ इ मत कहब कि मिसिर बबवा का-का लिखत रहेला। अब पवना जईसन गांव प लिखला के माने का, जहाँ न कवनो ताजमहल बा, ना कवनो चमत्कारी मंदिर-मस्जिद भा दरगाह के नामो निशान। त मिसिर बाबा काहें आपन मगज के कचरस प दोसरा के मगज पकावत बाड़े।

बाकी पढ़ लीं, मने-मने गुन लीं, काहे से कि कबो कबो कचरा प मंदिर के चढावल फूल भी भेंटा जाला। कवनो हरजा नईखे, आ पढला के बाद लेखक प भुनभुनाइब मत... काहें से कि एह रचना खातिर कथाकार के नोबेल पुरस्कार मिली, राज के बात बा... इ हम आजे भोरे-भोरे सपना में देखनी ह।

अब रउआ नक्शा पे पवना के खोजब त जहुआ जाइब। एह से हम एह गांव के ठीक ठीक रस्ता देखावत बानी। गवें-गवें चलीं हमरा जोरे, पैदल भा गाड़ी से भा मन के कोरे कोरे, रास्ता आसान बा। मन मनसायी ना, आ कबो अकबकाई ना। त बाँध लीं फेंटा आ गोडे जूता चमरेटा।



लीं सिरिराम जी के नाम आ करीं परसथान।

बिहार के भोजपुर जिला के नांव जानत होखब !!!

ना...!!!?

अरे उहे जवना के ढेर लोग अबहुओं आरा जिला कहेला।

हँ हँ हँ.... ठीक बुझनी। उहे...

त कुछ बरिस पहिले तक भोजपुरिया इलाका में एगो कहावत चलत रहे- ***"ए०बी०सी०डी०"*** *माने आरा, बलिया, छपरा आ देवरिया जिला। अब एह में आरा, छपरा त बिहार में भईल, आ बलिया-देवरिया उत्तरप्रदेश में। अब एह ए०बी०सी०डी० के पदवी काहे मिलल एकर कहानी तनी अंदरूनी ममिला बा, जवन एह क्षेत्र खातिर बदनामी जईसन कह सकिला, बाकी हम ना कहब। ज्यादे जाने के बा त बिहार-बंगाल के कोईलरी के लोगन से मिलीं, बता दिहें। रंगदार- लठैत इहे चार जगहा से रहन आ ओह में आरा सबले आगे रहे। इनका लोग से दहशत रहे। कहावत रही स-*

"जिला में जिला आरा, आउरी सभे जिल्ली
। बीरन में बीर कुंवर सिंह आउरी सभे बिल्ली ।।"

भा- *"आरा जिला घर बा, कवन बात के डर बा।"* त जे बा से की एह कहावत के थोर-बहुत छाप एह गांव में भी रहे। बाबु साहेब(लईका भा सेयान) आपन बबुआनी ना छोडत रहन। भले घरे सतुआ प जिनगी कटत होखे गांव के गान्ही चउक (गाँधी चौक) प इनका सभे के रईसी देखे के मिल जात रहे। पनेहेरी के दोकान प बही के केतना पन्ना भराइल बा इ त उहे पनेहरी जाने। बाकी बाबू साहेब के ठाट रहे। आउरी भेद के बात कहके आपन गाँव के नांव ना नू हंसायिब। खैर अभी गाँव की सिवान धरीं।

आरा के जीरो माइल से दू किलो मीटर आगे गड़हनी रोड प बढब, त तेतरियां गांव भेंटाई। एहिजा से एगो रास्ता बाएं गईल बा जवन सहार तक जाले, बस इहे पकड़ लीं। कहीं मुड़े के नईखे इहे राह पवना जाला। तेतरिया से 14 कि०मी० पड़ी पवना। अब गांव में घुसते जवन नजारा मिली त रउओ कहब कि जवन गांव प हेतना बतरस लिखाइल दूरे से उजाड़ लउकत बा। अरे महाराज ! घबराई जन इ उजाड़ जमीन त इ गांव के विशेष पहिचान देले बा। एकर चर्चा आगे मिली। आगे बढ़ीं त एगो चउरस्ता आई, जवना के एगो नाम देवल बा- गान्ही चउक।

ना ना...!!! गान्ही बाबा से जुडल एहिजा कवनो अईसन बात नईखे। अब पुरनिया लोगन के सरधा से राखल एह नाम के महत्व ढेर बा। इहे चौक से एगो अउर रस्ता फुटल बा जवन सन्देश जाले। एह रस्ता के कारण गांव तीन-चार टोला में बंटा गईल बा।

घबड़ाई जन !!! अब कहीं नईखे जाएके, इहें गान्ही चउक प सगरी गांव के भेद खुली। मिसिर जी के गांव के पहिचान करीं, मिसिर जी के मुखारविंद से उवाचरित। मिसिर बाबा के अलगे पहिचान बा एहिजा। इहाँ इनकर आस्तित्व इनकर बाबा के नावे जानल जाला। फलाना बाबा के नाती-पोता हवे। त उहे फलाना बाबा के पोता के लइकाई से जुडल कुछ इयाद में गोता लगायीं जा।

त गांव में प्रवेश भईल आ गान्ही चौक प पहुंचनी कि लोग बाग के नज़र में आ जाईब कि गांव खातिर केतना पुरान बानी। जान-पहिचान ढेर होई त पंवलगी शुरू हो जाई।

"गोड लागीं ए बाबा ! ढेर दिन पे..."

"और हालचाल ठीक बा नू !!??? अभी रहे के बा नू ? साँझ के भेंट करब..."

एह गान्ही चउक से लेके मिसिर जी के मकान तक सड़क के दुनो ओर दोकान बाड़ीसन। एक से बढ़ के एक जिनिस के सामान भेंटा जाई। चाय के गुमटी से लेके खीरमोहन के झांपी तक। लकठो आ घुघनी के खोमचा से लेके ताड़ी के हांड़ी तक। मजमुआ इतर से लेके रेक्सोना के बोतल से फुहार फेंकेवाला सेंट तक। मरकिन के कुरता से लेके सिलिक के अंगिया तक सब एहिजे भेंटा जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

अब अचकचायीं, दम धरीं... ढेर चीज भेंटाई देखे के... लीं गान्ही चउक प गंगामात एह सुगंध के निशा में त हम भुलाईये गईनी। मीठ आ तनी कासाह गन्ह एह गांव के एगो विशेष मिठाई के ह। अब कहब त हँसब मत... एह गांव खातिर इहे मिठाई बंगाली रसगुल्ला ह, आगरा के पेठा ह। अच्छा अब एकर नाम बता देत बानी। इ ह जिलेबी, आधा पकल जामुन के रंग के जिलेबी, तीसी के तेल में के छानल जिलेबी। गरमा गरम खाईब, त इ भुला जाईब कि केतना खईनी, रस के चुवत धार के अईसन सुडपब कि मन मिजाज तर हो जाई। खा लीं... अरे पचास गिराम आउरी लीं ...

अब जिलेबी प्रसिद्ध त एहिजा के चाट भी प्रसिद्ध। निराला, दिलवाला, दिल्लीवाला, कलकतावाला आ ना जाने का का... टाट के झोपड़ी में आगे सिंघाडा कचौड़ी, कोइला के चूल्हा प दिनभर पानी मिलत आ गरम होत मटर के छोला। ओह झोपडी में घुस के देखीं, गणेश आ लक्ष्मी जी के मूर्ति के साथे बदन उघाड़ हीरो आ कुल्हा के बल पे अटकल हिरोइन के फोटो जरुर भेंटाई। दोकानदार साहित्य के बहुत प्रेमी हवें, बिल्लो रानी चमन बहार लखनऊवाली के लिखल शायरी के किताब के चार लाइन भी लगयिले बा...

"सोना दिया सुनार को पायल बना दिया, दिल दिया यार को घायल बना दिया"

भा ***"ये खुदा हम तुमसे फरियाद करते हैं, मत भेज उधार मांगने वाले जो हमें बर्बाद करते हैं"***

चाह-पानी के दोकान आ पान बीड़ी के दोकान अईसन दू जगह होला जहाँ गांव भर के खबर पहुंचेला। केकरा घर में आज हिंग के छौंका पडल बा इहो खबर मिल जाई एहिजा। बाकी रंज खुसी स्नेह से पगायिल गाँव के बेयार में सनायिल राउर मन मतंगा पे कवनो लाग लपेट के लपट ना लागी। एह गाँव के बाजार के इहे महिमा कि दस गो आउरी गाँव-जवार के काज परोजन आ बिध-व्यवहार के, मय नेवता-पेहानी के, खाजा-खजुली-बेलगरामी के सभकर वेवस्था कर देवेला। मास्टर हनीफ बैंड के पिस्टन से रामधुन के साथे राजा राजा करेजा में समाजा वाला गीत भी बाजेला।

कुल मिलाके एह गाँव के बाजारे गाँव ह भा बदलत सामाजिक व्यवहार के ब्यापार करत गाँव अब बाजार ह। बाकी कुछो होखे, इ मिसिर जी के गाँव ह आ आपन गाँव के बडाई करब... रउआ बुझे के बा त बुझ जाईं की गाँव बदल गईल बा। बाज़ार जादे आ व्यवहार कम हो गईल बा। मिसिर जी के लाल टीका देखि केहू पंवलागी भले जन करे बाकी ललका झंडा जरुर देखा दी।

अब रउआ एह गाँव में अइनी त दुआरे आयीं, लचिदाना आ बतासा से खरमेटांव करीं। मुंह मीठ करीं आ जवन जबुन देखनी ओकरा के मने मत लायीं। गाँव ह हमार, हमरा खातिर त माई के आँचर ह, एही गाँव के धूर देहीं में लागल बा। जबुन ना कहब... ओइसे गाँव के दक्खिन सिवान प लिखल बा- आदर्श गाँव पवना में पधारने के लिए धन्यवाद।

www.bhojpurisahityangan.com

काल चक्र

आरा शहर से गाँव लौटत, ढेर रात हो गइल रहे। हाल्ट से उतर के एक्का के सवारी, फिर कई कोस पैदल चलला के बाद 'एकवना' गाव आदमी पहुँचो। पहिले रास्ता रहे, अउरी एक्का दुवार ले जात रही सन, लेकिन पिछला बाढ़ में सड़क दह गइल रहे। अब इ सड़क राजनीती के शिकार बिया। एक-दू चुनाव त लागिये जाई बने में। एह से पैदल जल्दी जाये ला दियरा देने से रास्ता नजदीक रहे। रात में गंगाजी के दियरा सायं - सायं बाजे। डरो खूब लागे। लोग कहे की एह दियरा में खूब भूत बाडन सन। सौ मुह, हज़ार खिस्सा रहे परेतन के।

मन में भए दूर करे ला हम एग्यारह हाली हनुमान चालीसा के पाठ कईनि। गाँव के प्रकांड पंडीजी 'त्रिपाठी जी, के भी बात याद आइल। उनका के लोग बाउर कहे; कांहे के उनकर 'थीयोरी' सभे से अलग रहत रहे। अउरी, सब से अलग बात करे वाला बाउर कहला चाहे उ केतनो साँच काहे ना बोलत होखो। भूत प अजीब-अजीब बात कहत रहन त्रिपाठी जी। कहस की हिन्दू धरम में भूत ना होखे। भूत माने काल , समय। जवन बीतल पुरान बात ह उहे 'भूत'। एही से व्याकरण में पढ़ावल जाला 'भूतकाल'। जवन अभी हमनी के भूत के स्वरुप बाते उ मुस्लिम औरी अँगरेज़ से आइल बा। कवनो गीता, बेद , पुराण में भूत के बात नइखे। राकस अउरी यक्ष के बात बा। कुछ पंडित, जानकार लोग उनका से बहस करे।

एक जाना कहलन " पंडी जी हनुमान चालीसा में लिखल बा : भूत पिचास निकट नाही आवे, महाबीर जब नाव सुनावे"; तुलसीदास कह गईल बाड़े भूत के बारे में। कइसे ना होला भूत?"

त्रिपाठी जी आगे बतावस; "अरे पोंगा ! वैदिक शास्त्र के समय बलात्कारी लोग के पिचास कहात रहे; जे सुतल मेहरारुन के संगे जबरदस्ती करs सन। उहनी के वियाह पिचास बियाह कहात रहे। सहिये बा: महाबीर जी के नाव ल; आ थुरs लउर ले त इ बलात्कारी भागे जेहन सन। औरी भूत; माने काल, बीतल बात। हनुमान जी के नाव लेब त ना दुःख वाला बीतल बात याद आई; ना बीतल बात सुनाई दी ना दिखाई दी "।

ओह घरी हमहू पूछले रही : " त्रिपाठी जी चली मान लेनी राउर बात; के बीतल बात याद ना आई। बीतल काल ही भूत ह। लेकिन बीतल



अश्विनी रुद्र

आरा , बिहार के रहे वाला अश्विनी रुद्र जी , अमेरिका के न्यूयॉर्क में टेक्नोलॉजी कंसलटेंट हई। इँहा के लिखल कई गो हिन्दी आ भोजपुरी लेख अलग अलग पत्रिका मे प्रकाशित हो चुकल बा। आखर प शुरुवे से लिख रहले बानी।



फोटो साभार– http://psichologas.lt/

बात देखाई औरी सुनाई ना दी? इ का भइल? बुझाइल ना?"।

"एकरे कालचक्र कहाला।" : त्रिपाठीजी कहले । त्रिपाठी जी कालचक्र वाला भूत के बारे में बतइलन लेकिन, बुझाइल ना। मन में जवन भूत के स्वरुप से डर बैठल रहे; ओही से डर लागो।

अन्हार; सुनसान में झाय-झाय झींगुर के बोली बाजत रहे । डर अउरी बढ़त गईल । आगा बढ़नी, त लागल की केहू हमार पीछे आवत बा। हम पसीना-पसीना हो गईनि। कई हाली मुड़ के देखनी। कबो बुझाइल के केहू आगे चलत बा ।। डर से कई हाली पूछबो कइनी: " के हs ए भाई "? लेकिन दियरा में हमार आवाज़ गूंज के हमरे सुनाई देलख ; "के हs ए भाई?। कबो लागे की भरम बा; कबो लागे की साचो केहू बा। कहीं भूतवा हमरे आवाज़ निकाल के हमारा से नइखे नु पूछत ? काफी देर चलत हो गईल रहे। कुछ देर बाद लागल की हम एके जगहिया बार बार घुमत बानी। ५ मिनट बाद हमरा बुझा गइल की हम रास्ता भटक गईल बानी। अब रात के अन्हार में कुछ लउको ना; टॉर्च में बैटरी भी लगभग ख़तम रहे । भगजोगनी लेखा टॉर्च कुछ मिनट जलsल। ओही में कही जगह बइठे- सुते के जोहनी। सोचल गईल के अब केहू यात्री आई त साथे हो जइल जाई, ना त भोर होई त रास्ता नीमन ले जोह के गावँ चहुपल जाई।

गर्मी के रात; कुच कुच अन्हरिया; कुक्कुर-सियार के आवाज़। हम आपन गमछा सिरहाने राख के लेट गईनि। फिर से कई गो बात मन में आवे लागल। कई गो भूत के खिस्सा दिमाग में ओहर गइल । ईया हमेसा कहस के रात के जतरा ना करे के। रात हो जावs त कहीं धरमसाला में रुक जा। बहुत जरूरी होखे त केहू के साथे ले लs बाकि अकेले मत जइह। सांच कहत रही ईया। बुढ- पुरनिया के बात मुसिबते में सही बुझाला। इहे सब सोचत थोडे देर बाद नीद आ गइल।

पता ना कवन पहर रहे आ कब हम सूत गईल रहीं। ढेर अजीब – अजीब आवाज आवत रहे। लागत रहे कवनो जानवर के झुण्ड आवत बा। अन्हरिया रात में अंदाजा लगावे के कोशिश कईनी; घोपडास-नीलगाय रहली सन। हम सांस थाम के बैठ गइनी। कवन ठीक हमरा के ऊपर से धांग के चल जा सन। घोपडास-नीलगाय के बड़का झुण्ड अउरी हम अकेला। बाचल ही भलाई रहे। सोचनी की का देवता आज परीछा लेके ही रहम ! अगल – बगल से ढेर घोपडास-नीलगाय गुजरली सन। एतना डर कबो ना लागल रहे। कवनो के खुर ले चोट ना लागो एही फेरा में बाचत रहनी। अब, चनरमा के रोशनी में तनी-मनि देखाई देत रहे।

थोडे देर में घोपडास-नीलगाय के झूंड गुजर गईल। फिर से शांति हो गईल, आ हवा के आवाज़ फेन सुनाई देवे लागल। लेकिन कुछ देर में लागल के केहू कराहत बा। " आह आह" के आवाज पछिम देने से आवत रहे। "के हs" हम पूछनी।

"केहू बा का"? हम घायल पडल बानी गडहा में" अवाज आइल।

"रुक आवत बानी"। हम कहनी। आवाज़ त नीमन से सुनाई ना देत रहे; लेकिन मर्दाना आवाज़ रहे अन्हार में कसहू टोवत-टावत हम गडहा के जरी पहुँचनी।

"कहवा बाड़; कइसे घाही हो गईल हs ?" हम फेन पूछनी । आवाज़ कुछ देर ले शांत रहल । फेन उ आदमी चिचियाइल।

"ना ; इ कईसे हो सकेला? ना ! तू नीचे मत उतरिहा। मत आवs"। फिर से आवज़ आइल।

ओकरा बाद हम कई हाली बोलनी " के ह? काहे अइसे कहतारs" लेकिन कवनो आवाज फेन ना आइल। कुछ देर में फेन से धीरे से भुनभुनात आवाज़ आइल "मत आव; नीचे मत उतरिहा" हमरा लागल के शायद उ आदमी बेहोश हो गईल की का ? हमरा अब ओकर मदद करही के रहे। ओकरा के छोड़ के भाग

जइती त एकरा ले बड पाप ना होइत । संकट में आदमी आदमी के काम आवे ला । हम ओह गडहा में कईसहु उतरे लगनी । कांट- पात ढेर उगल रहे; कई जगह से देह छिला गईल । आधा रास्ता के बाद ना बुझाओ की केने ले उतरी, केने ले कूदी । लउकतो ना रहे । फेर एगो गांछि के डांढि हाथ में धराइल; ओकरा जइसही धइनि उ टूट गईल, आ ओकरा लेले देले हमहू गडहा में । बालू रहे त बेसी चोट ना बुझाइल । बाकि गडहा में केहू ना रहे ।ढेर अंधार में खोजनी खोजनी; टीमी टीमी टॉर्च२ मिनट ले जलल बाकिर केहू ना मिलल ।

लेकिन इ ना हो सके । एही में ले केहू बोलत रहे । हमार त जइसे देंहि चीर दिआउ त खून ना । कवनो भूत त ना रहे? फेर हमरा लागल की; ढेर चोट लागल बा हमरा । घोपडास- नीलगाय के खुर के चोट रहे । नींद में घोपडास- नीलगाय धांग के चल गईल रही सन, चोट बुझाइल ना । हमरा लागल की हम ओकनी से बाच गइल रही लेकिन सब नींद में सोचत रही । अब दरद ढेर बुझाये लागल । कुछ मिनट में ही अकबकी बरे लागल । लागल के काहे उतर गइनी ? सायद आधा नींद में रही एह से लागल के केहू बुलावत बा । अंतर्मन के बात होइ । बाहर निकले के रास्ता भी ना बुझाओ; एहिजा त चनरमा के रोशनी भी ना आवत रहे । ढेर देर ले बैठल रहनी । ईगो नीलगाय के झूंड औरी गुजरल । झूंड के आवाज़ रहे कुछ ५ मिनट तक । फिर आवाज़ ओझिल दूर होखत चल गइल । ढेर चोट लागल रहे ; कुछ देर में अपने कराहे के आवाज हमरा मुह से निकले लागल। हे भगवान् केहू के भेज द मदद ला ।

कुछ देर में आवाज आइल केहू के हमार कराह के आवज़ सुन के

“के ह?” केहू दूर ले चीचियाइल ।

“केहू बा का”? हम घायल पडल बानी गडहा में” । हम भगवान् के धन्यबाद देत कहनी ।

“रुक आवत बानी” । मददग़ार के आवाज तनी नजदीक रहे । लेकिन कुछ जानल पहचानल रहे ।

“कहवा बाड़; कइसे घाही हो गइलs हs ?” आवाज़ ऊपर से फिर आइल । अब हम पक्का रही । इ कैसे हो सके ला ? इ त हमार आपन आवाज़ रहे ।

“कहवा बाड़; कइसे घाही हो गइलs हs?” आवाज़ फेरु से आइल ।

“ना ; इ कईसे हो सकेला? ना ! तू नीचे मत उतरिहा । मत आवs “ । हम जोर से चिचिया के कहनी । हमरा लागल के अब हमार दिल डूबल जाता । माने हम कालचक्र में फसल रही । पंडित जी के ‘काल-चक्र’ हमरा याद पड़ल । हमरा लागल की अब हम बेहोश हो जाईम । हनुमान चालीसा पढ़े के कोशिस कइनि लेकिन ना कह पइनी ।

हम फेन से चिचिलाये के कोशिस कइनि “मत आव; नीचे मत उतरिहा” ।

www.bhojpurisahityangan.com

हरवाहा के मान



प्रभाष मिश्रा

छपरा, बिहार के रहे वाला युवा लेखक प्रभाष जी , भोजपुरी भाषा आ साहित्य के लेके बहुत संजीदा बानी । इँहा के लेख कई गो भोजपुरी पत्रिका मे छप चुकल बा । आखर पेज प इँहा के लगातार भोजपुरी मे लिख रहल बानी । फिलहाल इँहा के नासिक मे बानी ।

अरे रोड छोड़ब सन की कचार दीं !"

जवाहिर खूबे जोर से चिल्लात बड़ी झटका से ब्रेक लगईले। पुलिस के खंटारा जीप के 14 साल से हांकत -हांकत त ऊ एह गाड़ी के चलावे में एकदम तिसमार खां बन गईल रहुअन । बाकिर आज त ऊनकर सब अनुभव तेल बेचे चल जाईत अगर जमादार साहेब जोर से चिल्ला के -" आगे देखs आगे" ना कह के जवाहिर के सचेत करतीं।

जीप अचानक रोकला पर सभे बईठल पुलिस लोग के तनी तनी चोट केहू के अपने लोगन से टकरा के त केहू के गाड़ी के फ्रेम आ सीट से टकरा के लागीए गईल रहे। एही चोट के खिसीआईल जब थानादार सुरेंद्र सिंह गाड़ी से उतरले, त उनकर सिपाही आ जमादार छोटन तिवारी आपन गमछा झाड़त आ सुरेंन्दर बाबु के मुहँ पढ़त गाड़ी के आगे आ के सब लईकवन के जोर से डंटले कि- का रे ! तोहनी के देह में डर-भय नईखे? तोहनी के ई सब पड़रू लेके फाटक में बंद क देम।

जमादार तिवारी जी के चिल्लाईल आवाज आ पुलिस के गाड़ी देख के सब लईकवन, जवन पड़रू चरावे खातिर बथानी के बगईचा जात रहन सन, हदस गईलें । ओही में से कुछ लईका त जोर-जोर से चिल्लात-भहरात अपना-अपना घरे अपना गाँव के ओर भागे लगलें ।



एही समय में सिपाही नटवर अहीर अपना दौड़े के प्रतिभा थानेदार साहब के देखावत एगो लईका मंटुआ के पकड़ लेहले। मंटुआ के गंजी पकड़ले, सुरेन्दर सिंह के लगे ले आके धुकुन लेखा सांस फुलावत आ छोड़त नटवर कहले कि- लीं हजूर ! इहे सड़क के मालिक बनल फिरता। ई पुलिसो के देख के रोड पर से नईखे हटत। थानेदार साहेब ओह लईका के नाव आ बाप के नाव पुछ के फेर से एहंग (अईसन) गलती ना करे के कहि के छोड़ दिहले।

ऐने नटवर अहीर, सिपाही धनेश आ भगवान महतो के लगे जाके मोछ पर ताव देत, अपना गरदन के लपिटाईल गमछा सरिहारे लगले। ऐह लोग में कवनो बात होईत ओकरा से पहिलहीं थानेदार सुरेन्दर बाबु सभे के गाड़ी में बईठे के आ जवाहिर से ठीक से गाड़ी चलावे के कहि के गाड़ी के आगे वाला सीट पर पसर गईले।

गाड़ी अब गाँव ओरी बढ़े लागल आ दुजोड़वा पोल (ट्रांसफार्मर) के लगे से बाएं वाला सोलिंग पर हारन बजावत जीप अब धीरे-धीरे चले लागल। ओही राहता में बड़ी झटकल डोलडाल करत आवत झकर बाबा के रोक के थानादार साहब जीपे में से पुछले कि- शिवनाथ मिसिर के घर केने बा?

झकर बाबा अपना हाथ से इशारा करत कहले कि -ह ह... ऊहे अगवा बड़ के गाछ तर बड़का मकान वाला घर हवे मालिक बाबा के। मालिक बाबा अबहीं घरहीं बानी।

सुरेंदर बाबू फेनु पुछुलन-अरे भाई ! हम शिवनाथ मिसिर के मकान पूछतानी।

त झकर बाबा कहले- अरे दरोगा जी, उन्हें के नाव हवे मालिक बाबा।

मालिक बाबा गाँव के एगो बड़हन सम्मानित आदमी रहनी। जब जीप बड़ के गाछी के लगे पहुचल त बड़ के छाँह में बईठल सात-आठ गो लोग चौकी आ खटिया पर से उठ गईल।

थानेदार साहेब जीप से उतर के ओह लोग के तरफ पहुच के पूछनी -शिवनाथ मिसिर जी के घर इहे ह?

हँ हँ... आईं ईहे ह। आयीं बईठी जा... ओही गाँव वाला लोग में से केहू कहलस।

अब सुरेंद्रबाबू मालिक बाबा से परिचय भईला के बाद प्रणाम पाती क के बइठ गईले। उ अब मालिक बाबा से घर में भईल डकैती के बारे में पुछे लगले। मालिक बाबा सबकुछ गते गते बतावे लगनी। एही बीचमें गाँव के ढ़ेर सभे लोग जुटे लागल।

एह एरिया में भईल ई पहिलका डकैती रहे। ई डकैती तीन दिन पहिले मालिक बाबा के घरे भईल रहे। पुलिस भी अंचभित रहे। मालिक बाबा के बात खत्म होते होते पानी आ चाय आ गईल। सभे पुलिस आला आउर गाँव के कुछ बुढ पुरनिया लोग चाय पिये लागल।

अब धीरे-धीरे गाँव के लोग भी डकैती वाला मामला में आपन बात रखे लागल।

एही बीच में रामचंद्र कहले कि- ए दरोगा जी ! एह डकैती के भेदिया के हम जानत बानी।

एह घर में डकैती मालिक बाबा के हरवाह संतोखीया करवईले बा। देखीं ई हे संतोखीया... हाथ से इसारा क के बतवलन।

संतोखी मालिक बाबा के कुर्सी के बाएं भुइंया चूका -मूका बईठल रहलें। बेचारा संतोखीया जब से घर में चोरी भईल रहे कुछु ना खईले रहे। बाकिर एह्जी त गाँव के लोग दोसरे खेल खेल देहलस।

अभी केहु कुछ कहित एह से पहिलही मुरारी बाबा कहले कि- हँ दरोगा साहेब, इहे पांच दिन पहिले घर में मचान बनईले रहे, आ ई घर के कोना-कोना के हाल

www.bhojpurisahityangan.com

जानत बा। एकरा के छोड़ के आउर केहु ई काम नइखे कईले।

ओने से हरेराम, भटेसर, भृगु, चंदरमा आ देवनाथ संभे एके संगे कहे लागल- हँ दरोगा साहेब, ई डकैती संतोखीये के काम ह। एकरा के छोड़ब मत।

ई सब बात सुनी के संतोखी त ओहीजे बईठले-बईठले भदरा गईले। उ फेनु केहू तरहा उठ के बईठले आ दरोगा जी के ओरी हाथ जोड़ीके कहले- ना हुजुर, हम त मालिक के आदमी हईं। हमार त चार पीढ़ी एही घर के खाना आ नीमक खा के जिअलस। हम अईसन काम नईखी कईले। फेन संतोखी मालिक बाबा का ओरि देखे लगुअन।

त मालिक बाबा बड़ी गंभीर आवाज में संतोखी के नीचे बईठे के कहलन। संतोखी त बईठ गईलें, बाकिर उनका बुझात रहे कि उनका नीचे धरती हईये नईखे। आँख के लगे दिने मे तारा टमटमाए लागल। दिने में उनका सबकुछ कुच-कुच अन्हार लागे लागल।

अब दरोगा साहेब संतोखी से कुछ सवाल पूछनी। बेचारा संतोखी सब जबाब हाथ जोड़ के देत गईल।

ऐने मालिक बाबा ई सब बात समझत रहुअन। उ ई बात जानत रहन कि गाँव के कुछ लोग संतोखीया के स्वामीभक्ति आ ईमानदारी से खूबे जरे-धनके ला। संतोखीया मालिक बाबा के हरवाह होके भी उनका घर के सवांग नियर रहत रहे। ओकरा एहिजा खूबे इज्जत मिले, ईहे बात बहुते पंड़ी जी लोग के ना सहाय। उ लोग संतोखीया चमार के एतना इज्जत आ उहो पंड़ीजी के घर में देख के भीतरे-भीतरे धनक के राख होत रहे लोग।

कुछ देर खातिर माहौल बड़ी शांत हो गईल। तब सुरेंदर बाबू पूछनी कि- मालिक बाबा एहपर राउर का कहनाम बा? कहीं त संतोखीया के अभी एहिजे से ले जाई जीप में ?

मालिक बाबा आपन चश्मा उतार के धोती के फाड़ से पोंछ के पहीन लेहले आ तब उ बड़ी गंभीर आवाज में दरोगा के आँख में आँख मिला के बड़ी रौब से कहले-दरोगा बाबू ! ई संतोखी हमार सवांग ह, हमार हरवाह ना ह । अगर जईसन ई लोग कहता कि डकैती ईहे करवईले बारे त अगर इ बात सहियों होई त समझीं की हमरा घर में डकैती नईखे भईल। अगर सब समान संतोखी के घर में गईल बा त बुझीं की ऊहो हमार, घरे ह। अब मालिक बाबा गाँव वाला लोग के ओरी चेहरा कके कहले कि- देख लोगीन ! संतोखी जईसन ईमानदार आ स्वाभिमानी आदमी पर तू लोगिन झूठा इल्जाम मत लगाव जा । अईसन इंसान सैकड़ो बरिस में केहू जन्म लेला। हमरा खुशी बा कि आज ई हमरा संगे बा। इनका पर ई आरोप एकदम गलत बा।

अब मालिक बाबा कुर्सी से उठ के दरोगा जी के अभिवादन करत आ कहत कि- इ डकैती के डकैत सब के रऊरा ठीक से तहकीकात क के पता लगाईं, गाड़ी तक छोड़ खातिर चले लगलें ।

दरोगा जी भी एतना जीवट आ विशाल हृदय आदमी के ना देखले रहन। उनका मन में मालिक बाबा के प्रति स्नेह आ सम्मान उमड़ल। उ बाबा के गोड़ लागी के जीप में बईठ गईले।

नटवर जीप के हार्न बजावत धीरे-धीरे आगे बढावे लगले।

आज सचहीं में एगो ईमानदार, विश्वासी, स्वाभिमानी, करिया रंग बाकिर सफेद मन वाला, सज्जन दलित गरीब के एतना सम्मान अपना मालिक से मिलल जवना से कि ओकर हिया जुड़ा गईल। उ आज महसूस कईलन कि उहो एगो समाज के इंसान हवे जेकरा से लोग प्यार करेला।

www.bhojpurisahityangan.com

घूस



धनंजय तिवारी

सिवान , बिहार के रहे वाला धनंजय जी आखर पेज से शुरुवात से जुडल बानी । इँहा के आखर प कई गो कहानी लागि चुकल बा । भोजपुरी भाषा के ले के इँहा के प्रयास सराहनीय बा । लगातार भोजपुरी में लिख रहल बानी ।

प्रणाम सर, हमरा टीसी अउरी मार्कशीट चांही । इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में हमार सलेक्शन हो गईल बा।" अठारह साल के दुबर पातर शरीरवाला एगो लइका एक सांस में जनता इंटर कॉलेज के क्लर्क शर्मा जी से कहलस। ओकरा चेहरा पर उत्तेजना और ख़ुसी साफ़ साफ़ पढ़ल जा सकत रहे।

"बहुत बढ़िया" शर्मा जी टेबल से आपन चश्मा उठा के नाक पर चढ़ावत कहले "नाम बताव।"

"रत्नेश शर्मा।"

शर्मा जी अपना लिस्ट में नाम लगले जोहे और रत्नेश के नाम टापर में देख के उनका चेहरा पर चमक आ गईल ।

"अच्छा त तूही टॉप कईले बाड़। अब त तहके 'बेसी' देबे के पड़ी"

रत्नेश उनका बेसी के माने न समझ पवलस। दरअसल रत्नेश के टॉप अइला से शर्मा जी के घोचाहे घूस मांगे के नैतिक बल मिल गईल रहे। सरकारी फीस त बस एक रुपया ही रहे मार्कशीट के पर जनता इंटर कॉलेज में शर्मा जी कम से कम बीस लेस अउरी केहू घोचाह देबे वाला मिल जाऊ त बेसी लेहला से भी परहेज भी ना करस। घूस लेहल ख़राब ह इ सब जानेला और उहो जानत रहले बाकिर उ एके ऐसन तरीका से लेबे के कोशिश करस की उ एके न्यायोचित ठहरा सकस।

होई कवनो जमाना जब लोग अव्वल आवेवाला के पुरस्कृत करत होई, अबके जमाना में त इ घोचाह घूस लेबे खाति प्रेरक के काम करेला। शर्मा जी के बात इहे साबित करत रहे ।

"हम राउर मतलब न समझनी।"

"ले आव पचास रुपया और लेजा आपन टीसी अउरी मार्कशीट।"

"पचास रुपया" रत्नेश के आँख खुलल रह गईल।

"अतना अचम्भा मे काहे परत बाड़s ए बबुआ" बगल में ही ठाड़ चपरासी शिवचरना कहलस "कॉलेज टॉप कईले बाड़। अबे मिठाई के दाम त तहसे मंगयिबे ना कईल।"

लगिये दुसरका क्लर्क गुप्ता जी और तीन गो और चपरासी मुड़ी हिलाके

www.bhojpurisahityangan.com

शिवचरण के बात के अईसे समर्थन कईल-लन लो जइसे की कवनो बहुत बडहन ज्ञान के बात कह देले होखस लो।

पचास रुपया के बात सुनके रत्नेश के चेहरा से मय ख़ुशी गायब हो गईल रहे।

“हमरा लगे त एकही रुपया बा और सरकारी रेट भी त एकही रुपया हऽ।” उ अपना पाकिट मे से एक के नोट निकालत कहले।

“सरकारी रेट के बात छोड़” शर्मा जी खिसियात कहनी “अब तू हमरा के नियम कानून के जानकारी देबऽ। हमनी के बीस से कम केहू से न लेनी जा। तू टॉप कईले बाड़ त पचास मंगनी ह। खैर पचास नईखे त बीस दे दऽ। ओह से इचिको कम प बात ना बनी। ”

“पर हमरा लगे त एके रुपया बा।” रत्नेश लगभग हाँथ जोड़त कहले।

“त वापस जाके पईसा लियाव। ओकरा बिना टीसी आ मार्कशीट ना मिली।”

रत्नेश के चेहरा रुआँसा हो गईल। उनकर गांव ओहिजा से १५ किलोमीटर रहे। जात आवत में शाम के पांच बजि जाईत आ तले-ले त स्कूल बंद हो जाईत। ऊपर से एतना पईसा घर में भी ना रहे। बाजार से कर्जा मिलला के उम्मीद न रहे। आँख के सोझा अन्हरिया घेर लेहलस।

“हम बहुत गरीब घर से बानी।” उ फिर गिडगिडईले “हम पर दया देखाई। काल्ह अंतिम तारीख बा एडमिशन के।”

“गरीब होखऽ भा अमीर नियम त तहरा खातिर ना नु बदली। अब तू गरीबी के रोना रो के ले जइबऽ त पाछे से सब गरीबी के सर्टिफिकेट लेके आई और एक रुपया में ही ले जाई। हम मैनेजमेंट के का जबाब देब।”

शर्मा जी आपन मजबूरी बतवले। घूस के भी आपन कुछ मर्यादा होला। एक बार दया देखा के मर्यादा के पालन न होखे त फिर आगे ओकर निर्वाहन कईल मुस्किल हो जाई। शर्मा जी अउरी कुछ के पालन करसु चांहे ना बाकि ऐह मर्यादा के जरूर पालन करस। इँहा तक की उ अपना रिश्तेदार लोग से भी कह देले रहले की रिश्तेदारी स्कूल से बहरी अउर त अउर रिश्तेदार लोगन से ऊ स्कूल में भी ना मिलस। फिर का उ अमीरी अउरी गरीबी के रिश्ता मनिते ?

रत्नेश कुछ देर उम्मीद में खड़ा रहले की शर्मा जी के दया आई और उ उनके दे दिहे। पर शर्मा जी के ना त दया ही आईल ना ही नाम में शर्मा लगला के बाद भी कवनो शर्म। उ साथी लोग के साथै देश के समस्या सुलझावे में दिल्ली पहुच गईले।

रत्नेश के बुझा गईल की इ लोग उनकर बात न मानी त मायूस होके वापस लौटे लगले। आपन भविष्य टूटला के दुःख धीरे धीरे लोर बनके टघरे लागल और कॉलेज के गेट पर पहुचले त भडऽ भडऽ लोर उनुका आँख से टपके लागल।

कॉलेज के गेट पर हेड क्लर्क वर्मा जी आपन साइकिल लगावत रहले। उ रत्नेश के रोवत देख उनका पास चल आयिले।

“का बात बा बेटा” वर्मा जी प्यार से पूछले “ काहे रोवतारऽ ?”

रत्नेश के करेजा के तनि बल मिलल। उ सुसुकते -सुसुकत मय बात बतला दिहले।

वर्मा जी अपना जेब में हाथ डलले त उनका लगे

www.bhojpurisahityangan.com

दस रुपया रहे। उ सामने वाला सुरेश चायवाल से दस रुपया लेके रत्नेश के दे देहले आ, केहू से इ बात ना बतावे के कहले। रत्नेश के भरोसा न होत रहे की दुनिया में अइसन भी केहू हो सकेला। उ धउरत स्कूल में वापस चल गईले।

रत्नेश वापस टीसी अउरी मार्कशीट लेके अयिले त वर्मा जी गेट पर ही रहले। रतनेस उनकर गोड़ छूवले। ख़ुशी और अहसान से उनका मुह से एक शब्द न निकलल पर आँखि से गिरत लोर, वर्मा जी के अहसान के साफ़ साफ़ कहत रहे। वर्मा जी उनके खुश होखे के आशीर्वाद देहले।

“आज रात त हमके इलाहाबाद जायेके बा। एडमिशन कराके वापस आएब त राउर पईसा लेके आएब।” रत्नेश कहले।

“एकर कवनो जरुरत नईखे। तू हमरा तरफ से पुरस्कार समझ लिह। आगे के पढाई पर ध्यान लगाव।” कहिके वर्मा जी स्कुल के भीतरी चल गईले।

वर्मा जी हेड क्लर्क रहले। मने तीन गो क्लर्क आ कुल्हि में सबसे ऊपर। ओइसे त उनका और शर्मा जी के सीनिओरिटी में खलिहा एक दिन के अंतर रहे आ एही वजह से शर्मा जी उनका के कबो आपन सीनियर न मानस।

एकरा अलावा दुनु जाना के स्वभाव में भी जमीन आसमान के अंतर रहे। वर्मा जी सांच बोलस, सही काम करस और सांचे के जिअसु । शर्मा जी ठीक एकरा उलट रहले। वर्माजी के कवनो भी गलत काम खातिर पेमेंट ना रहे और घूस त उनका खातिर पाप। कुल मिला के उ ओ सारा गुणन के विपुल स्वामी रहले जवना खातिर आधुनिक समाज के लोग उनुका से नफरत करे आ ठीक ओइसने उनुकर सहपाठी लोग करे। वर्मा जी के आचरण समाज के चलन के विरोधी रहे आ परिणाम स्वरुप उनके केहू पसंद ना करे- नाही मैनेजमेंट नाहीं प्रिंसिपल , नाही चपरासी नाही साथी अउरी नाही शिक्षक लोग। कॉलेज में उनकर स्थिति जीभ के रहे जेकरा बत्तीस दातन से बच के रहे के पड़ेला पर ओकरा बिना शरीर के काम भी ना चलेला। ठीक ओहिंगा नियम कानून के जानकार भईला के वजह से उनका बिना काम भी ना चले।

जनता इंटर कॉलेज, टिपिकल इंटर कॉलेज ही जइसन रहे जहा पढाई कम अउरी राजनीती बेसी होखे। राज्य और केंद्र में त सरकार पाच साल में बदलेला बाकि एहिजा साल में कई बार सरकार बने अउरी बिगड़े। शिक्षक से लेके चपरासी तकले , छात्र से ले के प्रिंसिपल तकले सब राजनीती के जानकार रहे। चाय से लेके खाना तक प राजनीती के ही चर्चा होखे। अइसन न रहे की खाली चर्चा ही होखे बल्कि जमके राजनीती भी होखे। छात्र कुल पास के ही डिग्री कॉलेज में यूनियन के चुनाव में सक्रीय भूमिका निभाव सन। कबो विरोधी के कपार फोर सन त कभी ओकनी के आपन कपार फोरवा के आव सन । चपरासी लोगन में प्रमोशन से लेके इन्क्रीमेंट के झगडा रहे त शिक्षक लोग में सीटी अउरी टीटी ग्रेड के झगडा। प्रिसिपल दीनानाथ जी के उपाध्याय जी पद से हटा के खुद प्रिंसिपल बने खातिर हाई कोर्ट ले खीच ले गईल रहले। चपरासी अउरी शिक्षक लोग के हाई कोर्ट से दौडला से एतना ज्ञान हो गईल रहे जेतना की कोर्ट के स्टाफ के ना होई। कवन जज कवना दिने बइठे-ले औरी केकरा कोर्ट में केकर केस बा इ सबके जुबानी याद रहे।

स्कूल के मैनेजमेंट के सोच रहे की शिक्षा के उद्देश्य समाज सेवा ह अउरी कॉलेज के एको लइका फेल न होख सन एकरा ले बडहन समाज सेवा का होई। प्रशासन चाहे केतना भी सख्त होखे पर जनता इंटर कॉलेज के परिणाम 100 प्रतिशत आवे। अगर

कवनो लडिका नक़ल से भी पास ना होखे त शर्मा जी बोर्ड में जाके काम करा देसु। तनी खर्चा ज्यादा आवे पर कवन उनका अपना जेब से देबे के रहे। छात्र से एही बहाने 10 के 50 लेबे के मौका मिले। सरकारी विभाग लेखा एहिजो भी घूस निचे से ऊपर ले बटाऊ और चपरासी से लेके मेनेजर तक के माल मिले। इलाका के सारा छटल बदमाश लडिका कुल के जमावड़ा जनता इंटर कॉलेज में होखे।

अइसन न रहे की जनता कॉलेज में पढावे वाला मास्टर के कमी रहे पर हालात देख के लोग ओही हिसाब से ढल गईल रहे। चौबे जी नया नया अईले त उनका पढावे के बड़ा जोश रहे। फिजिक्स के टीचर रहले और अपना क्लास में सब लडिका कुल के भौतिक तुला पर नापसु। १२ के सबसे छटल लडिका गजेन्दरा उनका माप पर खरा न उतरल और उ ओके एक दिन झपड़िया देहले। फिर का शाम के स्कूल के ही गेट पर अपना गाव के लोगन के संगे उ चौबे जी के घेर लेहलस और फिर उनकर अइसन स्वागत भईल की आजुवो दिन में ओके जरूर एक बार याद करेले अउरी स्कूल के बकिया सब स्टाफ भी। ओह दिन के बाद उ कभी केहू पर पढ़े के जोर न देहले।

खैर बात होत रहल ह वर्मा जी और शर्मा जी के। शर्मा जी एक दिन के जूनियर रहले पर उ एके कभी न मानले आ वर्मा जी सीनिओरिटी के चैलेंज करे खातिर उनके हाई कोर्ट खीच ले गईले। पाच साल के मुकदमा के बाद जीत वर्मा जी के ही भईल आ तब मन मसोस के शर्मा जी ठंडा हो गईले। वर्मा जी भी माहौल देख के अपना के कागजी काम में सिमित क देहले और फिर ओ लोग के बिच कवनो टकराव के बात न रह गईल।

शर्मा जी केस भले हार गईल रहले पर ओकर कचोट उनका मन में हमेशा रहे और गाहे बगाहे उ अपना सम्पन्नता से वर्मा जी के निचा देखावे के कोशिश करस। साथ ही इहो साबित करे के कोशिश करस की अब ईमानदारी के जमाना नईखे और इमान के पूछवयिया केहू नईखे। वर्मा जी एकर जमके विरोध करस।

एह घटना के 15 साल बीत गईल और दुनु जाना रिटायर हो गईल लोग। संयोग से तीन महीना बाद ही दुनू जाना के आखरी लड़की के शादी रहे। दुनू जाना पेंशन खातिर जिला में चक्कर लगावे लागल लोग। शर्मा जी घूस लेबे और देबे में अभयस्त रहले। उनकर इ अनुभव काम आयिल और उनकर कागज फटाफट आगे बढे लागल। वर्मा जी सत्य के राह पे रहले और उनका पूरा विश्वास रहे की उनकर काम बिना घूस के हो जाई। वर्मा जी के सब लोग जाने और उनकर इ नीमन स्वाभाव ही उनकर दुश्मन बन गईल। पेंशन विभाग के लोग डर से उनसे ना त घूस ही मांगे ना उनकर कागज आगे बढ़ावे। देखत देखत शादी के समय एकदम नियरा गईल। एक तरफ जहा शर्मा जी के चेक बनके, हस्ताक्षर खातिर इंस्पेक्टर के टेबल पर पहुच गईल, त वर्मा जी के कागज क्लर्क के ही ऑफिस में रहे। उ रोज उनसे झूठ बोले। शादी में अब बस तीन हफ्ता रह गईल रहे और वर्मा जी के भी शंका होखे लागल। शादी में खर्चा रहे और पईसा लगे एको ना।

आज उ साफ़ साफ़ बात करे के सोच के पेंशन कार्यालय पहुचले। बहुत जोर देहला पर क्लर्क साफ़ बता देहलस। वर्मा जी के पैर से त जमीन ही खिसक गईल। अब त पईसा देहला के बाद भी 2 महिना लागित। उनके महसूस भईल की केतना बडहन धोखा उनके साथे भईल बा। अब त समय से पईसा ना मिली और बिना पईसा के लड़की के शादी कईसे होई। पूरा गाव जवार में थूथू होई। वर्मा जी दुःख के मारे ऑफिस के सामने वाला सीढ़ी पर

www.bhojpurisahityangan.com

बईठ गईले। साथ ही अग्नि परीक्षा भी आ गईल। मय जिनगी घूस के खिलाफत क के अब उ अपना स्वार्थ खातिर घूस दिहिते। मन में द्वन्द चले लागल। तबे शर्मा जी वहा पहुच गईले।

“वर्मा जी कागज कहा ले पहुचल?” चुटकी लेत शर्मा जी पूछले।

वर्मा जी कुछु न बोलले।

“बुझाता अभी लिपिक के टेबल पर ही बा।“ अपना बात के खुद जबाब देत उ कहले “जले जेब न ढीला करेब तले दस जनम तक उ आगे ना बढ़ी। वैसे भी रौवा कवन जल्दी बा। बेटी के वियाह में भी कवन ज्यादा खर्च करेके बा। हमरा खानि कवनो थोड़े ठाट बाट से वियाह करेब। हमार त आज चेक मिल जाई। आखिरी लड़की के शादी बा, दिल खोल के खर्च करेब। अइसन शादी पूरा जवार में केहू न कईले होई। रौवा जरूर आएब।“

वर्मा जी उनके अपना पेंशन के स्थिति बता देहले। शर्मा जी भी उनके साथे बईठ के उनके हिम्मत देवे के दिखावा करे लगले। इंस्पेक्टर से मिले के उ आपन अर्जी देले रहले और बुलावा के इन्तजार करत रहले।

“हम रौवा से हमेशा कही ने की इमानदार के अब पूछ नयिखे। अब त मानेब न की हम सही रहनी।“ शर्मा जी कहले।

वर्मा जी के दिल अभी भी इ बात माने के गवाही ना देत रहे पर सच त उहे रहे।

एही बिच चपरासी बाहर आईल और उ ख़ुशी से खड़ा हो गईले। चपरासी उनके अन्दर ले गईल। दू मिनट बाद बाहर अईले त बुरी तरह से हाफत रहले और चेहरा से सारा ख़ुशी गायब रहे। अइसन लागत रहे की देंहि के मय खून केहू निकाल लेले होखे।

“का भईल?” चिंता से वर्मा जी पूछले।

“हमरा आवेदन में इंस्पेक्टर कईगो आपत्ति कईले बा। अब त सब ठीक करे में महीनो लागी। लड़की के बारात आवे वाल बा। कहा से करेब हम सारा इंतजाम?“ कहिके शर्मा जी सीढ़ी पर कपारे हाथ ध के बैठ गईले।

“हौसला मत हारी, सब ठीक होई” वर्मा जी हिम्मत देहले।

तबे चपरासी उनके अन्दर जाए के इशारा कईलस। इंस्पेक्टर वर्मा जी के बोलावत रहले।

वर्मा जी के बड़ा आश्चर्य भईल की उनसे का काम हो सकेला। उनकर त कागज भी अबे इनका डेस्क तक नईखे पहुचल। उ इहे सोचत उनका केबिन में दाखिल भईले।

“प्रणाम सर।“ इंस्पेक्टर अपना जगह से उठ के उनके गोड़ छुवले। वर्मा जी खातिर पहेली अउरी गहिरा गईल। जवना अधिकारी के लोग झुक के सलाम करेला उ, उनका जैसन मामूली आदमी के प्रणाम करता।

“लागता रौवा हमके ना पहिचननी” इंस्पेक्टर कहले “हम रत्नेश हई”

वर्मा जी याद करे के कोशिश कईले पर ओतना पूरान बात उनका याद ना पडल। फिर रत्नेश खुद उनके पुरान बात बतवले और उनसे अईला के कारण पूछले। वर्मा जी अईला के कारन बतवनी। तुरंत ही इंस्पेक्टर लिपिक के तलब कईले और फिर जमके डाट लगवले। आनन फानन में वर्मा जी के काम करे के आदेश देहले। अब वर्मा जी के लागत रहे की सत्य के राह पर चलल गलत ना रहे। आज उनके सच के जीत लउकत रहे। पर उ अन्दर से खुश ना रहले। उनका सामने शर्मा जी के लड़की के शादी रहे।

“हम आपन चेक एक शर्त पर लेब” उ कुछ सोच के

www.bhojpurisahityangan.com

कहले।

“कवना शर्त पर?” रत्नेश चिहा के पूछले।

“तहके शर्मा जी के काम भी करे के पड़ी। लड़की के शादी बा और पईसा ना मिली त शादी टूट जाई। सबके बेटी एक सामान ही होले”

“पर रौवा मालूम बा न की उहा के सारा जिदगी का कईनी? अगर रौवा न रहिति त आज हम ऐ जगह ना पहुचल रहिति।“

“तू शर्मा जी के गलती के सजा उनका लइकी के त नईख नू दे सकत। तहके उनकर काम करे के पड़ी”

रत्नेश आपन स्वीकृति दे देहले। चपरासी शर्मा जी के बोला के लियाईल। रत्नेश चेक पर हस्ताक्षर क के शर्माजी के दे देहले। शर्मा जी के कुछु समझ में ना आईल।

तभिये क्लर्क वर्मा जी के भी चेक लेके अयिले।

“राउर भी चेक बन गईल?” अविश्वास से शर्मा जी पूछले “ इ चमत्कार कईसे हो गईल?”

“शर्मा जी, इ चमत्कार नाही ईमानदारी के फल ह” वर्मा जी के जगह रत्नेश उनके जबाब देहले और 15 साल पुरान बात के बतवले की कैसे चायवाला से कर्जा लेके वर्मा जी उनकर मदद कईले रहले जब उ उनके मार्कशीट और टीसी देबे से इंकार क देहले रहले।

सच्चाई जान के शर्मा जी ग्लानी में डूब गईले। सारा जिंदगी उ वर्मा जी के कभी सीनियर ना मनले पर आज त अपने आप ही उनकर हाथ वर्मा जी के चरण पर जा पहुचल।

“आज हम हार गईनी वर्मा जी। हमके माफ़ करी। रौवा एकदम सही कहत रहनी ह। इमानदार के आज भी पूछ बा। दुनिया के इमान के पूछ्वयिया कभी ना खतम होईहे। हमरा जैसन अज्ञानी लोग सोचेला की घूस से आदमी सब काम क सकेला बाकि अंत समय में आदमी के इमान ही ओकर साथ देला”

कहत कहत शर्मा जी के आँख में आंसू आ गईल। वर्मा जी उनके उठा के गले लगा लेहनी। फिर दुनु जाना आपन आपन चेक लेके ट्रेन पकडे चल दिहल लोग।

क हजार के बजार में

अन्हारो के

दरकार का बा ?

केहू देखिए ली

त का करी ?

बानर

कहीं ओड़ा तर तोपाई ?

- शारदानंद प्रसाद जी , किताब 'बाकिर' मे

हथेली में समय (भाग : 1)



डा॰ अनिल प्रसाद

मूलतःहथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ। अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

हम जब लीबिया में रहनी, रहनी त खाली एक-डेढ़ बरिस बाकिर साहित्यिक दृष्टि से उ समय बहुत महत्त्वपूर्ण रहे। लिखत-पढ़त, पढ़ावत समय अच्छा से बीतत रहे बाकिर राजनीतिक उथल-पुथल के चलते नौकरी छोड़ के आवे के पड़ल। हमार मित्र आ छोट भाई जस, विद्वान प्रोफेसर डॉ. शिव प्रसाद पेड्डी एक दिन एगो नोट-बुक लेके हमरा इहाँ अइले आ कहले कि एह नोट-बुक में रऊआ आपन संस्मरण लिखीं। हमरा संगे दिक्कत ई बा कि हम पढ़ीले ज्यादा बाकिर लिखिले कम। दूसरे हमरा जानते संस्मरण लिखल कवनो आसन काम ना ह! हम कहनी कि हम संस्मरणात्मक उपन्यास लिखे के कोशिश कर सकिले। उ बहुत खुश भइले आ अपना पत्नी से ई बात कहले फिर दूनू जाना उपन्यास के टाइटल के सुझाव दिहल लोग: "डेट्स इन माई पाम" ("Dates in My Palm")। हमरा भी ई नाम खूब सोहाइल काहेंकि एकरा में "डेट्स" आ "पाम" दूनू में pun (श्लेशालंकार) बा जवन एह टाइटल के अर्थ के फइलावाता आ गहिर भी करता। हम अंग्रेजी में लिखल शुरू कर देहनी जे अभी पूरा नइखे भइल ओही के हम भोजपुरी में फिर से लिख के आखर टीम के निहोरा पर हम 'आखर' e-magazine पर शुभकामना आ बधाई के साथ साझा कर रहल बानी।

समय के दिन, तारीख, महिना आ बरिस में बाँधल बड़ा मुश्किल बा। समय नदी आ समुन्दर के पानी जइसन बहत जा रहल बा। हमेशा गंतव्य तक पहुँचल संभव ना होला; कभी बीच धार में, कभी किनारा पर, आ कभी भवंर में अझुरा के रह जाला आदमी। कबो जीवन-जहाज से अचानक उतरे के भी पड़ जाला बिना जनले काहे ? कब ? आ कहवाँ?

कहानी ओह समय के प्रवाह के कल्पना के चोंच से पकड़ सकेला आ अपना पाँख प बइठा के आदमी के मन आ आत्मा में छिपल रहस्य के दुनिया के सामने ले आ सकेला। कहानी में ई खूबी बा। कहानी

www.bhojpurisahityangan.com

एगो जरिया भी बा आदमी के अपना अनजान, अनदेखा मंजिल पर पहुंचे के; कहानी में बल बा, शक्ति बा, कहानी शाश्वत बा, कहानी के कवनो चौहद्दी नइखे, कहानी के ना आदि बा ना अंत बा। कहानी नदी के धारा जइसन बह रहल बा। नदी के धारा कुछ कहता, कहानी भी कुछ कहता। ध्यान से सुनी, कहानी नदी के धारा जइसन कुछ कह रहल बा!

संसार कहानी के विभिन्नता से भरल बा, कुछ कहानी अइसन बा जे आदमी के गंतव्य तक पहुंचे के पहिले से लेके आ बाद तक कहल गइल बा। अइसन कहानी बहुत डरावना बा जे निर्दोष आ अबोध नींद पर बाज के जइसन झपट्टा मारत रहेला जब तक की आदमी उ कहानी के अपने से जियत नइखे अपना जनम धरती पर या जब तक आदमी उम्मीद, संभावना, समृद्धि आ इज्जत के ऊंचाई के नया जंगल के पार नइखे कर जात।

अप्रत्याशित ढंग से पँहुचल नया जगह पर कई तरह के उलझन, नया संबंध, काम के चिंता आ समायोजन के बीच कहानी लिखा रहल बा, निःशब्द, बिना जनवले बिना बतवले मकड़ा के जाल के ताना-बाना के तरह, दिमाग के अचेतन अन्हार अथाह अगाध गहराई में, जहाँ सूरज, चन्द्रमा आ तारन के पहचान कुछ अलग तरह के बा।

घर से दूर, भूमध्य सागर के तट पर बसल एगो जगह जेकर अरबी भाषा में 'अंजीर के साया' नाम रहे, कनिष्क के मित्र उनका के समय के अपना हथेली में 'पकड़' के रखे के कहलें। अतीत के तरह-तरह के इयाद के साथे आ भविष्य के आस आ उम्मीद के साथ एकांतवास खातिर उ बहुत अच्छा जगह रहे; आपन, एकदम आपन, निजी पवित्र स्थान जहाँ बचपन में रटल श्लोक खानी एकदम ताज़ा बा - यादगार चेहरा, यादगार जगह, छोटका दरबार के भुतहा महल में रात में सियारन के बोलल, पार्वती जी के पोखरा के घाट पर इंद्रपुर राज के हाथियन के झांवा से रगर-रगर के नहवावला, शीशमहल से उल्लू के वू–हू, कबूतर के पंख के फड़फड़ाइल आ कचहरी के घंटाघर के आवाज। एकरा चलते कनिष्क के कभी अकेलापन ना महसूस होला; एकांत में एह यादन से उनका काफी मदद मिलेला आपन अकेलापन कम करे में। कनिष्क अपना देश के लोगन के साथे कैरो स्ट्रीट में एक अपार्टमेंट बिल्डिंग में रहत रहले। ऊपर से नीला रंग के पानी वाला भूमध्य सागर बहुत शांत दिखत रहे लेकिन उहाँ के लोग अन्दर से विचलित लागत रहे। पिन खजूर, अंजीर आ जैतून के पेड़ के कतार अपना जमीन से बंधल उहाँ के उथल-पुथल के साक्षी रहे। समय में अचानक आइल बदलाव के कारण बाहर के लोग अपना-अपना देश जाए के बेचैन हो गइल। बन्दूक के गोली के आवाज से प्रवासी लोग के हृदय ओहिगाँ धड़के लागल जइसे कवनो चिरई के गरदन आ पाँख समय के शिकंजा में कस के फँस गइल होखे आ उ चिरई भाग ना सके। इंद्रपुर राज के शीशमहल के कबूतरन अइसन अगर शीशमहल से जिन्दा बाहर निकल गइल तबो ओकरा बाद बहुरंगी वेनिस के खिड़की लागल आलिशान सभा-भवन जेकरा देवार पर मकड़ा आपन शिल्पकारी करत जाल फइलवाले बाड़ेसन, के आस-पास के अतीत के छोडल खालीपन आ त्यागल महिमा में कैद रही। सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति अईला के बाद आदमी के ओकर भविष्य शानदार आ आशापूर्ण लउकता जवना के चलते पुराना चीज के जगह नया चीज ले लिहले बा आ आदमी के सोचे के तरीका ओकरा मूल आवश्याकता के बारे में भी बदल गइल बा। एकरा बावजूद आदमी के आशा-तृष्णा, मोह-माया, सपना-अभिलाषा, हर्ष-विषाद, इच्छा-तड़प ओकरा वासना–लालसा, तर्क-विचारधारा के गर्भ से पैदा होला।

पचास के दशक के पहिले रेडियो के आविष्कार एगो चमत्कार रहे, ओहघरी रेडियो कीने-राखे के सबका सामर्थ्य ना रहे। पचास के दशक में इंद्रपुर में सबसे पहिले रेडिओ आइल उहाँ के महाराजा किहाँ आ ओकरा के ड्योढ़ी के सामने मैदान में लोग के देखावे खातिर रखाइल, ई तमाशा कई दिन ले चलल। गाँव-जवार के लोग के आश्चर्य होखे कि ई आवाज कहाँ से आवता ! निश्चित रूप से ई आवाज उ लोग के मालिक के आवाज ना रहे। रेडियो के आइल ओह लोग के मन में हैरानी पैदा कइलस।

अन्हरिया रात रहे, शायद सबसे अन्हरिया रात, राम सिंगारी अपना मन में सोचली। ओह अवस्था में पलंग प लेटल, गार्गी के मन में कवनो विचार ना रहे, मृत्यु के विचार त एकदम ना रहे; जीवन उनका शरीर से कवनो घरी बहत बाहर आ सकेला, उ सोचली। बाबू द्वारिका प्रसाद के छोट बहिन कांता चिरई अइसन फद्फदात अपना घबराहट में देवार के ओट से बात करत रहली। देवार के ओने से जे बाबू कालिका चरण के बड़ भाई के डेरा रहे जेने से तेजपत्ता अइसन सूखल आ पातर आवाज सुनाइल, "दरद शुरू हो गइल बा ?"

कांता के जवाब देबे के फुर्सत ना रहे !

डी. सी. बिजली के पीअर टिमटिमात रक्तहीन उपनिवेशी अतीत के धुंधला रोशनी में, आधा रात के जब सब महतारी लोग साँस रोकले रतजगा कइले रहे लोग ओहि बेरा इंद्रपुर राज के अमला लोग के डेरा में लड़िका के रोवल सुनाइल, आधा रात के बाबू द्वारिका प्रसाद के दूसरका बेटा पैदा भइल। पीअर रोशनी में खाली ओ लड़िका के महतारी के उजर दूध चमकत रहे, उ पीअर टिमटिमात रोशनी में, उजर चमकत रहे निर्बाध, नीरव ममत्व, जेकरा के ओह बेरा के सामान्य उत्तेजना भरल समय में मापल-जोखल संभव ना रहे। लड़िका डी. सी. बल्ब के पीअर रोशनी के परछाई में सुन्दर, सुघर लउकत रहे, स्थिर रूकल लहरन के बीच इंतजार में, जब महतारी के आँख के कजरारी पपनियन के सब्र के बाँध से, रूकल लहर फिर टकराए लागी; ओ महतारी के, जेकर हृदय पार्वती जी के पोखरा के कमल के पत्ता जइसन फइलल रहे। लड़िका के महतारी पार्वती जी के पोखरा जइसन शांत लेटल रहली आ उनकर गहरा रंग के पुरईन के पतई अइसन देह पर माघ के महीना में भी पसेना के बूंद, ओस के बूंद अइसन लउकत रहे, ओह बेरा जब पूस विदा लेत रहे आ फागुन नजदीक आवे खातिर इंतजार करत रहे, ओह बेरा जब रात के मौसम ठंडा आ सुखकर रहे।

आधा रात के लड़िका पैदा भइल; कमरा में से चमईन निकलल आ ई ख़बर औरत लोग के दिहलस जे लोग उम्मीद आ भय के साथ आँगन के बगल वाला बरामदा पर बइठल रहे लोग। बाबू द्वारिका प्रसाद के छोट बहिन थरिया के बेलना से बजावे लगली। बाबू कालिका चरण लाल के मेहरारू जल्दी जल्दी बइठका में गइली जहाँ बाबू कालिका चरण कुर्सी पर बइठल मोतियाबिंद के मोटा चश्मा लगवले, अपना आप से बतियावत एगो बड़का टेबल पर ताश पसरले 'पेशेंस' खेलत रहले। ओह बेरा जब राम सिंगारी उनका बैठका में बिजली के गति से पहुँचली आ उनकर बाँह छुअली। ओही घरी बाबू कालिका चरण के हाथ में काला पान के एक्का रहे जेकरा के उ थाक लगावे खातिर रखे जात रहले, मेहरारू के बाँह छुवला से बड़ी जोर के चिहुकले आ उनका ओर देखले आ तुरत्ते सब बात समझ गइले, उनका के बधाई देहले आ ठाकुर जी के कमरा के ओर दूनू हाथ जोरले बच्चा आ जच्चा के स्वस्थ होखे के कामना करत। लड़िका के रंग करिया रहे आ ओकरा गर्दन पर एगो छोट घेघ अइसन रहे। एकरा बावजूद लड़िका के महतारी के खुशी में कमी ना रहे लेकिन चिंता जरूर रहे, अपना

www.bhojpurisahityangan.com

आदत के अनुसार उ चुपचाप एकरा बारे में सोचत रहली। बाबू कालिका चरण के मेहरारू चुपचाप बिना कोई से बतवले बगल के गाँव में ओझा से राय लेबे खातिर चमईन से ख़बर भेजवा देले रहली । बाबू द्वारिका प्रसाद सुबह होखे के इंतजार करत रहले अपना मित्र, डॉ ए. डी. चटर्जी से लड़िका के गर्दन पर उगल गोला के बारे में राय लेबे के । लड़िका के छठिहार बड़ा मुख़्तसर ढंग से मनावल गइल। ई सब बात कनिष्क अपना ईया से पुछले रहले जब उ इंद्रपुर में कॉलेज में पढ़त रहले, ओह कॉलेज में जे ओह इलाका के नामी कॉलेज रहे।

बाबू द्वारिका प्रसाद जयप्रकाश नारायण आ डॉ. राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारधारा से बहुत प्रभावित रहले आ बहुत लोकप्रिय शिक्षक रहले । समाज के लोग पर आ बकिंघम हाई स्कूल के लड़िकन पर उनका पढाई-लिखाई के बहुत गहिरा प्रभाव रहे; लड़िका लोग उनका के उनका विद्वता, सहजता आ तेज दिमाग के चलते बहुत आदर आ प्रशंसा करे लोग। ओह जमाना में उ अपना समय से आगे रहले; पढाई- लिखाई में आ अपना सोच में, नया नया किताब ख़रीदे आ पढ़े में। जब भी उ कवनो बड़ा शहर में जास त नया किताब ले आवस जेकरा चलते उ अपना घर में बहुत बढ़िया लाइब्रेरी रखले रहले । पंडित मंगल दत्त त्रिपाठी उनकर परम मित्र रहले। पंडित मंगल दत्त मंझोला कद के, हंसमुख, तेज दिमाग आ जुझारू व्यक्तित्व के मालिक रहले। साथ ही उ एक उत्तम आ प्रभावशाली वक्ता रहले। उनका में श्रोता के मंत्रमुग्ध करे के क्षमता रहे। जे. पी. आ लोहिया के विचारधारा से प्रभावित एगो सामाजिक कार्यकर्ता आ सुराजी रहले । जब इंद्रपुर राज उनका के कॉलेज खोले खातिर जमीन ना देत रहे तब उ आमरण अनशन करके कॉलेज खातिर जमीन लेहले आ पचास के दशक में इंद्रपुर में कॉलेज खुलल ओकरा दू बरिस बाद बाबू द्वारिका प्रसाद के दूसरका बेटा, कनिष्क, जेकरा के उनकर ईया प्यार से जनमला के तुरत्ते बाद 'चार्मिंग' लाल पुकारे लगली, के जनम भईल।

बाबू कालिका चरण लाल के घर में ख़ुशी के साथे-साथे चिंता भी आइल। खर्चा बढ़े के चिंता, आ ऊपर से होली भी नजदीका गइल रहे । बाकि टोला मोहल्ला के मेहरारुन के गाना बजाना थोडे देर खातिर बाबू कालीका चरण आ उनकर धर्मपत्नी राम सिंगारी देवी के चिंता कम क दिहलस।

बाबू कालिका चरण अपना बैठका में बइठल औरत लोग के समूह-गान सुनत बीच-बीच में मुस्करात फेरु ताश खेले में रम गइले।

चार्मिंग लाल में बा अंश गनेस जी के

चार्मिंग लाल में बा अंश हनुमान जी के

चार्मिंग लाल में बा अंश बिसुन जी के

चार्मिंग लाल में बा अंश राम जी के

चार्मिंग लाल में बा अंश शिवजी के

चार्मिंग लाल में बा अंश किसुन जी के

चार्मिंग लाल में बा अंश कार्तिकेय जी के

चार्मिंग लाल में तेज बा सुरूज भगवान के

चार्मिंग लाल में कान्ति बा चनरमा के

चार्मिंग लाल के निरोग रखिहें आसनी कुमार दुई भाई

चार्मिंग लाल के रक्षा करिहें दुर्गा भवानी

चार्मिंग लाल के रक्षा करिहें काली माई

चार्मिंग लाल के आशीष दिहें सुरसती महारानी

(क्रमशः)



जौहर शाफियाबादी

जौहर शाफियाबादी जी शाफियाबाद शरीफ गोपालगंज , बिहार के रहे वाला हई । अपने भोजपुरी खाति सबसे पहिले १९७० में गोपालगंज अनुमंडलाधिकारी के सोझा अनशन कइले रहीं । भोजपुरी साहित्य के आँचर में हर विधा में सृजनरूपी खोइछाँ भरे में रउआ नेह-छोह से जुटल बानी । भोजपुरी में पहिला गजल महाकाव्य 'रंगमहल', ऐतिहासिक उपन्यास 'पुरबी के धाह', ललित निबंध संग्रह ,कबिरा खड़ा बाजार में, 'वेद और कुरान' सहित दर्जन भर बहुचर्चित कृति प्रकाशित भइल बा । वर्तमान में इहाँ के 'भोजपुरी व्याकरण' लिखे में पूर्ण मनोयोग से जुटल बानी ।

पुरबी

गांव- घरऽ देशऽ छोड़ी गइले विदेशवा,
से ननदिया मोरी रे, भईया तोरे बारे चित-चोर

गेठरी में बान्ही थाती मटिया के चूमी-चाटी,
से ननदिया मोरी रे, चललें विदेशवा के ओर

पनिया जहजिया से बनी गिरिमिटिया,
से ननदिया मोरी रे, लेले गइलें नेहिया के डोर

पुरखन के दिहल संस्कार ना बिसरलें,
से ननदिया मोरी रे, नाहीं रीति-नीतिया के लोर

मॉरिशस, गुयाना, फिजी जस कई देशवा,
से ननदिया मोरी रे, राजा-प्रजा भईया बारे तोर

धनऽ भोजपुरी माई भाषा के नमनवा,
से ननदिया मोरी रे, कुलवा से देले बारी जोर

दूनु प्राणि आएब छठ करे खातिर देसवा,
से ननदिया मोरी रे, कहऽ जौहर करीहें बटोर

www.bhojpurisahityangan.com

बेमार बचवा के हंसी



ध्रुव गुप्त

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला ध्रुव गुप्त जी रिटायर्ड आईपीएस अधिकारी हईं। हिन्दी मे गजल आ कहानी के किताब राजकमल से प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के भी निरंतर अपना लेखनी से समृद्ध कर रहल बानी। मुक्त छन्द में इँहा के लिखल कविता, गीत ,नवगीत अपने आप मे बेजोड़ रहेला। एह घरी इँहा के पटना मे बानी।

आजु ढेर दिन पर सुतले-सुतले
ठट्ठा के हंस रहल बा
केतना दिन से बेमार बचवा

गदगद बाड़ी दादी सोचके
कि बबुआ के गोदी में भरके
खेलावत बाड़े साच्छात भगवान जी
भाखत बाड़ी मने-मने
हलुमान जी खतिरा
सवा रूपईया के परसाद

खुश बाड़ी बबुआ के माई
कि बेटवा के निचिंत सुतले ले
निबटा लिहे केतना दिन से परल
घर-गिरस्ती, भितरा-बहरा के
पहाड़ जईसन काम

बाप के कुम्हलाइल आंखि में
आजु केतना-केतना दिन बाद
लऊट के आईल बाटे
बचवन निहन चमक

दुख-दलिदर, बेमारी, बिपत
आ अन्हार से घिरल घर में
लऊट के आईल बा अंजोरिया

www.bhojpurisahityangan.com



शचि मिश्रा

गोरखपुर , युपी के रहे वाली शचि मिश्रा जी पुना मे रहेनी। इँहा के भोजपुरी लोकगीतन के संग्रह/ संकलन प काम कई रहल बानी। हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य खाति इँहा के लगातार लिख रहल बानी। भोजपुरी लोकगीतन प इँहा के लिखल किताब भी आवे वाला बा। हिन्दी मे दु गो उपन्यास प्रकाशित हो चुकल बा , एगो प्रकाशन मे बा।

बाल-गीत

१

धुन्त मुन्त एक कउड़ी पउली
ऊ कउड़िया गंगा बहउलीं।
गंगा माता बालू देहलिनि ,
ऊ बलुइया भुजइनियाँ के देहली।
भुजइनिया हम्में भूजा देहलिस ,
ऊ भुजवा घसकटवा के देहली।
घसकटवा हम्में घास देहलिस ,
ऊ घसिया हम गइया के देहलीं।
गइया हम्में दूध देहलिस ,
ऊ दुधवा हम राजा के देहली।
राजा हम्में घोड़ा देहलै ,
उही घोड़े आईला , उही घोड़े जाईला ,
पान फूल खाईला।
पुरान भीत गिराईला , नया भीत उठाईला।
बुढ़िया आपन खपरी , सपरी सभाँर ॥

(ई गीत असल मे ओठंघि के लईकन के अपना गोड़ प सुता के झुलुहा झुलावत गावल जाला।)

२ (लोरी)

आ रे निदिया निनर पुर से ,
खटिया गोनरी गोरखपुर से ,
बाबू अइलैं ननियउरे से ,
सोने कै थारा कोने से ,
झिनवा कै भात रसोइया से
जें ल बाबू तूँ , तोर चंनन अइसन मुँह ,
तोर माई करे लुरखुरिया
तोर दादा बान्हैं पुरिया।

www.bhojpurisahityangan.com

फुआ (अनुवादित कविता)

चा र गो चुड़ी के आलपिन से
बान्हि के
तु ओह खनकत चुड़ियन के आवाज
बन कई सकत रहलू हs !

बाकि बिधि के बिधान
कलाई प गाढ़ नीला रंग मे गोदाईल
कु. पा. ?

तहरा आंखि में करिया धब्बा लेखा
उभरत
बिछिया के गोल गोल घुमावत घरी
हम , तहार गांठ देखले रहीँ
जवना के तू कबहूँ नईखू खोलले।

फुआ ; राति के आसमान से कुछ ना
बरसी
तु त ओह नीला परदा के भेद के
अतीत मे सेन्ह लगावत रहलू ह नू ,
कवन दू कुंडली बांचत
का दो फेरा प गीत गावत
हमनी के अपना पेट प सुता के
कबो अंकवारी मे त कबो गरदन से भींच
के
ओह अभागा मरद के साथे बिसुरत
जे तहरा के बिआह क के ले आईल रहे
आ छोड़ि गइल रहे आपन पिअरि मउर
अउरी लाल सिन्होरा
बरिसो बरिस तहार भगोड़ा मरद
तहरा के कई गो शिकाईत उलाहना मे
बान्हि गइल

सासु ससुर कहत ना अघासु, कि
करिया मोट लइकी से हमार लइका
खुस नईखे
बाकि, फुआ तू त ओह लो के सेवा में
बन गईल रहलू जइसे
हस्तिनापुर के दुआरी प
काठ्या बनल ठाड़ चौकीदार
भरल अनाज, पाका छत ,बीगहा मे
जमीन के
मालकिन,
तहरा माथ से, लिलार के आगे ले
लटकल घुंघ में
आग उगिलत ओह लाल टिकुली के
सामना के करित ?

तु समय के तरजुई के खाली छोड़ देहलू
तहरा मालूम रहे,
जमीन माटी आसमान फूल बगइचा से
भारी बा तहरा कलाई के गोदना
चमकत मछरी, बालू के नदी मे घोरा
घोरा के मुअल
गांव मे जिअत रहे ई कहानी ....





शैलजा पाठक

बनारस , युपी के रहे वाला शैलजा पाठक जी , हिन्दी मे आंचलिक रुप के बरिआर भाव देखावेनी, जवन भोजपुरी के जरी रहेला। इँहा के लिखल पद्य रचनन में जहाँ भोजपुरिया ठेठ अंदाज रहेला ओजुगे साहित्य के बरिआर रुप के भी दर्शन होला। कई गो कविता अलग अलग पत्र-पत्रिकन मे छप चुकल बा। एह घरी इँहा के मुम्बई मे रहत बानी।



सूरुज

ठिठुरत कांपत पिज़वल जाड़,
छील-छील ले जाता चाम,
मासु के छेदत, हाड़ गलावत,
पहुंचत बा रीढ़ के पार,
ए सुरुज ! तू काहाँ बाड़s ?

जमत बा दिलवा के बात,
कड़कत बा सबदन के तान,
कँपकपात बा भाव हिया के
ताल-तलैया काठ भईल बा,

जमत बा सब मंत्र -ऋचा,
जमत बा ऋग-बेद -साम,
जब टपकी आँख से लोर गरम,
तब गली सकल जमल सौंसार,
ए सुरुज ! तू काहाँ बाड़s ?

लिखि द एगो चिचियात चीख,
चटकन लागे सन्नाटा के,
जाड़ा के जागल नींद खुले,
कल-कल बहे नदिया आ ताल,
ए सुरुज ! तू काहाँ बाड़s ?



हृषिकेश चतुर्वेदी

बलिया युपी के रहे वाला हृषिकेश जी , आखर पेज से शुरुवात से ही जुडल बानी , ठेठ भोजपुरी आ भोजपुरी के खांटी शब्दन प बढिया पकड , गीत कविता गजल लिखेनी , एह समय इँहा के कलकत्ता मे कार्यरत बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

एगो घर लिखत



डा॰ सोनी पांडे

आजमगढ़ युपी के रहे वाली डा. सोनी पांडे जी , अध्यापक हईं। गाथांतर के संपादक, हिन्दी भोजपुरी साहित्य मे एगो जानल मानल नाव , मातृभाषा भोजपुरी मे कई गो गीत लिख चुकल बानी। सम्प्रति इँहा के आजमगढ़ मे बानी।

एगो घर लिखत क
सौ बार रउँदल जालीँ
संस्कार के अन्हार गली मेँ फेँक के
कईल जाला हजार गो सवाल
कि घर त बाप के हऽ
फेरु कईसे लिख सकेलू एके आपन घर ?

ऊ घर जेकरी खाती बहवलीँ रात दिन खून
सगरी उमर पूजलीँ डीह ब्रह्म
चढवलीँ भर भर लोटा धार नीम तर
अउरी बारि के दियना तुलसी तर
मनवलीँ सगरो देव पित्तर
अपनी प्रार्थना मेँ घोर के सजवलीँ
रसोईँ मेँ हरदी अउरी
नून के एगो हद तक

जेकरे एक एक ईँट मेँ हमनी के
स्नेह क रंग भरल ह
चउखट से मुंडेर तकले
हमरी हाथ क थाप
कुछ महावर जस लाल
कुछ सरसोँ नियर पियर
फईलल मनोहर गीत गावत मिली
ऊ घर के आपन लिखत

जम गईल खून
जब कहल गईल
ई घर भी तोहार ना
पतिगृह ह
जब चाहे बहरिया सकेला
थम गईल हाथ
कलम सूख गईल
के के कहीँ आपन घर।



मालती त्रिपाठी

संगीत से स्नातक , दु गो विषय मे एम. ए. मालती त्रिपाठी जी बनारस, युपी के रहे वाली हईं। इँहा के संगीत , योग आ साहित्य के क्षेत्र मे बहुत काम कईले बानी। भोजपुरी पत्र पत्रिकन में लगातार लिखत रहेनी। आकाशवाणी में प्रस्तुति दे चुकल बानी। फिलहाल बनारस में रहेनी।

मनवा हमार

ए ह गीत में एगो गाँव के गरीब मेहरारू के दिल के दर्द के वर्णन बा। जेकर पिया परदेसे कमाए गईलन कि घर के दिन-दशा बदल जाई अउरी निमन दिन आ जाई। बाकिर उनुकर कवनो सनेस ना मिलला से मनवा बेहाल भईल बा।

हमरा के दे के गईल घरवा दुआर हो
इचिको सुधिया नाही लिहलऽ कईसे भईलऽ पार हो
कहि गईलऽ रखिहऽ धनिया कुलवा के लाज हो
तनिको सुधिया नाही लिहलऽ....

बाबूजी के धईलस खोंखी
अम्मा जी के ससियाँ
भूअरा बरधा छोड़ीं दीहलस दुआर हो
तनिको सुधिया नाही लिहलऽ....

बुधना के फाटल जामा, सुधना उघारे
धिया फूलमतिया के चुनरी सोहाले
छोटका कहेला हम पढ़ब अब किताब हो
सोचत सोचत मोरा बथेला कपार हो
तनिको सुधिया नाही लिहलऽ....

पेट आगि बुझत बाटे बान्हे सब धराई
लुग्गा-फट्टा साथ छोड़लसि अब ना सहाई
कहि गईलऽ रखिह सजनी घरवा के लाज हो
तनिको सुधिया नाही लिहलऽ...

दिनवा पहाड़ लागे रतिया ना बीते
कईसन हो गईल सईंया, करेजवा ना भींजे
ललकी चुनरिया करे तोहरे गोहार हो
कबलक धीरा धरे हियरा हमार हो
तनिको सुधिया नाही लिहलऽ.....

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के स्वरूप आ अपेक्षा



गुरुचरण सिंह 'गुरु'

रोहतास , बिहार के रहे वाला गुरुचरण सिंह 'गुरु' जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बानी । ईंहा के भोजपुरी के लगभग हर विधा में साहित्य सिरजन कईले बानी । कई गो भोजपुरी किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी स । कुछ दैनिक अखबारन मे इँहा के स्तम्भकार भी बानी। व्यंग्य के सहारा लेके जटिल से जटिल बात सरलता से कह देबे में गुरु जी के कवनो जोड़ ना ह । सम्प्रति वीर कुंवर सिंह वि0 वि0 के अंतर्गत एस0 पी0 जैन कॉलेज में हिंदी के एसोसिएट प्रो0 बानी ।

भोजपुरी सऊँसे भारत समेत दुनिया भर के लगभग बीस देसन में पसरल एगो समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित बिया। मुख्य रूप से बिहार के दस, उत्तर प्रदेश के चउदह आ मध्यप्रदेश, झारखंड के कुल अट्ठाइस जिला के अलावे दिल्ली, कानपुर, सुरत, मुंबइ, नागपुर, हैदराबाद, कोलकाता, रांची जमशेदपुर बोकारो इत्यादि महानगरन में एह भाषा के बोले समझे लिखे वाला लोग के संख्या लगभग छब्बीस करोड़ बा, जवन भारत के सम्पूर्ण आबादी के 20 प्रतिशत के आसपास बा ।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इतिहास के बारे में विद्वानन के बीच काफी मतभेद बा। विद्वान लोग मानेला कि अपभ्रंश साहित्य से आधुनिक आर्यभाषा के विकास भइल। भोजपुरियो के पुरान स्वरूप अपभ्रंश में देखल जा सकेला। साहित्यकारन के साथे एगो बड़ समस्या इ बा कि उ लोग कवनो भाषा के जन्मतिथि आ जन्मस्थान के खोज करे में आपन सभ ऊर्जा खतम कर देला। बाकी विचारणीय तथ्य इ बा कि कवनो भाषा के जनम ना होखे, युगानुरूप जनमानस में ओकर स्वरूप परिवर्तन होला। जब कवनो भाषा अभिजात्य के लबादा ओढ़ के आम आदमी खातिर दुरूह बन जाला, त आम आदमी ओह भाषा के औचित्य-अनौचित्य के विचार छोड़ के सहजभाव से सरलतापूर्वक अपना भावना के अभिव्यक्ति करत चल जाला। ओह घरी इ सहज आ सरल भाषा भले विद्वानन के बीच प्रचलित भाषा से भिन्न देखाइ देले बाक़िर ओकर मूल स्वरूप में ढेर फर्क ना रहे। धीरे- धीरे समाज के हर तबका ओह भाषा के अपना लेला आ ओह लोक भाषा में साहित्यो के सृजन होखे लागेला। इहे लोकभाषा ओह क्षेत्र के संस्कृति के संवाहक आ विचार विनिमय के मुख्य माध्यम बन जाला। भोजपुरियो एकर अपवाद नइखे।

अपभ्रंश के सिद्ध-नाथ साहित्य में भोजपुरी के प्रारम्भिक स्वरूप के दर्शन इ सिद्ध करे खातिर काफी बा कि ओ घरी जनमानस में भोजपुरी बोल चाल के भाषा बन गइल रहे। तेजी से ओकर स्वरूप बदलत रहे। फिर त अमीर खुसरो आ कबीरदास के माध्यम से एकर साहित्यिक स्थापना भइल। साहित्यिक इतिहास के विदयापति तुलसीदास, सूरदास इत्यादि महाकवियन जइसन कवनो कवि भले भोजपुरी में लिखे वाला ना भइलन, बाक़िर भोजपुरी क्षेत्र आ बोले वाला लोगन के संख्या में वृद्धि होत चल गइल। स्वामी दरियादास, जीवनदास जइसन संत महात्मा के पद भोजपुरी

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इतिहास के बारे में विद्वानन के बीच काफी मतभेद बा। विद्वान लोग मानेला कि अपभ्रंश साहित्य से आधुनिक आर्यभाषन के विकास भइल।

के गौरव बढ़वलस। 1800 ई० में जब फोर्ट विलियम कॉलेज कोलकाता के स्थापना भइल आ ओमे हिन्दी पढ़ावे के निर्णय लिहल गइल, त हिन्दी प्रोफेसर के रुप में सदल मिश्र के नियुक्ति करल गइल। हिन्दी साहित्य के खड़ी बोली के स्वरूप के आरंभिक काल से ले के आज तक के विकास यात्रा में भोजपुरी भाषी साहित्यकारन के महत्वपूर्ण भूमिका रहल बा। जदि इ कहल जाओ की हिन्दी के राजभाषा लायक बनावे के कोशिश में भोजपुरी भाषी साहित्यकारन के सर्वाधिक

"भोजपुरी भाषा के लगभग एक हजार बरिस तक के समृद्ध इतिहास बा."

योगदान बा त अतिशयोक्ति ना होई। भारतेन्दु हरिशचन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद इत्यादि से लेके नामवर सिंह, मैनेजर पाण्डेय , केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, शिवपुजन सहाय, राहुल सांकृत्यायन आदि भोजपुरी भाषी साहित्यकारन तक हिन्दी साहित्य के विकास में केतना योगदान देलन, इ केहु से छिपल नइखे।

जदपि भोजपुरी भाषा के लगभग एक हजार बरिस तक के समृद्ध इतिहास बा, बाक़िर भोजपुरी लेखन में तेजी 19 वीं सदी के आखिर आ 20वीं सदी के आरंभ में आइल बा। आज भोजपुरी में साहित्य के विविध विधा के रचना प्रचुर मात्रा में हो रहल बा। गजल, नवगीत, प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक आ आलोचना के क्षेत्र में भोजपुरी कवनो भाषा से कम नइखे। तेग अली तेग, हीरा डोम, राहुल सांकृत्यायन, रघुबीर नारायण, शिवपुजन सहाय, महेंद्र मिश्र, भिखारी ठाकुर, रघुवंश नारायण सिंह, दुर्गा शंकर प्र० सिंह, रामेश्वर सिंह कश्यप, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, कुंज बिहारी कुंजन, गणेश दत्त किरण, भुवनेश्वर प्रसाद भानु, चंद्रशेखर मिश्र, पाण्डेय कपिल, रामवचन शास्त्री अंजोर, डा० प्रभुनाथ सिंह, प्रो० ब्रिजकिशोर, जौहर शफियाबादी जइसन सैकड़ों साहित्यकारन के लेखनी से भोजपुरी साहित्य आपन वैश्विक रूप बना चुकल बा। वर्तमान में त भोजपुरी पत्रकारिता आ लेखन के तेवर देखहीं लायक बा।

वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित आ विदेशन में संवैधानिक मान्यता प्राप्त भोजपुरी के अपने घर में उपेक्षा के दंश झेले के पड़ रहल बा। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से लेके नवोदित संस्था 'आखर' समेत कइ गो संगठन भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में सामिल करावे खातिर एड़ी चोटी के पसीना एक कइले बा, बाकिर लोकसभा में समर्थन आ स्वीकृति के बादो एकर घोषणा ना कइल गइल, इ दुर्भाग्यपूर्ण बा। 22 भाषा संविधान में शामिल होके अपना भाग्य पे इतरा रहल बा, बाक़िर संविधान के अनुसार अर्हता पूरा कइला के बादो भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा ना मिलला के मलाल 22 करोड़ भोजपुरियन के बा। 28-29 दिसम्बर 2013 के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पटना अधिवेशन में भाजपा के प्रवक्ता रविशंकर प्रसाद जी आ नेता प्रतिपक्ष सुशील मोदी जी समेत भाजपा के कइ गो नेता लोग मंच से स्पष्ट घोषणा कइले रहे कि नरेंद्र मोदी पी०एम० बनिहें त भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता दिहल जाइ। अब एह वादा के पूरा करे के समय आ गइल बा । एह वादा पर विश्वास करके भोजपुरीया जनता अपना क्षेत्रन से भाजपा के पक्ष में सम्पूर्ण समर्थन देलस। अब भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में सामिल क के भाजपा दुनिया भर में पसरल भोजपुरी भाईयन के सम्मानित करो। भोजपुरी जातीयता, सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता आ दलगत राजनीति से उपर उठ के राष्ट्रीयता आ मानवता के बात करे वाली भाषा ह। एह भाषा के संवैधानिक मान्यता दे के राष्ट्रीयता आ मानवता के सबल बनावे के प्रयास भाजपा द्वारा करल जाव।

भोजपुरी के संतमत : सरभंग संप्रदाय



संतोष पटेल

बेतिया, बिहार के रहे वाला संतोष जी , कई साल से भोजपुरी भाषा मे लिख रहल बानी । " भोजपुरी जिनगी " नाव से पत्रिका भी निकाल रहल बानी , भोजपुरी के कई गो विषयन प इँहा के शोध पढे लायक बा । कई गो भोजपुरी पत्रिकन में इँहा के नियमित रुप से लिखेनी । संतोष जी मंचीय कवि भी हईं। फिलहाल दिल्ली मे कार्यरत बानी ।

सरभंग सम्प्रदाय संतमत के एगो शाखा ह। एकर प्रचार-प्रसार देश के अन्य प्रांतन में भइल, बाकिर जवन स्वरूप में इ चम्पारण-सारण में देखाई पडेला उ रूप में दोसर जगहे ना मिले। भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिक सिद्धांतन आ मान्यतन के साथ उ पंजाब में 'सरभंग', मद्रास में 'ब्रह्मनिष्ठ' बंगाल में 'अघोरी' आ उत्तर प्रदेश बिहार में 'औघड़' के रूप में प्रचलित बा। वस्तुतः संतमत के एह शाखा में संतमत के सभ मूल लक्षण प्राप्त होखलो पर साम्प्रदायिक स्तर पर एकरा मे अइसन प्रवृत्ति देखाई पडेला, जेकरा आधार पर एकरा के ना त ब्रह्मनिष्ठ कह सकल जाला ना अघोरी आ औघड़। विशेष लक्षण के आधार पर एकरा उपर कहल मत के आस-पास के कहल जा सकेला। चम्पारण में एकर जवन रूप प्रचलित रहल ओकरा में उपर कहल अलग अलग मत के बहुत मान्यता से मिलत जुलत बा पर कुछ विशेष लक्षण के संगे सरभंग सम्प्रदाय के एगो विशिष्ठ स्वरूप केवल सारण-चम्पारण में पावल जाला। एही से ई मत के विशिष्ट स्वरूप का जुड़ाव केवल चम्पारण से ही बा। चम्पारण के विशिष्ट पहचान के एक महत्वपूर्ण आधार सरभंग सम्प्रदायो बा। सरभंग सम्प्रदाय के बारे में डॉ धर्मेन्द ब्रम्हचारी शास्त्री जी आपन आलेख " चंपारण आ भोजपुरी" (पृष्ठ 95-97 भोजपुरी निबंध निकुंज, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मलेन, 1977 ई) में लिखत बानी कि :

"शाहाबाद, सारन आउर चम्पारन ईहें तीन भोजपुरी के गढ़ ह। एमें चंपारण जिला कई एक दृष्टि से आपन अलग विशेषता रखता। एक ओर हिमालय के तराई, दूसर ओर वेगगामिनी- गण्डकी - मानों दूनों ओर से प्रकृति सुंदरी आपन विशाल बांह फैला के एह जिला के रक्षा कर तारी।

चंपारण जिला के महत्व संत साहित्य के विकास के इतिहास में एतना अधिक बा कि ओकर पूरा पूरा अंदाज लगावल मुश्किल बा. इहाँ संत विचार धारा के दू दो श्रोत फूटल एगो वैष्णव भक्ति आ दूसर शैव हालांकि दुनो के मूल उपनिषद रहे। पीछे चल के एह पर बौद्ध धर्म आ इस्लाम - खास कर के सूफी मत - के भी प्रभाव पडल।

चंपारण जिला संत साहित्य के एक विशेष संप्रदाय के जन्म भूमि ह आ विस्तार भूमि बा, जेकर नाम ह सरभंग सम्प्रदाय। बहुत अफसोस के बात बा कि अभी तक एह संप्रदाय के विचार धरा और साहित्य दूनो से जन साधारण अपरिचित बा, और बिहार के बाहर के लोग के त आहटो नइखे मिलल।

"सरभंग सम्प्रदाय' में जे सरभंग शब्द आइल बा, ओकर मतलब इहे बा कि ओइसन संतन आ साधकन के 'सम्प्रदाय' के सरभंग-सम्प्रदाय कहल जाला जे अपना वासना आ इन्द्रियन के अपना वश में क सकल होखे। सरभंग संतन के आगे चल के दूगो भाग हो गइल, जेकरा में निरबानी आउर घरबारी दूगो नाँव से पुकारल गइल।

सरभंग के सिद्धात मूलतः कबीर के संतमंत के परम्परा ह। एकरा में गृहस्थ आ सन्यासी दुनु लोग रहल बा। गृहस्थ के आचार धर्म सन्यासिन से अलग रहल बा। सरभंग खान पान से परहेज ना राखस। डॉ योग्नेद्र नाथ द्विवेदी जी 'चम्पारण की सरभंग संत परंपरा' के एगो आलेख में लिखत बानी (चंपारण महोत्सव स्मारिका ,2003 पृष्ट -16) " सरभंगियो ने अपने सिधान्तों के द्वारा सामाजिक समरसता वर्ग विभेद का खंडन, हिन् भावना का उद्वेदन किया था। इसी कारण इनमें सहज मानवीय संवेदना का विकास पाया जाता है इनकी रचनाएँ जो भोजपुरी, ब्रजभाषा या टूटी फूटी खड़ी बोली में मिलती हैं। इनके समरस सिधान्तों से ओतप्रोत हैं और अब तक चम्पारण के जनमानस में स्मृति रूप में विद्यमान है।"

डॉ शोभाकान्त झा आपन शोध ग्रन्थ 'महर्षि कबीर और चंपारण' में लिखले बानी (पृष्ट -91) "जो बिना भेदभाव किये जनता के सम्पूर्ण अंगो को ग्रहण करता है वही सरभंग है या जो संत परम्परा के नियमों का सर्वांग पालन करता है वही सरभंगी है।"

सरभंग संत कवियन के रचना के अध्यात्मवादी कविता बतावत डॉ रिपुसुदन श्रीवास्तव जी भोजपुरी कविता: रूप रंग में उधृत करत बानी की "संत कवियन के रचना अध्यात्मवादी कविता में रखल जा सकेला। सिद्ध कवियन से ले के चंपारण के सरभंग संप्रदाय के कवियन तक के कविता हम अध्यात्मवादी कविता कह सकिले। इहाँ जानबूझ के हम 'भक्ति कविता नइखी कहे के चाहत (भोजपुरी पद्य संग्रह-पृष्ठ संख्य -6 प्रकाशक: विश्व भोजपुरी सम्मलेन, 2001)

सरभंग या अघोरपंथ आपन मूल उत्स बेद में बतावेला। 'सरभंग' शब्द के व्युत्पत्ति स्पष्ट नइखे। कुछ लोग 'सर' शब्द के व्युत्पत्ति 'स्वर' से मानेले।
डॉ धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी जी आपन शोध ग्रन्थ में ''संतमत का सरभंग संप्रदाय'' में सरभंग कवियन के चर्चा कइले बानी जे मूलतः भोजपुरी के लिखत रही ।

क. भगती दास - चिलवनिया सरभंग मठ के प्रर्वतक रहीं। ई मठ मोतिहारी से तीन मिल पश्चिम के कवनो गांव के बा।
ख . रघुवर दास -चंपारण निवासी रहीं। इहां के सम्बंध में विस्तृत जानकारी के अभाव बा।
ग. दरसन दास - मोतिहारी के लगे चइलाहा गाँव के रही।
घ. शीतलाराम - राजपुरा, छतौनी (मोतिहारी) निवासी रहीं। इहाँ के जाति के तेली रहीं। इहाँ के तेल के रूपक बन्हले बानी -

''मन मौसी तेलिनिया के तेल
पैर के आवाहन करतानी।
पांच तत्व के कोल्हू में
तीन गुण के महतानी।।''

ड. सूरत राम - मलाही (चंपारण) के रहे वाला रहीं।
साड़ी मोरा फाटि गइले, अंगिया मसकि गइले, नयन

टपकी रंग भींजल रे
भींजते भींजते बारी चढ़ली अटारी, जहाँ बसे पियवा मोर रे।
च . तालेराम - गोनरवा -सोहरवा, जाति के लोहार रही। इहां के खेती के रूपक देके अध्यात्म के शिक्षा देत रहनी।
छ. भिसरो दास आ हरलाल के बारे में जानकारी उपलब्ध नइखे। (साभार: भोजपुरी साहित्य का इतिहास: प्रो गजाधर सिंह)

रमेश चन्द्र झा के किताब चंपारणः साहित्य और साहित्यकार पृष्ठ 5-6 में लिखत बानी " चंपारण का सरभंग संप्रदाय हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस संप्रदाय में अनेक प्रसिद्ध पुरुष हुयें हैं जिनका जन्म एवं कर्म भूमि दोनों चंपारण की धरती है।"

रमेश चन्द्र झा जी सरभंग सम्प्रदाय के छव गो परम्परा के संकेत दे रहल बानी -

1.करता राम -धवल राम के परम्परा
2.भिखम राम के परम्परा
3.सदा नन्द बाबा के परंपरा
4.हरलाल बाबा के परम्परा
5.भिनक राम के परम्परा
6.योगोश्वराचर्य के परंपरा

चम्पारण के सरभंग परंपरा के प्राचीन प्रवर्तक में मोती राम के बाद सबसे प्रमुख संत रहलीं भीखम राम । मोती राम जी के बारे में जादे जानकारी ना मिल सकल ।

भीखम राम - भीखम राम के समय के ठीक ठीक पता अबहीं ले नइखे चलल बाकिर एतना मालूम बा की कि सरभंग सम्प्रदाय के सबसे शुरुआती कवि भीखम राम रहनी। इहां के घर चम्पारण के माधोपुर गाँव में रहे। इहां के पहिले के नाम भीखा मिश्र बतावल जाला। सरभंग संप्रदाय के सबसे प्रसिद्ध कवि टेकमन राम के गुरु रहीं। भीखम राम के दू गो चेला रहलें - टेकमनराम आ हरिहर राम। एह बात के रास बिहारी पाण्डेय जी लिखले बानी। (रास बिहारी पाण्डेय, भोजपुरी भाषा का इतिहास, पृष्ठ सं-79) भोजपुरी साहित्य के इतिहास में प्रो गदाधर सिंह जी लिखले बानी, " भीखमरामजी पहिले वैष्णव संत रहनी। गुरू प्रीतमराम जी के देहावसान के बाद इहां के तीर्थ यात्रा पर निकल गइलीं उहां से अइला के बाद माधोपुर में समाधि ले लेनी। भीखम राम क प्रसिद्ध ग्रंथ बीजक अप्रकाशित बा।

भीखम राम के एगो कविता-

हंस करना नेवास अमरपुर में
चले ना चरखा, बोले ना तांती
अमर चिर पेन्हे बहु भांती, हंसा ....

(भोजपुरी पद्य संग्रह, भीम राव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, पृष्ठ सं-28)

संत टेकमन राम - चम्पारण जिला के धनौती नदी के तट पर बसल झखरा गाँव के निवासी रहनी। इहां के जाति के लोहार रहनी। रोजी रोटी आ गरीबी के कारन राज मिस्त्री के काम करत रहनी। माधोपुर के मंदिर के केवरी बनावट खा नामी संत बाबा भीखम राम के आसिरबाद उहां के मिलल आ फेरु बाद में भीखम राम के चेला हो गइलन। बाबा भीखम राम जी के तीन गो चेला रहलें बाकिर टेकमन राम जी सभसे मसहूर चेला रहीं। टेकमन राम जी बहुत सिद्ध आ चमत्कारी संत रहन। इनका बारे में के कहल जाला कि इहां के ब्रह्मा के साक्षात दरसन भइल रहे। टेकमन राम जी माघ महीना के अंजोर पख के पंचमी, जे बसंत पंचमी के नाम से मसहूर बा, ओहि दिने समाधी लेले रहीं।

संत टेकमन राम जी के लिखल एगो पद बा - संत

से अंतर ना हो नारद जी, चूँकि सरभंग संप्रदाय के जनम आ मठ चम्पारण जिला में बा। एह से यहाँ के संतन के बानी में भोजपुरी के शब्दन के बेवहार छूट के भइल बा। टेकमन राम जी के हर पद में भजन करे वाला भगती के राह पर चले वाला ज्ञानी संतन खातिर भगवान के हिरदय में कइसन जगह रहेला आ संतन के देह के भीतर भगवान के आत्मा के बास केहु रूप में रहेला, एकरे के नारद आउर भगवान के बतकही के रूप में संत कवि रखले बानी। टेकमन राम के शिष्य परम्परा में टहल राम, दरसन राम, कीरा राम, मिसरी बाई आ रामस्वरूप राम रहनी। टेकमन राम के पद के संग्रह " भजन रसमाला" पावल गइल बा। टेकमन राम के पद -

संत से अंतर ना हो नारद जी, संत से अंतर ना
भजन करे से बेटा हमारा, ग्यान पढ़े से नाती
रहनी रहे से गुरु हमारा, हम रहनी के साथी
संत जेवे के त बटीं में जेइले, संत सोए हम जागी
जिन मोर संत के निन्दा कइले, ताही काल होई लागी
।। (टेकमन रामः भजनमाला)

(इंटरमीडिएट भोजपुरी गद्य पद्य (भाषा आ साहित्य) बिहार इंटरमीडिएट शिक्षा परिषत आ भोजपुरी अकादमी, बिहार के ओर से प्रकाशित)

भीनक राम- भीनक राम सरभंग सम्प्रदाय के सिद्ध कवि रहनी। भीनकराम के जनम चम्पारण के सहोरवा गोनरवा नाम के जगह भइल रहे। इ राजपुर से 16 मील दूर बा। इहवे भीनकराम के समाधी बा। रास बिहारी पाण्डेय (भोजपुरी भाषा का इतिहास, पृष्ठ-78) डाॅ कृष्णदेव उपाध्याय ने इनका जन्म 1925 माना है। 'डॉ शोभाकांत झा जी आपन किताब 'महर्षि कबीर और चंपारण' में भिनक राम के निवास - राजपुर, भेडहारी, पूर्वी चंपारण बतवले बानी (पृष्ट - 96)। मनसा बाबा भीनक राम के चेला रहनी। डाॅ योगेन्द्र नाथ द्विवेदी के मोताबिक भीनकराम जाति के ततवां रहीं। भीनकराम के शिष्य परम्परा अदापुर, पूर्वी चम्पारण में बा। इहे मठ में भीनक राम जी के बानीयन के संग्रह बा। इनका सम्बन्ध कबीर दास की शिष्य परम्परा से रहे। इनकर पद के सम्बन्ध निर्गुण साधना से बा। भीनक राम के शिष्य परम्परा में श्रीमीनक राम, गोविन्द दास (दुसाध), रकटूराम (दुसाध), सीताराम दास (कोईरी), बिसुनीदास (दुसाध) आ शिवदास। भीनकराम जी के रचना हस्तलिखित बा, जवन इहां से जुडल मठन मे राखल बा। पोथी के रोज धूप-दीप देखावल जाला।

आगि लागे बनवा जरे परबतवा,
मोरे लेखे साजन जरे नइहरवा।

रामस्वरूप राम- रामस्वरूप राम पूर्वी चम्पारण के पिपरा कोठी, मोतिहारी के झखरा गाँव में रहत रहीं। इहाँ के मृत्यु के बारे में बतावल जाला की 1851 में भईल रहे। सरभंग संप्रदाय के एह कवि के गुरु टेकमन राम जी रहीं। इहां के टेकमन राम जी शिष्य परमरा के आखिरी चेला रहीं। रामस्वरूप राम जी टेकमन राम जी क लिखल "भजन रतनमाला" के प्रकाशित सन 1950 ई में करवले रही। रामस्वरूप राम जी के देहांत 1951 में भइल। रामस्वरूप राम जी के एगो भोजपुरी के कविता देखि-

अरध परध में रहना संतो अरध परध में रहना
सोहंग सबद विचारी के ओह में मन लगाई
त्रिकुटी महल में बैठ के गगन महल में जाई।

सदानंद- चम्पारण के साहित्यिक परिचय में शोभाकान्त झा बतवले बानी कि सदानंद पश्चिम चंपारण के मझौलिया स्टेशन से 5 किलोमीटर पश्चिम मीरजापुर के जरिये 'चनायनबान' गाँव के निवासी रही।सरभंग संप्रदाय के प्रमुख कवि सदानंद 1885 ई के आसपास विधमान रहीं। इहाँ के मूल नाव चित्रधर मिश्र रहे।सन्यासी भइला के बाद सदानंद नाम से

विख्यात भइनी। इनकर एगो संग्रह 'योगांग मुक्तवाली' राष्ट्रभाषा परिषद् के चैबे संग्रह में रखल बा। 'चनायनबान' में इहाँ के जीवित समाधि लेले रहीं इंकनर शिष्य परम्परा में 'मंगुराहा' (चंपारण) गाँव के परंपत बाबा भइनी। पिपरा गाँव में 'बालखंडी' बाबा रही . पंरपत बाबा भोजपुरी में खूब लिखले बानी। (शोभाकान्त झा, हिंदी साहित्य को चंपारण की देन)।

बालखंडी बाबा- इहां के गोविंदगंज थाना के महाराजगंज, पीपरा गांव पुर्वी चम्पारण के निवासी रहनी। बालखंडी जी के जन्म 1840 के आसपास भइल रहे। इहां के अलौकिक प्रतीभा से सम्पन्न रही। बचपन में इनका नाम रामप्रेम साह रहे। बालखंडी बाबा के विआह लइकाइये में हो गइल रहे। सन्यास लेवे के बाद इहां के गुरू हरलाल बाबा उनकर नाम बालखंडी रखलें। इनकर भक्ति रचना होरी, झरोखे का झूमर भोजपुरी में उपलब्ध बा। इनकर मृत्यु 1942 ई में भइल रहे। बालखंडी बाबा के कविता कविता के नमूना देखीं-

धीरे धीरे चलु सैंया के नगरिया
अजपा जाप उठत भूमि अंतर लागि गइली हो मोरि
उल्टी नजरिया।

भगतीदास- मोतिहारी से तीन मिल पच्छिम सरभंग संप्रदाय के चिलवनिया मठ बा। ओह मठ के प्रवर्तक भगती दास जी रहले। आजू से लगभग एक-डेढ़ सौ बरिस पहिले इहां के समाधीस्थ भइल रहीं। ओह घरी उनकर उम्र रहे एक सौ पचीस बरिस के रहे। भगती दास के एगो भोजपुरी कविता-

भुला गइल मनवा जान के
मात- गरभ में भगती काबुलल, इहाँ सुतल बाड़ तान के

(साभार: भोजपुरी पद्य संग्रह, भीम राव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, पृष्ठ- 31)

ताले राम- चंपारण जिला के गोनरवा - सोहरवा गाँव में ताले राम के जनम भईल रहे। ई सरभंग संप्रदाय के साधू कवि रही। फसली सन 1262 में पोता नामक जगह में इ समाधीस्थ भइनी। ताले राम जी के एगो भोजपुरी कविता-

राम भजन करू भाई, दिनवा बीटल हो जाई ।। टेक।।
साव किहाँ से दरब ले आएलो, सूद पर देली लगाई
सूद्वा हान भेल एही जग में, घरहूँ के मूर गंवाई ।। 1।।
अएतन साहो कहब कछु काहो, रहबो मन सकुचाई

(साभार: भोजपुरी पद्य संग्रह, भीम राव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, पृष्ठ- 32)

करता राम- हिन्दी साहित्य आ और बिहार के अनुसार करता राम उत्तर प्रदेश के मूल निवासी रहनी। अकाल पडे के कारण उहां के मुजफ्फरपुर के कांटी नामक स्थान पर अइनी फेर ढ़ेकहा (सत्ता घाट) केसरिया में आपना स्थान बनवनी। उहां के सरभंग सम्प्रदाय के कवि रहीं। इहां के रचना "करता राम के पद" नाम से प्रकाशित बा। करता राम के पद में भोजपुरी के प्रभाव लउकेला। उदाहरण देखीं-

गहै गरीबी झूठ न बोले जथा लाभ संतोपा
तन मन से उपकार पराया करता संत अनोपा

परंपत बाबा- परंपत बाबा मंगुराहा, गोविंदगंज, पूर्वी चम्पारण के निवासी रहीं इहां के सदानंद बाबा के चेला रहीं। सरभंग सम्प्रदाय के संत कवि परंपत बाबा के लिखल भोजपुरी के पद मिलेला।

हरलाल बाबा- हरलाल बाबा 1850 ई मे बडहरवा नाम के गांव में आपन मठ बनवनी। 1896 ई में इहवे बाबा समाधिस्थ भइनी। इहां के लिखल पद 'संत परवना' बा जवन बडहरवा मठ में सुरक्षित बा। डा॰. शोभाकान्त झा आपन शोध प्रबंध में हरलाल बाबा के जनम गोपालगंज जिला के हरिपुर गांव बतवले बानी।

दरसन दास/राम- इहां के सरभंग सम्प्रदाय के कवि रहीं। मोतिहारी से लगहीं चइलाहा गांव बा उहे दरसन दास जी रहत रहीं। आजू से लगभग 150 साल पहिले इहां के समाधि लेले रहनी। इहां के रचना भोजपुरी में मिलेला। उहाँ के एगो भोजपुरी कविता देखीं -

औचक डंका पड़ी मन में कर होशियारी हो
काल निरंजन बड़ा खेलल बा खेलाडी हो।

(साभार: भोजपुरी पद्य संग्रह, भीम राव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, पृष्ठ- 33)

मनसा राम- सरभंग कवि मनसा राम सदानंद परम्परा के संत कवि रहनी। इहां के पश्चिम चम्पारण के मुसहरवा, साठी के निवासी रहनी। इहां के रचना में भक्ति रस की धारा प्रवाहित बा। मनसा राम सरभंग संप्रदाय के अइसन संत कवि रही जेकर नाम बड़ा आदर से लिहल जाला। बाद में पूर्वी चंपारण के घोड़ासहन के लगे सिरमैंन गढ गाँव में आपन निवास बनवनी ओकरा बाद भटवलिया, केसरिया, पूर्वी चम्पारण मे रहे लगनी। मनसा राम जी कविता के उदाहरण देखीं-

लाग गइल नजरी उल्टा गगनवां में, लाग गइल नजरी।।
ना देखीं मेघमाला, ना देखीं बदरी।
(भोजपुरी पद्य संग्रह, बी आर ए बिहार विश्वविद्यालय पृष्ठ-34)

योगोश्वर राम/योगेश्वराचार्य: इनकर जनम 1884 ई में ढाका परगना- मेहसी के रूपवलिया गांव में भइल रहे। इहां के रचना भक्तिमूलक बा। परमहंस बाबा के नाम से विख्यात योगेश्वर राम के निवास रूपवलिया मठ रहे। "स्वरूप प्रकाश" नामक इनकर पद के संग्रह प्रकाशित भइल बा जेमे भक्ति के अविरल धारा प्रवाहित बा। इनकर रचना देखीं -

टूटे पंचरंगी पिजड़वा हो सुगन उड़ि जाय,
सुगनु रहले पिजड़वा में सोभा बरनिन जाय।।

डिहु राम - डिहु राम झखरा मठ, पीपरा कोठी (पूर्वी चंपारण) के एगो सरभंगी कवि रही। डिहूराम के एगो भोजपुरी कविता देखीं-

हरि भज मनुआ कर परतीत।
नाम लेत ब्रह्म जागे काम होत सिद्ध लोक।।

सीतल राम - सरभंग सम्प्रदाय के लमहर संत कवि भिनक के शिष्य सीतल राम रहनी। इहाँ के चेला पुरन राम, रामधन आ मिसरीदास रहलें, एह सभे के भोजपुरी के रचना उपलब्ध बा।

मगरू राम आ जोगेसर राम - एह दुनु जाने झखरा मठ के अधिकारी रहनी। मंगरू राम हिन्दू देवी देवता के ना मानस। इ निर्गुण कवि रहले उहे जोगेसर राम के रचना में रहस्यवाद बा। मंगरू राम के कविता-

"आव देवी मिल के चली लागल बा लगनिया।
पास्पत में परतापी देवी बार दूँ तू जानिया।।"

(महर्षि कबीर और चंपारण, पृष्ठ -100)

एकरा अलावा जोगेश्वर राम सबल राम धवल राम पूरन राम, भिखारी राम, रामधन राम, प्राण पुरुष, रामनेवाज (झखरा), मिसरी राम (आदापुर), प्रीतम राम, डीहु राम , इनर राम, सनाथ राम, कारी राम, (सभे झाखारा) के चर्चा डॉ शोभाकांत झा जी आपन शोध ग्रन्थ "महर्षि कबीर और चंपारण"में लिखले बानी।

परम्परा के कृति स्तंभ के संपादक डॉ सतीश कुमार राय लिखत बानी (पृष्ट -36), वैसे तो चंपारण में भोजपुरी का साहित्यिक प्रारम्भ सरभंग सम्प्रदाय के संत कवियों की रचनाओं से ही माना जाता है (अधिक खींचतान करने पर यह सीमा दसवीं सदी के कतिपय सिद्ध कवियों तक जा सकती है किन्तु इसे उत्तर मध्यकाल में माना) भोजपुरी साहित्य के इतिहास

लेखक डॉ कृष्णदेव उपाध्याय ने भिनक राम, भिखम राम, टेकमन राम, योगेश्वराचार्य की बानियों को भोजपुरी के अंतिम माना है।''

एह तरह लगभग दू सौ साल पहिले चिंतामनपुर मठ के सूरत राम बाबा गण्डकी नदी के तट पर बडहरवा में एगो मठ बनवलें। लगभग तेरह पीढ़ी ले इ मठ के महातम योग्य सरभंगी होत गइले। देखल जाव त बगहा। पं. चंपारण से जीवधारा पूर्वी चंपारण तक आ सुदूर नेपाल तराई से गण्डकी तट तक सरभंगी संतन के विशाल क्षेत्र रहल।

एह संत लोगन के काव्य रचना कुच्छेक संग्रिहत बाड़ी सन कुछेक लोक कंठ पर विराजमान जेकर संग्रह करे के काम पंडित गणेश चैबे कइनि। भीनक राम के पदावली बा जवान ठेठ भोजपुरी ह। मनसा राम के रचना बा जवान भोजपुरिये में बा।

पंडित रमेश चन्द्र जहां चंपारण की साहित्य साधना नाम के ग्रन्थ में सरभंगी संत के रचना संग्रह कइले बानी। सरभंगी रचना के उहे संसार बा जवान कबीर बाबा के रमैनी के। सरभंगी रचना के लमहर भंडार झखरा मठ (जीवधारा, पूर्वी चंपारण) में बनकट, आदापुर में राखल संग्रह में भीनक राम, दिमाग राम, गनपत राम के रचना संग्रहित बा ।

एह तरह देखल जाव सकेला स्वतंत्रता से बहुत पाहिले भोजपुरी पद्य के चंपारण में सरभंग सम्प्रदाय के बहुत महत्वपूर्ण योगदान बा जेकरा पर नाथ आ कबीरपंथ के प्रभाव देखाई देला।

पवन टून





www.bhojpurisahityangan.com

जँतसार

"जांतवा पीसत मोरा
हथवा खीअइले
की नाही अइले ना
परदेसिया बलमुआ
की नाही अइले ना....."

इ जँतसार के भाव ह। सबेरे उठि के गेंहू पीसत हमनी के आजी ,नानी गावत रही लोग ।एके ध्यान से सुन लिहला प रोंवा गनगना जाला। ए विरह के थाह लेबे खातिर तनी एह के भाव समझे के पड़ी। अब भले बिदेस मने दुबई आ बीजिंग होखे। बाकी पहिले उत्तरप्रदेश-बिहार के लोगन खातिर बिदेश माने कलकत्ता। खेती किसानी से जब कुछ ख़ास फायदा ना होखे त बस लालटेन, चटाई आ बक्सा उठा के लोग कलकत्ता पहुँच जाये। एहिजा जूट के तमाम मील में मजदूरी से लेके साहिबगिरी तक के काम योग्यता के हिसाब से भेंटा जाए। बाकी गांवे... घर के संवाग से लेके मेहरारू तक परेशान। जागत-सुतत मनावे... काली माई, डीह बाबा से इहे गोहरावे...कि कबले उहाँ के आइब ?

मेहरारु के खाली इहे चिंता ना रहे की ग़इल बाड़े त कबले अइहन। सबसे ढेर चिंता एह बात के रहे कि कवनो सवत के चक्कर में अझुरा त ना गइले ! एगो गाना ह-

"कवना सवतिया से नेहिया लगवला.... मोरा बिरहिनिया के पगली बनवला"।

इ बिरहिन के भाव आ पुरुब के सहारा लेके भोजपुरी के आधा से अधिका साहित्य रचाइल आ खूब लोकप्रिय भइल। गोंड़ भाई लोग आजों हुरूका बजा के गावेला-

"गवना करवला ए पीया घरे बइठवला अपने बसे ल पीया हो पुरुबी बनिजिया"

इ त लोक संगीत हो गइल। बाकी भोजपुरी के नवसीखुवा कवि से लेके आदरणीय भिखारी बाबा तक ले पूरुब के लेके खूब कोसले बा लोग ।बिदेसिया में पियारी (प्यारी) के करुण बिलाप सुनी के करेजा फाट जाला-

**"पिया मोर ! मती जा हो पूरुबवा...
पूरुब देस में टोना बेसीय बा
पानी बहुत कमजोर..."**



अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे निवास बा।

पहिले उत्तरप्रदेश-बिहार के लोगन खातिर बिदेश माने कलकत्ता। खेती किसानी से जब कुछ ख़ास फायदा ना होखे त बस लालटेन, चटाई आ बक्सा उठा के लोग कलकत्ता पहुँच जाये

आदरणीय भरत शर्मा जी गवले बानी-**"गवना करवला ए हरी जी अपने पूरुबवा गइला हो राम"।**

इ टोना कइसन रहे आ जादू कइसन रहे इ त बहुत पुरान लोग बताई बाकि रोजगार के घोर अभाव आ लाचारी ही समस्या के जर(ड़) रहे। पहिले के लोग हमनी के पुरनिया बहुत सम्पन्न रहिते त हमनी के लोक साहित्य में बड़ा गरीब रहती जा। बहुत सुंदर संगीत आ साहित्य से वंचित रहती जा । सिगमंड फ्रायड बाबा के बाति फेर से कहम कि- "साहित्य अभुक्त काम के परिणाम ह" । सीरी निरहुआ जी एक हाली गवले रहनी (तब जब उहाँ के गायक रहनी) "पीया जी ना जइहा हो पुरुबवा जहाँ बंगलिनिया बसे हो राम"।

काल्ह से कलकत्ता घूमत बानी पापा हमार करीब दस साल कलकत्ता रहल बाड़े। फोन प रोज समझावेलन -"हेइजा मत जइहा... तनी सम्भार के रहेला... अजीब शहर ह उ..." हम जादू टोना प विस्वास ना करीं लेकिन हम अपना दिल के बात बताई त बनारस के बाद हमरा दिल के करीब कवनो शहर बा त उ कलकत्ता ही लागल । सही में कबो कबो लागेला कि रही जाईं का एइजे बाकी अब के हालात बदल गइल। अब कलकत्ता के जगह दुबई आ कुवैत लेले बा। एही से खेसारी गवले आ हीट हो गइले-

"करब केकरा संगे परब आ सेज पर केकरा सङ्गे लड़ब सइयाँ अरब गइले ना.."

एगो हमार एम० ए० पास भउजाई एक हाली अपना मोबाइल में बजावत रहली-

"आगी लागो बजर परो गइला में अरब
बीतता लभ कइ उमर रुपिया का करब"

त हमरा आश्चर्य भइल बाकी सोचनी तनी त बुझाइल कि बाती खेसारी के नइखे । बियाह भइले एक साल भइले आ भइया तीन महीना बादे खाड़ी देश के वीजा बनवा लिहले । अब दरद फफा के पसरत बा । एही के खेसारी जी भुना लिहले... अउरी गायक लोग समझबे ना कइल कि बाति कहाँ बा ? कहे के माने कि भोजपुरी संगीत आ लोक से खाली रउरा विरह भाव निकाल दी त कुछ ना बाची । एह भाव में अब घून लागत बा । जे कुछ नया कइल चाहत बा उहो फ्यूजन के फेरा में कनफ्यूजन के शिकार हो गइल बा । लोकप्रिय आ सब वर्ग के प्रिय तबले रउरा भोजपुरी में ना हो पाईब जबले रउरा अपना गीत संगीत के अंतिम भोजपुरिया के दरद से ना जोड़म। गाना बजाना का ह दुःख के मरहम ह। अभी अतने...

हार पृथ्वीराज के काहे ना होखी ए भया ,
जब इहाँ जयचन्द जस घरुआर त घरही के बा ।

- पांडे कपिल जी " दुनिया के शतरंज बिछल बा "

www.bhojpurisahityangan.com

यूरेका
विज्ञान के जय उद्घोष



आशुतोष सिंह

बिहार के रहे वाला आशुतोष सिंह जी के पालन पोषण , सिलीगुड़ी आसाम मे भईल बा । संगीत के क्षेत्र मे उभरत सधल मजगर संगीतकार , भोजपुरी सिनेमा के संगे हिन्दी आ अउरी भाषा के सिनेमा में अपना प्रभावशाली संगीत से गहिराह छाप छोड़ रहल बानी । फिलहाल मुम्बई मे बानी ।

असली बात "विज्ञान प्रयोगशाला में कवनो अविष्कार आ चाहे खोज के पहिले यूरेका (Eureka) ना सुने के मिलेला। ज़्यादातर लोग के मूह से निकलेला-बड़ा अजीब बात बा"

यूरेका पुरातन यूनानी शब्द ह। एकर माने होला - "मील गईल" बा "भेंटा गईल"। विज्ञान के प्रत्येक छात्र के यूरेका शब्द से परिचय जरूर होखी। एह शब्द के प्रचलन में आवे के किस्सा भी मजेदार बा।

लगभग ईसा पूर्व ३०० साल पहिले, यूनान (ग्रीस) के साइराक्यिउस शहर के राजा हाईरो-२ एगो सोनार के आपन सोना के मुकुट बनवावे के दिहलन। उनकरा शक़ रहे जे सोनार उनका मुकुट में सोना चोरवले बा। बकिर प्रमाण कईसे होखित?

ओह घरी यूनान में ज्ञान-विज्ञान के बेरा रहे। उहाँ से समाज में एक से बढ़ के एक लेखक, वैज्ञानिक, कलाकार, विद्वान लोग रहे। आधुनिक वर्तमान विश्व सभ्यता के उद्गम के स्रोत भी पुरातन यूनान ही बावे। एह पर कभी विस्तार से चर्चा कईल जाई।

परेशान राजा, अपना समय के बड़हन वैज्ञानिक आर्कमीडीज़ के बोला के कहलन जे उनकरा शक़ बावे जे उनकर कलाकार सोना में मिलावट कर के मुकुट बनवले बा। बकिर ओकरा के प्रमाणित कईसे कईल जाओ? आर्कमीडीज़ भी गहरा सोंच में डूब गईलन।

जेतना वजन के सोना राजा दिहले रहलन, मुकुट के वजन बिल्कुल बराबर रहे। बाकीर ओह में सोना केतना शुद्ध बावे, ई कईसे पता चली? ई सवाल के उलझन में आर्कमीडीज़ बहुत दिन ले परेशान रहलन।

लोक कथा में प्रचलित मान्यता बा, एक दिन आर्कमीडीज़ बाथ टब में पानी भर के नहात रहलन। राजा के सोना के मुकुट वाला समस्या पर चिंता में डूबल। उहाँ का टब के पानी में डुबकी लीहनी। उनकरा पानी में घुसला पर टब के पानी के स्तर तनिक ऊंच भईल आ थोड़ा पानी टब से नीचे गिर गईल। आर्कमीडीज़ के समस्या के समाधान मील गईल। उहाँ का टब से निकल के बिना कपड़ा पहिरले "यूरेका" "यूरेका" चिल्ला के रास्ता में भागे लगनी। गौरतलब बा जे पुरातन यूनान में नग्न अवस्था में बाहिर निकले के

यूरेका ज्ञान विज्ञान के जय उद्घोष ह। ज्ञान खातिर एकमात्र गुण चाहीं ध्यान के, खाली देखे खाति ना। हमनी के कवनो चीज पर ध्यान लगा के देखीं समझीं जा त उ आपन समस्त रहस्य खोले के तैयार बा।

सामाजिक मान्यता रहे।

राजा कीहां पहुंच के आर्कमीडीज़ मुकुट आ ओतना वजन के सोना मंगवईलन। फेर एक बर्तन में पूरा तरह पानी भर के ओह में पहिले मुकुट डुबवलन। मुकुट के डुबला पर तनिक पानी बर्तन से बाहर गिरल। उ पानी के नापल गईल। फेर पानी वाला बर्तन में मुकुट के वजन के खरा सोना डालल गईल। दोबारा गिरल पानी के नापल गईल। दुन्नू बार के पानी के अनुपात में फर्क रहे।

प्रमाणित हो गईल की मुकुट बनावे वाला कलाकार सोना के चोरी कईले रहे।

एह प्रक्रिया के समझे खातिर तनिक ध्यान दिहल जाओ - 10 किलो लकड़ी आ 10 किलो लोहा भले वजन में एक होखे, ओकर अनुपात में फरक होखी। माने दस किलो लोहा के गोला ढेर बड़हन ना होखी। बकिर दस किलो लकड़ी ओकरा अनुपात में बहुत ज़्यादा होखी। लकड़ी के घनत्व लोहा से कम बा एह से कम जगह लीहि। ठीक ओही तरह, सोना अपना वजन से जेतना जगह लीहि, दोसर धातु ओकरा से मेल ना खाई। एह से एक ही वजन से सोना पानी के बर्तन में डलला पर जेतना पानी गीरी, दोसर धातु ओकरा से अलग जगहा लीहि आ अलग मात्रा में पानी गिरि।

हमनी के जीनीगी में यूरेका बोले के मौका –

एगो छोट घटना से आर्कमीडीज़ बहुत बड़ा सिद्धांत खोज लिहलन। आर्कमीडीज़ सिद्धांत से दुनिया भर में ढेरो काम भईल। कालांतर में "यूरेका" - माने "मिल गईल" विज्ञान के विजय उद्घोष लेखां हो गईल।

न्यूटन के माथा पर सेव गिरल आ उहाँ का अपना देश समाज के नया सिद्धांत दिहलन। बाकीर ई ज्ञान एक दिन में ना आईल होखी। आर्कमीडीज़ भी कई दिन के गहन चिंतन के बाद कवनो नतीजा पर पहुँचलन। आईन्सटाइन के सभे E=MC^2 खातिर जानेला। एह सूत्र तक पहुचे में जाने केतना साल लागल होखी।

भले लोक कथा में "यूरेका" शब्द विज्ञान के खोज से जुड़ल बा, बकिर असली ज़िंदगी में, विज्ञान प्रयोगशाला में बड़हन खोज होखेला जब कवनो वैज्ञानिक के अपना प्रयोग में "कुछ अजीब" बात देखाई देवेला। प्रचलित मान्यता से अलग अगर कवनो पदार्थ के व्यवहार देखाई देला, त ओही जा से ऊ कुछ नया खोज चाहे अविष्कार करे लागेला।

फर्ज करीं, इतिहास के ओह काल में, जब मान्यता रहे जे सूर्य आदि ग्रह पृथ्वी के चक्कर लगावेला। कवनो पहिला इंसान रोज राती के आसमान के ग्रह नक्षत्र के पोज़िशन आ गति के देखल आ लिखल शुरू कईले होखी। ओकर आश्चर्य आ विस्मय के ठेकाना ना रहल होखी ई जानी के जे अब तक के जानकारी सब गलत रहे।

नया जानकारी के साथ ओकरा खातिर दुनिया में का बदलल? सुरुज रोज पुरबे से निकली आ पच्छिमे में अस्त होखी। बाहरी दुनिया के देखला में कुछ ना बदली, बकिर सोच समझ के स्तर पर पूरा दुनिया बदल गईल। एक घड़ी के ज्ञान में दुनिया के देखे के तरीका बदल गईल।

यूरेका ज्ञान विज्ञान के जय उद्घोष ह। ज्ञान खातिर एकमात्र गुण चाहीं ध्यान के, खाली देखे खाति ना। हमनी के कवनो चीज पर ध्यान लगा के देखीं समझीं जा त उ आपन समस्त रहस्य खोले के तैयार बा। चाहे ज्ञान होखे चाहे कला चाहे खेल कूद चाहे व्यापार।

यूरेका तक पहुंचे खातिर, ज्ञान तक पहुंचे खातिर खातिर, ध्यान के रास्ता से ही जाये के पड़ी।

टोना ,टोटका , टोटरम : लोक संस्कृति के एगो तत्व



उदय नारायण सिंह

संगीत के शिक्षक , लोकगायक आ भोजपुरी संगीत में नवीन प्रयोग करे खातिर उदय नारायण सिंह जी जानल जानी । छपरा , बिहार के रहे वाला हईं । इँहा के भोजपुरी भाषा साहित्य आ संगीत में हरदम कुछ नया, कुछ अलग करे खातिर प्रयासरत रहेनी । अभी छपरा में बानी ।

टोना-टोटका पर कुछ कहे के पहिले एगो गीत के दूगो पंक्ति पर ध्यान डालल जाव-

"पटना से बैदा बोलाइ द,
नजरा गइनीं गूइंया"

इ प्रसिद्ध गीत शारदा सिन्हा जी के गावल ह आ भोजपुरिआ बधार के लगभग सभे सुनले बा।एह गीत के अर्थ भा भाव पर ना जाके,एह में प्रयोग में आइल एगो शब्द-नजरा गइनीं-पर ध्यान डालला के काम बा। इ "नजरा गइले"का ह? इहे ऊ बिआ बा,जहाँ से हमनीं के बतकही आगे बढी।नजर-गुजर,टोना-टोटका भा टोटरम-जोग एगो क्रिया रुप ह,जवन कइल जाला अपने से भा दोसर केहू भी करेला।इ भारत के त छोड़ी,बिदेसो में देखे के मिलेला। भोजपुरी बधार में त इ रच-बस गइल बा। शिष्ट भा सभ्य परिवारो के भी इ डँसले बा। बूझल जाव कि इ लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी तक आपन पकड़ बनवले बा। हमनीं इहाँ संपादित होखे वाला लगभग सभे संस्कार में एकर हाजिरी रहेला।मेहरारू लोग एकरा से ज्यादा प्रभावित रहेला लोग। त एकरा पहिले कि लेख तनीं गंभीर होखो,आइल जाव,पहिले चार-पाँच गो टोटरम के बानगी पर ध्यान डालल जाव-जनमऊती(नवजात) लइकन के नजर-गुजर ज्यादा लागेला। हँसत-खेलत लइका अगर रोवे लागेला,त लरकोरी(नवजात के महतारी)के कटले खून ना भेंटाइ।इहँवे रऊरा फरक बूझा जाइ।एह हाल में सबसे पहिले एके गो बात आवेला कि लइका के केहू नजरिया देलख।जे नजरिअइलख,उ टोना कइल ह आ अब ओह जनमऊती के टोना से बचावे खातिर कइल जाए वाला प्रयास टोटरम ह।

अब एह टोटरम में राइ-जवाइन ले के पाँच बेरा लइकवा के अऊँछ के आग में डालल जाला।अगर टोना बा त उतर जाइ। लइकवा के छठीहार में एगो बजर बट्टू(एक तरह के माला,जवना में-कौड़ी,करुअइनीं के फर,चाँदी से बनावल चंदा,तांबा से बनावल सूर्य,बाघ के नोह)गरदन में पेन्हा दीहल जाला,जवना के उद्देश्य इहे होला कि लइकवा के टोना मत

हमनीं इहाँ जिअनी से ले के मुअनीं तक के टोटरम बा। तब सवाल उठता कि इ कब से शुरु भइल ? आगम आ निगम-दू गो पद्धति बा। इ पूरा करम आगम के अधीन आवेला। एकर शुरुआत अथर्ववेद से मानल गइल बा

लागो।कजरौटा से,देह मालिस कइला के बाद काजर आ बचलका काजर के,जवन अंगूरी मे लागल रहेला,ललाट के दाहिने भा बाएँ लगा दीहल जाला।इ टोनिआह लइकवन के बचावे के प्रयास ह। काहे कि कुछ लइकवा टोनिआह जादा होलें स।उहे लइकवा के अगर महतारी नइहर भा ससूरा ले के जाली त घर में घुसे के पहिले पाँच गो झिपटा(इंटा के टुकड़ा)पाँच बेरा लइकवा के अऊँछ के पाछे पड़े फेंक देवे ली, एह बिसवास के साथे कि नजर होइ त उतर जाइ। बिआह-शादी में त टोटरम अपना परवान पर रहेला। बिआह करे जाए वाला दूल्हा के नजर मत लागो, एकरा खातिर कइ गो टोटरम कइल जाला। नहवावन के बेरा पाँच गो सुहागिन जवाइन ले के दूलहू के अऊँछ-अऊँछ के गोइंठा के आग में ओह जवाइन के डाल देवे ला लोग आ तबे दूल्हा देवता घर में जाके कपड़ा पेन्हे लें।दूल्हा के मऊर भा टोपी में सूइ खोंसाला,उहो लुका के।इ एह खातिर कि बबुआ के केहू नजरिआवे मत।एगो गीत मिलल बा हमरा, जवना में लइकी के माइ गारी (गाना में) देच कहतारी अपना समधिन के-

"सासू छिनरिओ रे जोग कइली,मन बेगी ले काहे ना अइली।"

इ सब टोटरम टोना से बचावे के उपाए नूँ ह! नाया घर बनवावे के होला त लमहर बाँस के पुलूइं पर पुरान जूता,सूप लटका के टांग दीहल जाला आ साँचहू घर बिना कवनो रोक-टोक के बनिओ जाला। अइसन ना जाने केतना टोना आ टोटरम के बानगी छिंटाइल भेंटाला,जवना के देख-सुन के आदमी सोचे के बाध्य हो जाला कि हो ना हो,एकरा आड़ में कुछुओ बा।अब रऊआ कहीं के जातरा कइले होखीं आ बिलाइ रास्ता काट देबे त रूक के तीन हाली गुना के चिन्ह अपने से पार दिहीला कि ना? काहे,इ एह बिसवास से कि रास्ता के बिघिन दूर हो जाइ आ फेर आगे बढ चलींला।

तनीं मुअनीं के टोटरमो पर एक हाली नजर डालाइए जाय। कवनो अऊसन मेहरारु,जवना के पेट में बच्चा पलत होखो, खुदा ना खास्ते ऊ मर जास त सबसे पहिले उनका दूनो गोर में सुआ घोंपाला। समसान घाट जाए तक पिअर सरसौं छिंटाला। इ एह खातिर कि चुड़ैल बन के ऊ लवटस मत।इ टोटरम लगभग भोजपुरिया बधार के सभे केहू जानेला आ आजो इ टोटका करेला।कहे के माने कि हमनीं इहाँ जिअनी से ले के मुअनीं तक के टोटरम बा।तब सवाल उठता कि इ कब से शुरु भइल- आगम आ निगम-दू गो पद्धति बा। इ पूरा करम आगम के अधीन आवेला।एकर शुरुआत अथर्वबेद से मानल गइल बा।

टोना भा टोटका एगो क्रिया रुप ह।कवनो अभिष्ट के सिद्धि खातिर टोटरम भा टोटका होला,जबकि कवनो अनिष्ट के साधे खातिर टोना।टोना करे वाला के अमानवीय मानल गइल बा,जबकि टोटरम करे वाला के त्रस्ता। इ दुनों क्रिया लुका-छुपा के कइल जाला।केहू देखो मत, टोको मत-एकर पहिलका शर्त होला। आगम में पूजा के छव गो रुप बा।जवना में पितर पूजा आ भूत पूजा में टोटरम के चर्चा पावल जाला। पूजा के उद्देश्य-मोहन, सम्मोहन,मारन,उच्चाटन आ वशीकरण के सिद्धि में टोना आ टोटरम के महत्वपूर्ण भूमिका होला। टोना करे वाला के हमनीं के बधार में डाइन भा डाय (मेहरारू के डाइन आ मरद के डाय)कहल जाला।एकर साधना होला,जवन मंत्र भा तंत्र के सहारे होला।एकरा खातिर आमावस के रात भा दसहरा के दस रात, समसान भूमि,मूर्दा के भस्म,करिया कूकूर, शराब- ना जाने केतना सामग्री के चरचा बा, कहल मुश्किल बा।बढिया सिद्ध डाइन के भोजपुरी में

www.bhojpurisahityangan.com

हँकरा डाइन कहल जाला।अइसनो मिथक बा कि हँकरा डाइन जड़-सोर से गाछ उखाड़ देवेले। बाकिर एहू लोग के ऊपर मानल गइल बा"ओझा"के, जेकर काम ह एह विपत्ति से छुटकारा दिलवावे के। रक्षक के ऊँच आसन मिलल बा हमनीं के संस्कृति में।ओझा से उपर होलें"भगत",जेकरा प्रति इ विश्वास बा कि उनका देह पर सातो बहिन देवी (शीतला, सम्मे, काली, बिघिन, कंकारिन, फुलमती आ बूढिया माइ)के बास होला।(भोजपुरी के लोक संस्कृति में एही सात रुप देवी के पूजा होला)।भगत अपना-आप में पूरा साधक के रुप में हमनीं इहाँ स्थापित होला लोग। जब ओझा के ओझइती काम ना आवे तब भगत लोग आपन जोग भा पूजा पाठ कर के ओह नजर-गुजर से मुक्ति दिलवावेला।हँ,एकरा खातिर देवल(देव स्थान) भी जाइल जाला आ सात कडाह दूध भा मूर्गा चढावल जाला। सही कहीं त एकर ओर-छोर नइखे।जेतने डूबब,ओतने रहस्य गहरात जाइ।आज एह वैज्ञानिक जुग में एह बातन के कवनों तर्क से साबित नइखे कइल जा सके,बाकिर इ बिधि-बिधान बा हमनीं इहाँ आ अगर लोग मानता त राऊर समझावल बेकार जाइ।इ अंधविश्वास ह लेकिन जे मानेला ओकर अंधभक्ति ह। आपन लोक संस्कृति जौ जौ आगर बा,जे जेतना डूबी,ओकरा ओतने भेंटाइ।







चंदन सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला चंदन सिंह जी , भोजपुरी गजल गायकी के वास्तविक जनक के रुप में जानल जानी । राष्ट्रीय स्तर प शास्त्रीय आ लोक संगीत गायन मे कई गो पुरस्कार जीत चुकल बानी। बचपन से ही साहित्यिक रुचि सम्पन्न । कई गो अखबारन में इँहा के लिखल कथा, कहानी आ गीत छप चुकल बा । हिन्दी में उपन्यास भी लिखले बानी । हर सप्ताह भोजपुरी संगीत के कड़ी में एगो नया लड़ी जोड़ेनी । फिलहाल पटना में बानी ।

रा जदरबार खतम हो गईल, रईस लोगन के महफ़िल प्राइवेट पार्टी बन गईल आ कोठावालियन के महफ़िल रेड लाइट एरिया में तब्दील हो गईल। आधुनिक काल में महफ़िल के स्थान पर संगीत-सम्मलेन ले लिहलस

महफ़िल

'महफ़िल' अरबी भाषा के शब्द ह s जवना के माने होला गोष्ठी, सभा, मजलिस, जलसा आदि बाकिर महफ़िल शब्द से सामान्यतः 'संगीत के बईठकी' के बोध होला। इ दू प्रकार के होला,**'महफिले-रक्स'** माने नाच के मजलिस आ **'महफिले-मूसीकी'** माने संगीत-गोष्ठी'। परिभाषा के तौर पर कहल जा सकेला कि, "संगीतकार,संगीत-पारखी आ रसिक श्रोता के ख़ास बईठक जहाँ एक-दूसरा के सुने आ परस्पर विचार-विनिमय खातिर उचित माहौल रहेला, महफ़िल कहाला।" पाश्चात्य-संगीत में एगो शब्द आवेला - **'चेंबर-म्यूजिक'** , जवना में संगीत प्रस्तुत करेवाला आ गुणग्राही श्रोता के परस्पर सामंजस्य आ संवाद जरुरी अंग हs। एही चेंबर-म्यूजिक के भारतीय संस्करण के महफ़िल अथवा संगीत-गोष्ठी कहल जा सकेला। महफ़िल, मध्यकाल में मुस्लिम तहजीब आ भारतीय समाज के सामंजस्य के देन हs।

महफ़िल सजे के स्थान के तीन गो श्रेणी में बाँटल जा सकेला-

1. राजदरबार के महफ़िल,
2. रईस लोगन के महफ़िल, आ
3. कोठावालियन के महफ़िल

अब एहमें से कवनो नइखे बाँचल। राजदरबार खतम हो गईल, रईस लोगन के महफ़िल प्राइवेट पार्टी बन गईल आ कोठावालियन के महफ़िल रेड लाइट एरिया में तब्दील हो गईल। आधुनिक काल में महफ़िल के स्थान पर संगीत-सम्मलेन ले लिहलस। प्रस्तोता आ श्रोता के दूरी बढ़ल, संगीत कृत्रिम आ बेजान होत चल गईल।

समय के आधार पर महफ़िल दू भाग में बँटल रहे - 1. रात के महफ़िल, एकरा के **'खड़ी महफ़िल'** भी कहल जात रहे। एकरा में तवायफ लोग खड़ा होके, नृत्य के साथ भाव बताके गावत रहे लोग।साजिंदा भी कमर में साज बाँधके खड़ा होके बजावत रहे लोग। 2. दिन के महफ़िल यानी **'भैरवी के महफ़िल'**, जवना में संगीत सुबह में शुरू होत रहे आ बईठ के गावल-बजावल जात रहे।

मध्यकाल में संगीत आमफहम के चीझ ना रहे, एकर दायरा छोट रहे। ओइसे देखल जाव त कवनो चीझ जवन 'क्लासिक' कहाला कला चाहे साहित्य, ऊ आम के चीझ ना हs। ऊ एगो विशेष वर्ग खातिर होला काहे कि ओकरा गूढ़ता के, विशिष्टता के बूझे के समझ सभे में ना होला।

संस्कृत में जानकार श्रोता के **'बहुश्रुत'** कहल गईल बा आ महफ़िल में अईसने श्रोता लोग जुटत, आमंत्रित कईल जात रहे। सही मोका पर 'दाद' यानि प्रशंसा कईल भी कला हऽ। 'आह' अथवा 'वाह' प्रशंसावाचक दू गो अभिव्यक्ति हऽ, जवना के व्यक्त करेवाला महफ़िली तहजीब के जानकार मानल जात रहे। संगीत-गोष्ठी में ताली बजावल वर्जित आ शिष्टाचार के विरुद्ध रहे। कुलीन परिवार के लड़िका

जेकरा संगीत के 'स' भी समझ नईखे, जेकरा 'वाह' के उचित स्थान के पता नईखे ओईसन श्रोता के वाह-वाही के चक्कर में संगीत तमाम विकृति से घिर आईल बा

लोग के महफ़िली शिष्टाचार के जानकारी तवायफ लोग से दिलावल जात रहे। तब कोठा अदब,सलीका के स्कूल होत रहे जहाँ के अभिवादन करे, बात करे, बईठे-बइठावे, स्वागत करे के तौर-तरीका अनुकरण के योग्य रहे।राजदरबारन चाहे रईसन के महफ़िल में संगीत-प्रस्तोता के ईनाम के रकम सार्वजनिक होत रहे बाकिर कोठा पर ईनाम नज़्र करे के तरीका बड़ा शालीन रहे। श्रोता जवन रकम देवे के चाहत रहे ऊ चुपचाप अपना तकिया के नीचे रख देत रहे। गाना-बजाना खतम भईला पर श्रोता पान-इलाईची लेके चल जात रहे लोग आ बाद में तवायफ के कवनो दासी-लउड़ी तकिया के नीचे से सब रकम इकट्ठा करत रहे। इचलन एहसे रहे ताकि कोठा पर सउदाबाजी मत होखे आ बेसी पईसा देवे वाला के तुलना में कम पईसा देवे वाला के नजर नीचा मत होखे।

'गोष्ठी' के चलन प्राचीन काल से ही बा। जैन धर्मग्रन्थ में भी गोष्ठी के उल्लेख बा जवना में संगीतकार, साहित्यकार, कवि, गणिका आ कलापारखी जुटत रहे लोग। बौद्ध साहित्य में 'समज्जा' के उल्लेख बा, जवना में नृत्य-संगीत आ तमाशा होत रहे। मौर्यकाल, शुंग, कुषाण, हर्षवर्धन के काल में भी गोष्ठियन के चर्चा मिलेला। एह सन्दर्भ में एगो उल्लेखनीय आ एह तरह के शायद एकमात्र घटना बा कि, महाकवि आ संगीतकार अश्वघोष के प्राप्त करे खातिर कुषाण सम्राट कनिष्क युद्ध कईले रहन।

प्राचीनकालीन गोष्ठी मध्यकाल में महफ़िल रूप में निखरल जवन बहुत आकर्षक रहे। पचास-सौ लोग के बईठे लायक हॉल, रंग-बिरंग के झाड़-फानूस आ कंदील के मद्धिम रोशनी, दिवाल पर सजल चित्रकारी, नकली मोती के झालर आदि से सजल रहत रहे। प्रस्तोता के अतिरिक्त श्रोता के बईठे खातिर भी गद्दादार आसन आ तकिया लागत रहे। उम्दा पान महफ़िल के जान रहे, जवन आयोजक द्वारा परोसल जात रहे। रईस लोग चाहे कलाकार आपन 'पनडब्बा' भी लेके जात रहे। जान के ताज्जुब होइकि रईस लोग पच्चीस साल तक पुरान पान के स्टॉक राखत रहे। जतने पुरान पत्ता ओतने लजीज ! मेहमान लोग के खाए पिए के पूरा इंतजाम रहत रहे। गर्मी के दिन में थोड़ा-थोड़ा समय पर चांदी के तश्तरी में रखके शरबत आ ठंढी में चाय चलत रहे।

तवायफन के महफ़िल के अभिन्न अंग रहे - **'मुजरा'**। एकर माने होला अभिवादन, आदरसूचक सम्बोधन, सलाम, आदाब आदि। मुगलकाल में नृत्य-संगीत के शुरुआत में कलाकार द्वारा 'सलामी' पेश होत रहे। कत्थक नृत्य में आजो इचलन बा। बाद के समय में मुजरा नाच-गाना के सम्मिलित रूप के तौर पर व्यवहार में आवे लागल जवन आज ले प्रचलित बा। तब तवायफन के बहुत सम्मान रहे आ दरबार आउरी रईस लोग के संरक्षण भी प्राप्त रहे। इ तवायफ लोग उच्च कोटि के कलावंत होत रहे लोग साथे अदब आ तहजीब के जिवंत उदाहरण भी। स्वाभिमानी भी कम ना ! लगभग डेढ़ सौ बरिस पहिले लखनऊ के एगो महफ़िल में मुश्तरी बाइएगो गजल सुनावत रही—

"लब बंद कुफ्ल था पड़ा कौलो करार का,
बोसों से लाल हो रहा रुख़सार यार का।"

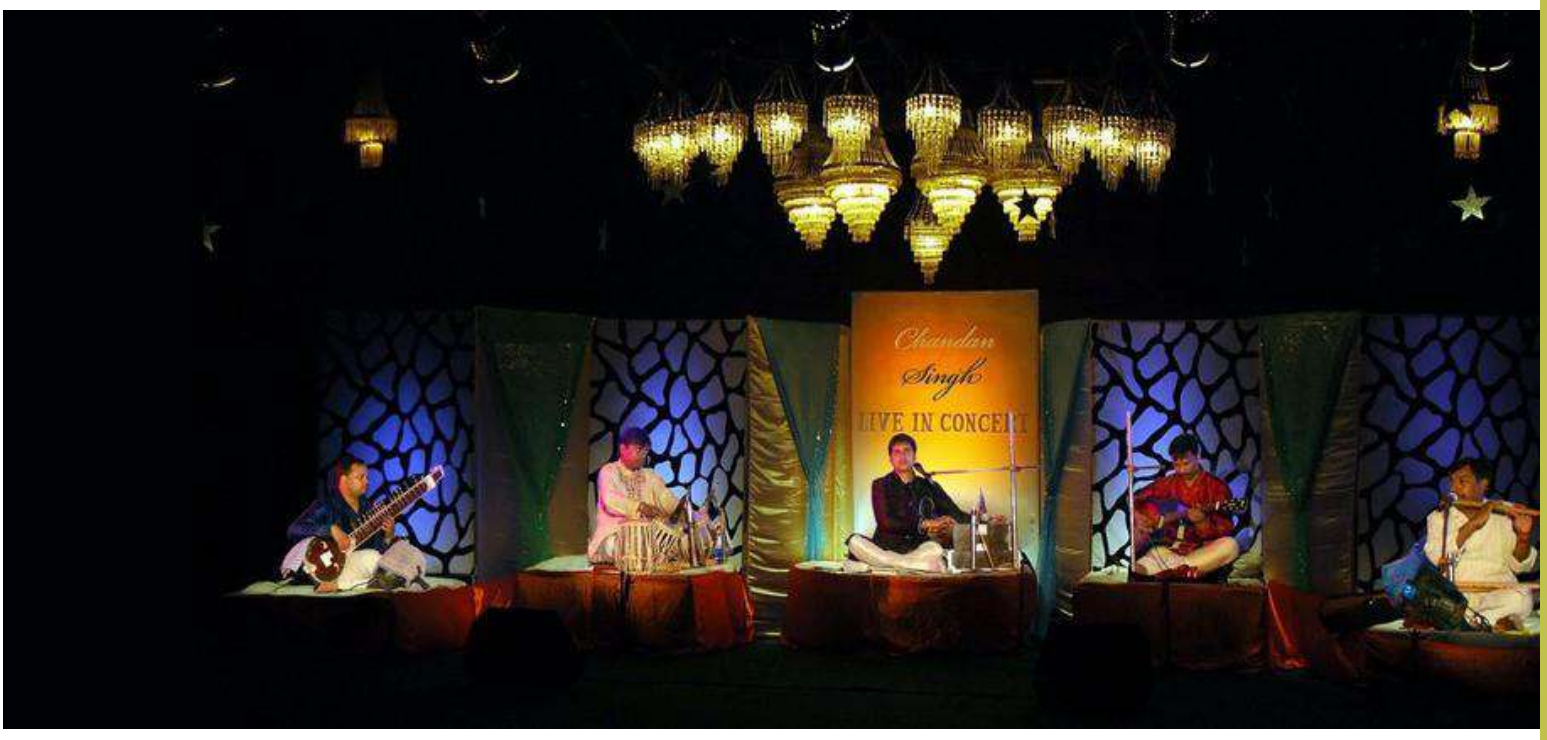
एही बीच एक जाना मुश्तरी बाइके नजदीक जाके, मुस्कुरा के उनका गाल पर आपन अंगुली फेर के कहलें, एक बेर फेर से गाके बताईं कि यार के रुख़सार कईसे लाल होत रहे। अभी उनकर वाक्य पूरा ना भईल कि मुश्तरी बाइके जोरदार चांटा उनका गाल पर पड़ल आ कहली, अईसही लाल होत रहे।

महफ़िल में **'भांड़'** भी बुलावल जात रहे लोग। इ लोग के नकल, स्वांग आ चुटकी से महफ़िल जानदार बनल रहत रहे। इ लोग बहुत हाजिरजवाब होत रहे। एक बेर मोहम्मद शाह रंगीले के दरबार में नादिरशाह एगो तवायफ के देख के सवाल कइलन - "अगर औरत हिंदुस्तान के आ मर्द विलायत के होखे त संतान कईसन होई?" तुरंत एगो भांड़ खड़ा भईल आ हाथ जोड़के कहलक कि, गलती माफ़ होखे हुजूर, संतान 'नादिर' होई। नादिर के एगो माने 'अनोखा' भी होला।

महफ़िल ऊ स्थान रहे जहाँ प्रस्तुति करके एगो कलाकार-हृदय का संतोष मिलत रहे काहे कि हर श्रोता दोसरा के देखा-देखी आह-वाह ना करत रहे बल्कि संगीत समझ के दाद देत रहे जवना चलते कलाकार हमेशा सतर्क रहत रहे लोग, अपना कला के मांजत रहे लोग। महफ़िल के मुख्य साज रहे - पेटी यानि हारमोनियम, सारंगी, दांया-बांया (तबला), सितार, बीन (इसितार से मिलत-जुलत तंत्र-वाद्य रहे। आधुनिक समय में बीन नाम से एगो सुषीर लोकवाद्य भी बा जवन अक्सर सपेरन के हाथ में लउकेला), सरोद आदि। संगीत श्रृंगार में ख़ास भूमिका राखे वाला सारंगी लुप्त होखे के कगार पर बा। बीन त कबे लुप्त हो गईल।

ओइसे त महफ़िल में पक्का गाना-बजाना यानि ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, चतुरंग, त्रिवट, टप्पा, रागमालिका आदि के बोलबाला रहे बाकिर महफ़िल में छोट चीजन जईसे - ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, सावन, झूला, ग़ज़ल आदि भी बड़ा चाव से सुनल जात रहे।तब राग-रंग होत रहे, राग-जंग ना !

प्राचीन काल से आधुनिक काल के पूर्वार्ध तक 'गोष्ठी' कवनो ना कवनो रंग-रूप में प्रचलित रहे बाकिर अब इ इतिहास के चीझ बा। जवन आनंद एक-दूसरा से आँख मिलाके प्रस्तुत करे आ सुने में रहे ऊ बात अब सम्मलेन आ बड़का शो में कहाँ ! संगीत के स्तर हल्का होत चल गईल। जेकरा संगीत के 'स' भी समझ नईखे, जेकरा 'वाह' के उचित स्थान के पता नईखे ओईसन श्रोता के वाह-वाही के चक्कर में संगीत तमाम विकृति से घिर आईल बा। तब कोठा, जवन आज बदनाम स्थान के प्रतीक हऽ, पर भी पईसा देवे के मर्यादित सलीका रहे



पवन टून

आज खुलेआम पईसा लुटा के फूहड़पन के प्रदर्शन होता। तब गायक/गायिका के बईठ के ही प्रस्तुति देवे के होत रहे सिवाय मुजरावालियन के बाकिर आज अधिकांश कलाकार लोग बिना संगीत के साथ अभिनय के सामंजस्य के समझले तवायफन के भौंडा-नकल करे में लागल बा लोग। संगीत ओछ मनोरंजन के साधन बन गईल बा।शास्त्रीय-संगीत के सम्मलेन भी बाह्यरूप से शास्त्रीय रह गईल बा बाकिर तानबाजी, जुगलबंदी के मुकाबला, तबला के चमत्कार, अधिक आकर्षण पैदा करे खातिर अभिनय के तरकीब आदि से शास्त्रीय-संगीत क्लासिकल (classical) ना रहके **'मासिकल'** (massical) हो गईल बा... आ मासिकल श्रोता के रिझावे खातिर कलाकार कइगो जतन करेला। अगर एगो आयोजन में ढेर कलाकार होखस त संगीत सर्कस हो जाला।

जईसे-जईसे सभ्यता के मशीनीकरण होत गईल, गाना-बजाना यंत्रवत हो गईल। संगीत से रूह खतम हो गईल। अब ऊ संगीत ना बाँचल जवन सुनके केहु कलेजा थाम लेवे, आँख से अनायास लोर गिर जाओ।





www.bhojpurisahityangan.com

बिदेसिया के पाति :

अब काहे ना होला गाँव में नाटक



निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं । इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी । एह घरी पटना में निवास बा ।

ढेर दिन बाद, ढेर दिन खातिर मामा-गांव में रह के लवटल बानी। अबकी पारी सोच के गईल रहनी कि खाली गांव में भा घरे में नइखे बइठल रहे के, जवार घुमे के बा। घूमनी-फिरनी। हर उ गली से गुजरनी, जहवां बचपन गुजरल रहे। जवन गली में ना जाने केतना हाली पिटाइल रहीं अंटी-एली-गोली खेले खातिर। जवना गली में ना जाने केतना हाली रहता चलते प्रेमिका के चिट्ठी देले रहलीं। जवना गली में ना जानी केतना हाली फैटा-फैटी में नाक-भुभून टूटल-फूटल रहे। बाकिर गांव में कुछ चीज खटकत रहल। होली सामने बा। आपन लईकाई के होली इयाद आवत रहे। कईसे बसंत आवे के पहिलहीं से हमनी के होली के तइयारी में लाग जात रहीं जा। खाली रंग-गुलाल वाला होली खातिर नाही। होली के बाद लगले गांव में नाटक होखत रहे, ओकरे बिसेस तइयारी चलत रहे।

एह बेर गांव में होली के लेके कउनो सुगबुगाहट ना देखनीं त पूछनीं कि का अब नाटक एकदमे से बंद हो गइल बा। जवाब मिलल- जगहे नइखे त कहवां होई नाटक अउर फेर पहिलका बातो त नइखे रह गइल। पूछनीं कि काहे पहिलका बात नइखे रह गईल। केहू जवाब ना दिहलस बाकिर हमरा ई बुझाइल कि गांव के इस्कूल के सोझा के एगो छोटका मैदान के खतम हो जाए से सांचो अब पहिले वाला बात नइखे रह गइल। गांव में घूसते सामने इस्कूल पड़ेला। ओकरे सामने एगो छोट-मोट मैदान पड़त रहे। ओही मैदान के किनारे एगो चबूतरा रहे, जवन आजुओ बा बाकिर मैदान में बड़का-बेढब इस्कूल के बिल्डिंग खड़ा हो गइला से उ चबूतरा अब ढहल-ढुहल अवशेष लेखा हो गइल बा। कोना में पड़ के सिसकत बा। उ चबूतरा कउनो सधारण चबूतरा ना ह। हमरा आपन होश में कम से कम 20 बरिस तक उहे चबूतरा आ छोटका मैदान गांव के संभरले रहे। उ चबूतरा ओह काम के करत रहे, जवन बड़का-बड़का समाज सुधारक लोगन के बस में आजुओ नइखे।

ओही चबूतरा पर नाटक-नौटंकी होत रहे हर साल होली में। नाटक

में मय गांव के लोग भाग लेत रहे। का दलित-का पिछड़ा आ का बड़ जात, सभे एके रंग में रंगल रहत रहे। हीरो के रूप में दलित आउर पिछड़ा जाति के लइका के ही पहचान रहे, एह से उ लोग के पूरा गांव समाज में आपन इज्जत रहे। नाटके के बेरा नाहीं, सालो भर केहू एकार मार के ना बोलत रहे उ लोग के काहे कि हर साल होली में उ लोग आपन अभिनय प्रतिभा के लोहा मनावत रहे। बड़ जात के लइकन के पहचान नाटक में हीरोइन बने के रूप में जादे रहे। त अइसन होत रहे कि हीरो-हीरोइन बने वाला के नाटक भइला के बादो सालो भर जिगरी इयारी रहत रहे। आउर नाटक के समय तो गजबे रंग रहत रहे।

पूरा गांव के हर जाति के लोग के टोली बनत रहे चंदा मांगे खातिर। केहू के दुआरी पर सब लोग जाके बइठ जात रहे आउर घंटन चिरौरी करत रहे पांच-दस रुपयइया चंदा बढ़ावे खातिर। कवनो जात के, कवनो जात के दुआरी जाए में लाज ना लागत रहे, ना प्रतिष्ठा कम होखे जइसन बाधा सामने आवत रहे। जवना-जवना रात नाटक होखत रहे, ओह रात एके संगे सब लोग बइठत रहे ओह मैदनवा में। का बड़का, का छोटका। पिछुआरी में सब जाति के महिला लोग भी साथे बइठत रहे रात-रात भर। जाति, वर्ग के माने टूट जात रहे।

एगो-दुई गो नाटक बदे टूटल रहत रहे इ बाकिर अबकी गांव में रहीं त लागल कि नाटक बंद होखे से कइसे उ कुल चीज गांव में उफान मरले बा। आपन टोला के नवका उमिर के लइकन के देखलीं कि उ लोग के पूरा दोस्ती-इयारी आपने टोला भर में बंधा के रह गइल बा। पूरा गांव तक भी ना घूम पावेला इ लोग। मन परेशान हो गइल कि कांहे ओह नाटक के खतम कर दिहल गइल, जे इ कुल्हि के कई बरिस से संभरले रहे । कांहे इस्कूल के बेढब-बिल्डिंग खड़ा होत रहे त लोग ना कहलस कि बिल्डिंग के अइसन बनावल जाओ, जेकरा में एगो मैदान बचल रहो। चबूतरा त आजो बा बाकिर का ओकरा के देख के नवका पीढ़ी के लोग पतियाई के नाटक-नौटंकी वाला इ चबुतरा में केतना ताकत रहे ?



रोजगार, खाड़ी(गल्फ) देश



अनिमेष कुमार वर्मा

सिवान के रहे वाला अनिमेष कुमार वर्मा जी , भोजपुरी भाषा आ साहित्य मे लगातार सिरजना कई रहल बानी , आखर पेज से जुड़ल अनिमेष जी भोजपुरी मे गीत , कविता , कहानी के संगे संगे अपना फोटोग्राफी खाति मानल जानी । फिलहाल इँहा के अबुधाबी , युएई मे रहि रहल बानी ।

कुछ दिन पहिले के बात ह। एक दिन साँझ खा हम आपन हजामत बनवाए खातिर अपना अफिसवा के बगल के एगो सैलून में गईल रहनी।ओजुगा हमार हजामत बनावे ला एक जाना अइले। बात चीत शुरू भइल, आ उनुकरा बात करे के अंदाज से हम चिन्ह गइनी की ई भोजपुरिये हवें। मालूम चलल कि घर गोपालगंज बा आ चार महिना पहिले ही ई अइले ह गोपालगंज से। एही क्रम मे हम उनका से काम आ तनख़ाह के बारे में भी पूछ लेहनी, आ ओकरा बाद जवन जानकारी मिलल हमरा, उ हम बहुत जरूरी समझनी कि रउवा सभे से बतावल जाउ।

खाड़ी देस में रोजगार शुरुए से सभे के मनपसन जगहि मानल जाला आ खासकई के हमनी के भोजपुरिया लोग में सभे के जान-पहचान में केहु ना केहु अरब देस में बड़ले बा। पईसा बा इहाँ एमे कवनो दु राय नईखे। बाकी दस में से आठ जना कवनो न कवनो वजह से आ चाहे जानकारी के अभाव में गलत जगह फँस जाला भा ई कहीं कि फँसि गइल बा लोग। समाज आ नाता रिश्ता से लाज के मारे लोग बतावे के भी ना चाहेला। नवहा लोग जानकारी के अभाव में रोजगार दियावे के वादा करत अइसना गिरोह में फंस जाला। अगर रउआ भी खाड़ी देसन में काम करे के मन करत बा त कुछ बात के जानकारी राखल जरूरी बा। एगो उदाहरण देवे खातिर हम बतावतानी की सैलून मे काम करे वाला भाई कवना फेरा में पड़ल बारें।

उनकर दूर के कवनो रिस्तेदार उनका के नौकरी दियावे ला 2 लाख रूपिया लेहले रहलें। उनका से वादा कइले रहलन कि आबुधाबी में उनका जाके खाली नोकरी करे के बा आ पईसा कमाए के बा। रहे के व्यवस्था भी कंपनी के बा खाली खाये के जवन लागी तवने अपना चेट से देबे के बा। वीजा अईला के बाद उ आपन टिकिट कटा के पहुँच गइलें आबुधाबी। इहाँ अईला के बाद कंपनी उनका के नोकरी पे बोलवलस, आ एक हफ्ता खातिर कहीं रहे के जोगाड़ कइके अगिला हफ्ता से आपन बेवस्था करे के कह देहलस। महीना के ३ हजार दिरहम वादा रहे उनुका रिश्तेदार के बाकी कंपनी कहलस कि महीना हजार रुपिया मिली आ जबले वीजा के पईसा रिकभर ना होखी तबले ओतने पईसा मिली। हजामत बनावे के समान के खर्चा भी ओकरा में से ही काटल जाई, आ रहे के आपन खर्चा। वीजा के पईसा पूरा भइला के बाद डेढ़ हजार दिहल जाई। आज के समय में हालत

अइसन बा कि बस आपन गुजारा चल जाता। पासपोर्ट कंपनी ले लेवे ला, आ दु बरिस मे एक हाली घरे जाए खातिर मौका मिली। ई कुल बतावत घरी उनुका आँख मे लोर आ गईल रहे । उनकर गलती एतने रहे कि उ जान पहचान के आदमी के बात प भरोसा कई के नोकरी के कागज ना मँगले, ऑफर लेटर ना मँगले जवना के लेबर कांट्रैक्ट भी कहल जाला। अगर केहु के भी नोकरी करे खातिर गल्फ देसन में आवे के मन बा त कुछ बात पे ध्यान दीहल बहुत जरूरी बा। बहुत बार होला कि मजदूर लोग एजुगा आ के फंस जाला आ जानकारी के अभाव में शोषित होत रहेला। ना तनख़ाह ढंग के मिलेला , ना ढंग से रहे खाये के मिल पावेला । एहीसे मृगमरीचिका के चक्कर में ना पड़े के चाहीं। कुछ बात जवन रउवा सभ के मालुम र हे के चांही गल्फ आवे से पहिले -

1.कवनो सही कंपनी नोकरी देवे खातिर पईसा ना मांगे ले । ई पईसा दलाल लोग के पाकिट में जाला। दलाल लोग से बचे के चाहीं आ पंजीकृत कंपनी पे भरोसा राखे के चाही।

2.अगर दलाल लोग से नोकरी के पक्का भरोसा बा तबो नोकरी के ऑफर लेटर जरुर ले लेवे के चाहीं।

3.उ कंपनी के बारे में आपन केहु जान पहचान के आदमी से, जे उहाँ पहिले से बा, पता करवा लेवे के चाहीं।

4.अगर केहु नईखे जे पता लगा सको त अपने से फोन करके कंपनी में बात करके देखे के चाहीं।

5.जहां भी नोकरी करे जाईं ओहिजा के भारतीय दूतावास में आपन रजिस्ट्रेशन करा लेवे के चाहीं।

6.गल्फ में रहे के खर्चा सबसे बड़ खर्चा होला एही से हमेशा कंपनी के दिहल घर के चुनल सही रहेला।

7.कबो आपन तनख़ाह केहु के लगे जमा ना करे के। अइसन ढ़ेर किस्सा होला जब पईसा सुरक्षित रखे के वादा कइके लोग पईसा लेके भाग जाला।

8.अधिकतर देस में मेडिकल कार्ड, साल दु साल में एक हाली देस आवे जाये के टिकिट देवे के सरकारी नियम बा। नोकरी के बेरा एकरो बारे में जानकारी लेवे के चाहीं।

चाहे कुछु हो जाउ बिना कवनो ठोस लिखित कागज/ऑफर लेटर के केहु पे जबानी भरोसा ना करे के चाहीं। कुछ देस के हेल्पलाइन नंबर दिहल बा जहाँ कवनो परेसानी भइला पे तुरंत संपर्क करे के चाहीं।

यू॰ए॰ई॰ - 800 46342 (लोकल)
सऊदी अरब - 011-4024444 (रियाद)
कुवैत – 22510891 (लोकल)
ओमान - 00968 24695981 (लोकल)
कतर - 44255704 (लोकल)
बहरैन – 377024453 (लोकल)

www.bhojpurisahityangan.com

भाषाई एकता आ लोकगीत



देवेंद्र नाथ तिवारी

देवरिया , युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। इँहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ फिलहाल वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी । कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा । आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा ।

भोजपुरिया संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ स्वरूप एकर लोकगीतन में देखे के मिलेला। एह लोकगीतन के आपन दर्शनशास्त्र आ आपन सौंदर्यशास्त्र बा। एही से भोजपुरी लोकगीत में कुल्ही लौकिक-अलौकिक अनुभव के भाव देखे के मिल जाई।

भोजपुरिया संस्कृति आपन प्राचीनता, व्यापकता आ विविधता के चलते एगो विलक्षण संस्कृति हऽ। भोजपुरिया रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार, पहिनावा-पोशाक, खेती-किसानी आ लोक परंपरा के साथे-साथे भोजपुरी भाषा, भोजपुरिया माटी के अइसन विशिष्टता दिहले बिया जइसे सारा दुनिया के खासियत इहाँ सिमट गइल होखे। भोजपुरिया संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ स्वरूप एकर लोकगीतन में देखे के मिलेला। एह लोकगीतन के आपन दर्शनशास्त्र आ आपन सौंदर्यशास्त्र बा। एही से भोजपुरी लोकगीत में कुल्ही लौकिक-अलौकिक अनुभव के भाव देखे के मिल जाई। एगो अउर खास बात इ बा कि भोजपुरी लोकगीतन में लोक जीवन रचल-बसल बा एह दूनो में कवनो अलगाव नइखे। एही से इहाँ 'कला कला के खाति' चाहें 'कला जिनगी खाति' जइसन कवनो विवाद के गुंजाइश नइखे, काहेंकि कला आ साहित्य जिनगी के ओही तरे अभाज्य-अकाट्य अंग बा जइसे-हवा-पानी। इहाँ सामंजस्य आ समन्वय के भाव बा इचको अलगाव नइखे। एही सिलसिला में भाषाई एकता आ समन्वय के तलाशत एह आलेख में बतौर बानगी हम भोजपुरी आ कुमाँउनी लोकगीतन के तुलनात्मक अध्ययन करे के कोशिश कइले बानी।

विवाह संस्कार में कन्यादान एगो अइसन रस्म हऽ जहाँ कठ-करेजी मनई का आँखी के कोर जरूर भींज जाई। जवना बेटी के माई-बाबा आपन आँखी के पुतरी आ हिया के टुकड़ा जस पललस-पोसलस, आजु उहे बेटी कन्यादान के बाद पराया हो जाई। एह रस्म के निभावत बाबा के हाथ काँपत बा। आँखी में उमड़त सागर के संभारत ऊँहा के अपना भावना पऽ काबू राखे के लाख कोशिश करत बानी बाकि एह पऽ लगाम नइखे लागत आ आँखी से लोर झर-झर गीरे लागत बा। एह स्थिति के अभिव्यक्ति तकरीबन हर भाषा के संस्कार गीतन में मिले ला। एही सिलसिला में भोजपुरिया अँचल में हई गीत के गावल जाला-

कवन गरहनवा लागे दिन दुपहरिया, कवन गरहनवा संझबेर हे।
कवन गरहनवा बाबा लागे अधिरतिया, कब दू उगरिन होई हे।
सुरूज गरहनवा लागे दिन दुपहरिया, चंद गरहनवा संझबेर हे।
धिया गरहनवा लागे आधिरतिया, कब दू उगरिन होई हे।
धोतिया काँपेला, पोथिया काँपेला, काँपेला कुसवा के ढ़ाह हे।

धिया ले काँपेलन बाबा हो कवन बाबा, कब दू उगरिन होई हे।
बहिनी ले के काँपेलन भइया हो कवन भइया, कब दू उगरिन होई हे।

ज्यादातर भोजपुरी लोकगीत सवाल-जवाब के रूप में मिलेला। सवाल-जवाब में सामुहिकता के बोध होखेला। एह संस्कार-गीत में बेटी के ऋण से उगरिन होखे के तुलना ग्रहण से उगरिन होखे से कइल गइल बा। कन्यादान के घड़ी में भावना के चक्रवात से बाबा आ भाई के शरीर काँपत बा। हमार दुलारी धिया-बहिनी अब पराई हो जाई। अइसन लागत बा कि माड़ो काँपत बा, बियाह करा रहल पंडिजी के पोथी काँपत बा आ लइकी के बाबा के हाथ में कुश के पवित्री भी काँपत बा। कुमाँउनी में भी एगो अइसन भाव के संस्कार- गीत मिलेला-

आधुनिक काल में पाश्चात्य सभ्यता द्वारा आरोपित कइल गइल मूल्य आ बाजार के प्रभाव भी भोजपुरी संस्कृति पऽ पड़ रहल बा। संक्रमण के एह काल में भोजपुरिया लोग आपन लोक परंपरा से गते-गते दूर हो रहल बा। एह अलगाव के रोके के प्रयास होखे के चाहीं

हर हर कंप, थर थर कंप वो तो कंप है गड़ुए कि धार ए।
हर हर कंप, थर थर कंप है कूसै कि डालि ए।
हिय झन कंप बबज्यू, मन झन कंप, वो तो कंप है गड़ुवे कि धार।
वो तो कंप है कूसै कि डाल ए।
हम कहाँ कंपे लाड़ु लडैती, वो तो कम्पै है गुड़ुए की धार ए।
हिय झन कंप बब्ज्यू मन झन कंप, वो तो कम्पै है गड़ुए कि धार ए।

एह गीत के भाव कुछ अइसन बा कि बाबा के हाथ काँपत बा, गोड़ काँपत बा आ जल-पात्र बा। कुसवो काँपत बा। बेटी अपना बाबा से कहत बिया- बाबा मत काँपी, धीर धरीं इ एगो रस्म हऽ जवन सभे के निभावे के पड़ी। बाबा अपना दुलारी धिया से कह रहल बाड़े- बेटी हम नइखीं काँपत ऊ कुस काँपत बा- जल-पात्र काँपत बा। मार्मिकता के पुट एह दुनो संस्कार गीत में रचल-बसल बा।

इ आश्चर्य के बात बा कि भोजपुरिया क्षेत्र आ कुमाउँनी अंचल भौगोलिक रूप से तऽ दूर बाड़े बाकि भाषाई- सांस्कृतिक रूप में एह दूनों के बीच में काफी समानता बा।

एह आलेख के आखिर में हम इ कहल चाहत बानी कि असल में एक ओर जहाँ हमनी के आपन पुरातन सांस्कृतिक परंपरा से मिलल लोक आ धार्मिक संस्कार हमनी के पारिवारिक आ सामाजिक जिनगी के प्रभावित करेला तऽ दोसरे ओर एह उत्तर आधुनिक काल में पाश्चात्य सभ्यता द्वारा आरोपित कइल गइल मूल्य आ बाजार के प्रभाव भी भोजपुरी संस्कृति पऽ पड़ रहल बा। संक्रमण के एह काल में भोजपुरिया लोग आपन लोक परंपरा से गते-गते दूर हो रहल बा। एह अलगाव के रोके के प्रयास होखे के चाहीं। एह से हमनी के इ दायित्व बा कि अगिला पीढ़ी खाती लोकगीत रूपी आपन सांस्कृतिक थाति के जोगावे-सरियावे के प्रयास कइल जाए।

कवना समाज के प्रतिनिधि हऽ भोजपुरी सिनेमा ?



प्रमोद कुमार तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । इँहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इँहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

रउआ केशव प्रसाद मिश्र के नांव सुनले बानी? एगो अउर सवाल 'कोहबर की शर्त' रचना के बारे में कवनो जानकारी बा? नांव के बात चलल बा एह से पूछ रहल बानीं कि नांव से कवनो समाज आ संस्कृति के का रिश्ता होला? का नांव से कवनो समाज के मानसिकता के बारे में कुछ पता चलेला? हम खाली कुछ भोजपुरी सिनेमा के नाम ले रहल बानीं।

पहिले 1990 तक के सिनेमा- गंगा मईया तोहे पियरी चढईबो, लागी नाही छूटे रामा, बिदेसिया, भौजी, अमर सुहागिन, बलम परदेशिया, चनवा के ताके चकोर, चुटकी भर सेनुर, नदिया के पार, दुल्हा गंगा पार के आदि। अब एकरा बाद के कुछ सिनेमा के नाम सुनीं 'ससुरा बड़ा पइसा वाला', 'निरहुआ सटल रहे', निरहुआ तांगेवाला, निरहुआ बनल डॉन, देवरा बड़ा सतावेला, 'बिरजुआ ढेला वाला', 'लड़ाई लऽ अंखियां ए लौंडे राजा', कहां जइबा राजा नजरिया लड़ा के, अंखिया तोहार कमाल कइले बा, एक बिहारी सौ पर भारी आदि आदि। लिस्ट लमहर बा बस एकरा के नमूना मानीं आ बताईं कि सिनेमा के एह नाम सब से समाज के बारे में कुछ पता चल रहल बा कि ना। नांव से कुछ फर्क पड़ेला भा एकर कवनो मतलब ना

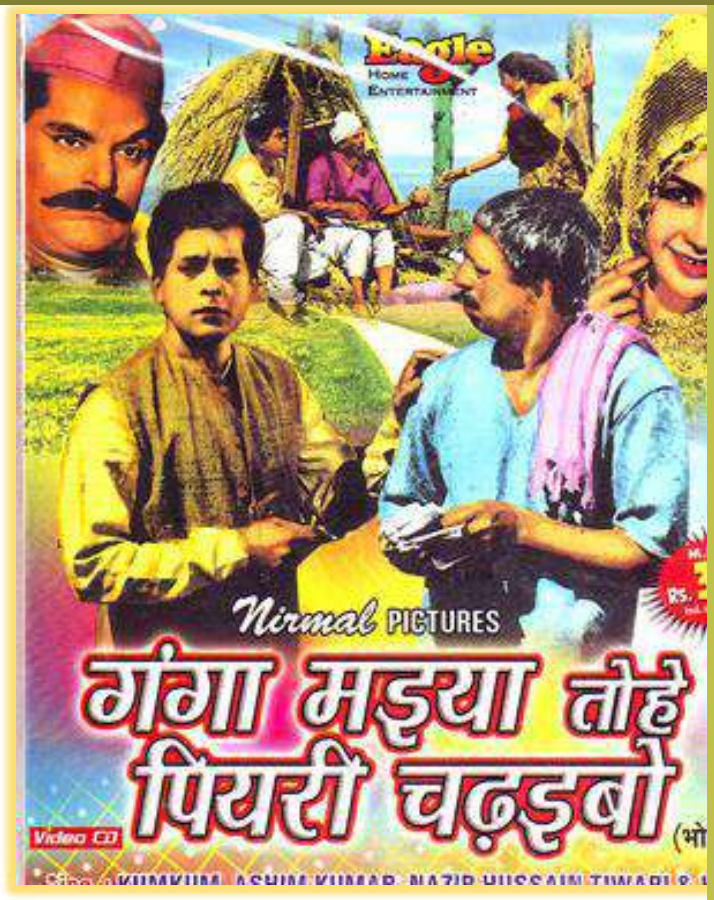


होखे।

बहुत दिन बाद हमरा के एगो सिनेमा के नांव सुने के मिलल रहे- 'चलनी के चालल दुलहा' जइसहीं ई नांव सुननी बुझाइल जे गांव से एगो ठंडा हवा के झोंका चल आइल, कान में गीत गूंजे लागल- 'चलनी के चालल दुलहा, सूप के पछोरल हो'। देर तक लोक के कल्पना शक्ति, बिंब बनावे के क्षमता, उपमा अलंकार आ जाने का का मन में आवत चल गइल आ कान में धुन बाजे लागल आ आंखि के सोझा परिछन के सीन चले लागल जवना में हाथ में लोढ़ा लिहले दुलहिन के माई बाड़ी, ढेर सारा मेहरारू, लइकिन, बच्चा से घेराइल दुलहा खाड़ बाड़े आ गीत चल रहल बा 'छोटे मोटे सास बाड़ी बड़े गो दामाद हे, तनकी सा निहुर बचवा, परिछीं लिलार हे' बाकिर जइसहीं 'ढेला वाला' टाइप के नाम दिमाग में आवेला अइसन कवनो सीन दिमाग में ना आवे बलुक एगो पूरा संस्कृति के बहुत सीमित क देबे वाला टपोरी टाइप के दृश्य आंखि के सोझा आ जाला।

एकर बड़ कारण बा कि भोजपुरी सिनेमा बनावेवाला लोग के अपना संस्कृति आ समाज से रिश्ता नइखे। इ कवनो जरूरी नइखे कि सब केहू के अपना संस्कृति के समझ होखहीं के चाही। ढेर लोग रोजी-रोटी के जोगाड़ में लागल रहेला कहां समाज आ संस्कृति के चक्कर में पड़े लोग। बाकिर जे संस्कृति के कारोबार करे चलत बा ऊ अइसन लोग के पहचानियो ना सके कि कवन आदमी नीमन लिख सकेला, के बढ़िया संगीत दे सकेला ! त एकर मतलब बा कि ऊ अपना काम के ले के ईमानदार नइखे। 'चलनी के चालल दुल्हा' जइसन नाम के पीछे शायद निलय उपाध्याय जइसन कवि के भूमिका ना रहित त ई नाम ना आ पाइत।

अइसहीं 'नदिया के पार' सिनेमा ना बन पाइत अगर केशव प्रसाद मिश्र आ उनुका उपन्यास 'कोहबर के शर्त' के चिन्हे वाला आ 'दोस्ती' जइसन



सिनेमा लिखेवाला लेखक गोविंद मूनिस ना रहते । बहुत साल बाद जब एही कहानी प 'हम आपके हैं कौन' जइसन फिलिम बनल त ओहू में केशव प्रसाद मिश्र के नाम डालल गइल। सुदूर राजस्थान के जनमल हिंदी सिनेमा बनावेवाला ताराचंद बड़जात्या भोजपुरी के ताकत पहचान लेले आ लगभग भोजपुरी में पूरा 'नदिया के पार' बना देले। इहे ना जब 'मैंने प्यार किया' बनवले त शारदा सिन्हा से 'कहे तोहसे सजना तोहरी सजनिया' गाना गववले बाकिर भोजपुरी सिनेमा बनावेवाला लोग के एह कलाकारन के इयाद ना आवे। एह लोग के खाली एगो चीज आवेला कि लोग में हिंसा आ सेक्स के तड़का मार के कइसे पइसा कमा लिहल जाव।

अक्सरहां हम सुनले बानीं कि अइसन लोग कहे ले कि सिनेमा बनावे में बहुत पइसा लागेला, हमनियों के चाहेनीं कि नीमन सांस्कृतिक फिलिम बनाईं जा बाकिर नुकसान के डर से ना कर पावेनीं। एह तर्क के खोखलापन प का कहल जाव, का भोजपुरिया लेखक आ गायक लोग करोड़ में पइसा

मांगे ले, का 'नदिया के पार' बनावे में बहुत पइसा लागल राहे। का गुजराती से लेकर बंगाली भाषा में जेतना सिनेमा बनत बा ऊ सब में करोड़ो रूपिया खरचा होखेला। असली सवाल पइसा के ना मेहनत आ नीयत के बा जवना के भारी कमी भोजपुरी सिनेमा में देखे के मिलत बा।

भोजपुरी के ज्यादातर फिल्म एगो खास वर्ग के ध्यान में राखी के बनावल जा रहल बाड़ी स। सिनेमा के नांवे अइसन राखल जाला कि कुछ लोग भुलाइयो के देखे ना जाव आ कुछ लोग खाली नांव सुन के ही सिनेमा हॉल में पहुंच जाव। पहिले एगो सिनेमा होत रहे (अभियो होते होखी) जवन खाली सबेरे आ राती के देखावल जात रहे। 'गरम जवानी','कच्चीकली' से ले के 'पहिलकी रात', 'वासना की रात' जइसन ओकर नांव किशोर उमिर के लइकन के खूब खींचे, लगभग उहे हाल भोजपुरी सिनेमा के हो गइल बा। लोग सोचते नइखे कि कुछ नीमन कइल जाव आ जे भी अभिनय, संगीत भा निर्देशन के गंभीरता से लेवेला ऊ भोजपुरी के बजाय हिंदी भा दूसर भाषा के सिनेमा में चल जाला। एक हाली व्यक्तिगत रूप से हम मनोज वाजपेयी से पूछले रहीं कि रउआ एतना नीमन भोजपुरी बोलत बानीं एगो सिनेमा भोजपुरी में काहें नइखीं करत? ऊ छूटते कहले हम दउड़ के करब बाकिर केहू भोजपुरी के ढंग के स्क्रिप्ट लेके हमरा लगे आवे तब न। अमिताभ से लेकर जैकी श्राफ तक के इस्तेमाल कइल जा रहल बा बाकिर एह लोग के भोजपुरी सिनेमा के स्तर सुधारे से कवनो संबंध नइखे कुछ निर्माता निर्देशक लोग कमाई करे खातिर एह नाम के इस्तेमाल करे ले जवना में स्क्रिप्ट आ निर्देशन प मेहनत एकदम ना लउके।

भोजपुरी सिनेमा के साथे एगो बहुते खतरनाक बात जुड़ल बा जवना के चर्चा बहुते अहम बा। हर जागरूक समाज अपना संस्कृति के ले के सम्मान के भाव राखेला अउर कोशिश करेला कि ओकर नीमन छवि बाहर के लोग के देखे के मिले। बंगाल, गुजरात आदि राज्यन के लोग के अपना भाषा आ पारंपरिक त्योहारन से गहरा रिश्ता भा। दुर्गापूजा के समय बंगाल में आ गरबा के समय गुजरात में रउआ दूसरा भाषा के गीत के कल्पना ना कर सकीं बाकिर फगुआ से ले के भोजपुरी सिनेमा तक में हिन्दी के गाना आ ओकर धुन लगातार सुने के मिल जाई। एह समाज के लोग अपना थियेटर आ नाटकन के खाली महत्वे ना देले बलुक टिकट कटा के देखे जाले जबकि हमनी के समाज अभियो कमोबेस उहे बा जवन भिखारी ठाकुर के नाटकन खातिर भी अपना बच्चा सब से कहत रहे कि 'अरे भिखरिया के नाच देखले बिना कवन अकाज बा, गइलन स त गोड़ तोड़ देब ।'

अइसन नइखे कि बंगाल में अश्लील साहित्य आ सिनेमा ना होखे। बंगाली समाज में भी एगो वर्ग अइसन होई जवन खाली मजा, हिंसा आ अंग प्रदर्शन वाला चीज देखल चाहत होखी। आखिर देह के कारोबार के सबसे बड़ मंडी त कलकते में न बा, बाकिर बाहर के समाज में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र, सत्यजीत राय, ऋतुपर्णो घोष आ एक से बढ़ के एक चित्रकार लोग के चर्चा होला। काहें? एह से कि उहां के समाज अपना साहित्य, सिनेमा, संगीत आ एह सब से बनेवाला संस्कृति के दिल से प्यार करे ले।

एकरा उल्टा भोजपुरिया समाज के तथाकथित समझदार लोग 'बेकार सिनेमा' के नान्ह जात, छोटका लोग, कम पइसा वाला लोग के सिनेमा कह के किनारा क लेवेले आ हिंदी भा अंग्रेजी में घुस के अपना के बड़का समझे लागे ले। असल में ई भोजपुरी समाज में बहुत गहराई तक ले बइठल सामंतवादी सोच हउए। सिनेमा बड़का छोटका के ना पूरा समाज के होखेला। ई गलत सोच बा कि कम पढ़ल लोग 'बगल वाली जान मारे ली' टाइप चीज से जुड़ेला। का गरीब आ कम पढ़ल लोग 'नदिया के पार' देखे ना

गइल रहे, ऊ खाली अमीर लोग के बल प बनारस में लगातार चले के रिकार्ड बनवले रहे। ई सब एगो भरम ह, कुल मिला के अइसन सिनेमा से बाहर के लोग के इहे सनेस जाला कि भोजपुरी में एकरा अलावा कुछो हइए नइखे। सबसे बड़ बात कि सफलता के बादो मनोज तिवारी, निरहू, रवि किशन आदि लोग आ एह उद्योग के बड़का लोग एह स्थिति के बदले कवनो कोशिश ना करे, बलुक हिंदी सिनेमा में जाके इहे लोग ढेर मेहनत करे ले आ ओकरा के गंभीरता से लेवेले। एकरा बादो भोजपुरिया समाज इनका के आपन मानेला आ सम्मान देवेला। जवना समय में मराठी आ गुजराती सिनेमा नेशनल अवार्ड जीत रहल बा आ आस्कर खातिर नामित हो रहल बा ओही समय में परिवार के बीच भोजपुरी सिनेमा देखे में लाज लागत बा एह से शर्मनाक स्थिति भोजपुरी समाज खातिर दूसर ना हो सके।

पवन टून





www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्कृति के वाहक भोजपुरी फिल्म ?



डा० एस के सिंह

बलिया युपी के रहे वाला डा. एस के सिंह जी फिलहाल बनारस मे असिस्टेंट कमिश्नर बानी ।भोजपुरी आ हिंदी साहित्य में समान दखल राखेनी । भोजपुरी भाषा प लगातार लिख रहल बानी ।आखर पेज प इँहा के लिखल कई गो विवेचनात्मक लेख , भोजपुरी कविता आ चुकल बा ।

सब केहू जानेला कि भोजपुरी के पहिला फिल्म 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो' रहे बाकिर एकरो से पहिले भोजपुरी-गीत, निर्देशक किशोर साहू के फिल्म “नदिया के पार” में 1948 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मलेन के अध्यक्ष मोती बी ए लिखले रहन। एकरे बाद भोजपुरी गीतन के फिल्म में रखल रिवाज बन गइल।

भोजपुरी सिनेमा के भीष्म पितामह नाजिर हुसैन से देशरत्न बाबू राजेंद्र प्रसाद जी कहले रहीं, 'बहुत हिम्मत होखे त भोजपुरी सिनेमा बनावऽ।' फेरु नाजिर साहब एगो स्क्रिप्ट लिखलन, नाम रखलन गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो आउर निर्माता खोजे लगलन। निर्माता के रूप में विश्वनाथ शाहाबादी, निर्देशक के रूप में कुंदन कुमार, हीरो के रूप में असीम कुमार, हिरोइन के रूप में कुमकुम आ सहायक कलाकारन के रूप में रामायण तिवारी, पदमा खन्ना, पटेल अउर भगवान सिन्हा जइसन लोग एह फिल्म के हिस्सा बनल। गीत शैलेंद्र के त संगीत चित्रगुप्त जी के। 16 फरवरी 1961 के दिन भोजपुरी सिनेमा खातिर एगो ऐतिहासिक दिन रहल। भोजपुरी के पहिला फिल्म ‘गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो’ के मुहूर्त भइल आउर शूटिंग शुरू भइल। फिल्म बनल आउर 1962 में रीलीज भइल, गाँव त गाँव, शहरन के लोग भी फिल्म देख के दीवाना हो गइल। ए फिल्म के खासियत रहे दहेज, बेमेल विवाह, नशाबाजी, सामंती संस्कार, अंधविश्वास आउर गाँव के समस्या, जे भोजपुरिया लोगन के आपन जिनगी के समस्या लागल। एह फिल्म के गीत एतना मोहक रहे कि गली-गली बाजे लागल। पाँच लाख के पूँजी से बनल ई फिल्म 75 लाख रुपया के कमाई कइलस। भोजपुरी फिल्म निर्माण के दौर शुरू हो गइल बाकिर “लागी नाही छूटे राम” आ “बिदेसिया” के छोड़ के कवनो दोसर फिल्म कमाल न कइलस।

1977 में बिदेसिया के निर्माता बच्चू भाई साह, सुजीत कुमार आ मिस इंडिया प्रेमा नारायण के लेके रंगीन भोजपुरी फिल्म 'दंगल' के निर्माण कइलन। नदीम-श्रवण के मधुर संगीत से सजल दंगल व्यवसाय के दंगल में भी बाजी मार ले गइल। एकरा बाद नाजिर हुसैन फेन सुरफुरइलन

आ राकेश पांडेय, पद्मा खन्ना के लेके 'बलम परदेसिया' बनइलन। अंजान आ चित्रगुप्त के खनखनात गीत-संगीत के दम पर बलम परदेसिया रजत जयंती मनइलस। एकरा बाद निर्माता अशोक चंद जैन के फिल्म 'धरती मईया' आ 'गंगा किनारे मोरा गाँव' हीरक जयंती मनइलक। 1983 में मोहन जी प्रसाद के हमार भौजी, 1984 में राज कटारिया के 'भैया-दूज', 1985 में लाल जी गुप्त के नैहर के चुनरी आ मुक्ति नारायण पाठक के पिया के गाँव, 1986 में रानी श्री के 'दूल्हा गंगा पार' के हिट भइल जेकरा से भोजपुरी, फिल्म व्यवसाय में आगे बढ़ल। 1982 से 2002 तक हालत सबसे खराब रहे। 2003 में मनोज तिवारी के 'ससुरा बड़ा पईसावाला' के सुपर-डुपर हिट भइला के बाद भोजपुरी सिनेमा के नया अवतार भइल। मोहन जी प्रसाद रवि किशन के लेके सईयां हमार आ सईयां से कर द मिलनवा हे राम बनवलन। मोहन जी प्रसाद के अगिला फिल्म 'पंडित जी बताईं ना बिआह कब होई' हिट भइल। अमिताभ बच्चन, अजय देवगन, जूही चावला, मिथुन चक्रवर्ती जइसन नामी कलाकार भोजपुरी फिल्म में काम करे लगलन। भोजपुरी फिल्मन के शूटिंग लंदन, मॉरिशस आ सिंगापुर में होखे लागल। सुभाष घई, सायरा बानो आ राजश्री प्रोडक्शन जइसन लोग भोजपुरी से जुड़ल। दिनेश लाल यादव निरहुआ, पवन सिंह, पंकज केसरी, विनय आनंद, कृष्णा अभिषेक , रानी चटर्जी, नगमा, भाग्यश्री, दिव्या देसाई, पाखी हेगड़े, रिंकू घोष, मोनालिसा, श्वेता तिवारी जइसन कलाकार लोग भोजपुरी सिनेमा में काम करे लागल। इ उहे दौर रहे जब कल्पना भी गायिका के रूप में सामने अइली। हमार टीवी आ महुआ समेत भोजपुरी के कई टीवी चैनल के शुरुआत भइल। भोजपुरी फिल्म के ट्रेड मैगजीन भोजपुरी सिटी, भोजपुरी संसार सहित कई गो फिल्मी पत्रिका शुरू भइली सन। 2011 में मनोज तिवारी के फिल्म भोजपुरिया डॉन के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में नेवता मिलल। 2010 में निर्माता प्रवेश सिप्पी के फिल्म मृत्युंजय पहिला फिल्म रहे जवन पूरा देश में एके साथ लागल। नायिका रिंकू घोष इहे साल फिल्म बिदाई से भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री में जवन जगह बनवली उ आजु तक बरकरार बा। नवका हिरोइन में गुंजन पंत फिल्म मार देब गोली, केहू ना बोली से हिट भइली। भोजपुरी में एगो आउर सुपर स्टार विनय आनंद, 'ननिहाल' फिल्म के जरिये अइलन। पवन सिंह आ मोनालिसा के 'एक और कुरुक्षेत्र' चर्चा में रहल।

ज्यादे कमाए वाला फिल्म देवरा बड़ा सतावेला, दाग, दामिनी, सात सहेलियां सब दो करोड़ से तीन करोड़ तक के व्यवसाय कइलक। निरहुआ पाखी हेगड़े आ मोनालिसा सफल रहल लोग। 2011 में कहीं भोजपुरी फिल्म अधिवेशन, कहीं भोजपुरी फिल्म अवार्ड तो कहीं भोजपुरी सिटी सिने अवार्ड मतलब सालो भर भोजपुरी फिल्म उत्सव रहल। दिल्ली के 'विश्व भोजपुरी सम्मलेन' में भी फिल्म पर विशेष सत्र राखल गइल। ए साल राजकुमार पाण्डेय के ट्रक ड्राईबर, निर्माता आलोक कुमार के फिल्म साजन चले ससुराल आ निरहुआ के पारिवारिक फिल्म औलाद अच्छा बिजनेस कइली सन। 2012 से 2014 तक में बनल सैंकड़ों फिल्म में खाली दु-चार गो फिल्म सुपर हिट भइल होई।

ई त एगो मोटा-मोटी रिपोर्ट बा। निष्कर्ष बा कि भोजपुरी फिलिम गीतन में अश्लीलता बढ़त जात बा। संगीत ज्यादातर घिसल-पिटल आ कॉपी-पेस्ट टाइप मिलत बा। अभी भी ठाकुर साहब रेप करत बारन आ लाला जी मुंशीगिरी करत बारन। शैलेंद्र, मजरूह सुल्तानपुरी, अनजान, लक्ष्मण शाहाबादी जइसन गीत बिला गइल बा। रोमांस के नाम पर हिरोइन के ढ़ोंढी दिखावे से बाज नईखे आवत लोग। हमरा ईयाद आवता कि हमहूं 2004-05 में गोरखपुर पोस्टिंग के बेरी भोजपुरी फिल्म “ससुरा बड़ा पइसेवाला” के बनते देखले रहीं.... टैक्स फ्री आउर अनुदान खातिर निर्माता के स्क्रिप्ट जमा करे के होखेला.... पटकथा जइसे जइसे पढ़नी, कपार पीटत गइनी.... पटकथा आ गाना का रहे? हिंदी – उर्दू वाक्य विन्यास के बेसरम भोजपुरी अनुवाद रहे...

www.bhojpurisahityangan.com

तीस लाख के लागत से बनल ई फिल्म 110 लाख के कारोबार कईलस... निर्माता सुधाकर शर्मा जी लाल हो गइलन.... एकरा बाद त भोजपुरी फिल्म में पईसा लगावे वालन के लहार आ गइल। एक से एक नएका धनिक लोग फेटा बांध के कूद पड़ल... जइसे कवनों पिआज- लहसुन ना खाए वाला आदमी पईसा खातिर मांसाहारी होटल बनवा के नफ्फा कमाला... वइसे ही लोग भोजपुरी फिल्म बनावे मे कूद पड़लन... बड़का बड़का लोग के ईमान हीले लागल... !

एक से एक फूहर फिल्म बनल... एक से एक अश्लील गाना लिखाइल... 20 करोड़ भोजपुरी भाषी आबादी के आगे गावत अइसन रील आ गाना रखाए लागल... मनोज तिवारी, रवि किशन, दिनेश लाल यादव 'निरहुआ', रानी चटर्जी, रिंकू घोष, पाखी हेगड़े, श्वेता तिवारी जइसन लोग भोजपुरी सितारा हो गइल... बॉलीवुड आ साउथ इंडियन फिल्मन के असफल कलाकारन खाति भोजपुरी फिल्म उद्योग सफलता के देसी फार्मूला बन गइल, भोजपुरी भाषा के फिल्म अब "आइफा" और कई विदेशी अवार्ड समारोहन में प्रीमियर खातिर जाता... कहल जाता कि एह फिल्मन से देशभर के सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर एक बार फेर जिंदा हो गइल बा.... अब भोजपुरी में अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी, जया बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती, अजय देवगन, जितेंद्र से ले के हर छोटा बड़ा अभिनेता, गायक, निर्माता निर्देशक आ कॉमेडियन लोग काम करत बाड़ें।
भूमिका चावला, नीतू चंद्रा, ऋषिता भट्ट, श्वेता तिवारी, संभावना सेठ, भाग्यश्री, रश्मि देसाई, नगमा, पाखी हेगड़े, मोनालिसा, रिंकू घोष, रंभा, अनारा गुप्ता, लवी रोहतगी, प्रीति झिंगियानी खाति भोजपुरी फिल्म अब जान हो गइल बा... वइसे ही राहुल राय, मुकेश खन्ना, कृष्णा, विनय आनंद, रवि किशन, शक्ति कपूर , कुमार सानू, अनूप जलोटा, एकता कपूर, उदित नारायण भी जइसन लोग आजकल भोजपुरी में कूद गइल बा... अमिताभ बच्चन भी भोजपुरी में फिल्म 'गंगा' में काम कइलन... लेकिन भोजपुरी माटी के लोग, जेकरा दिल मे भोजपुरी रहत बा, उ लोग दूरे से सलाम करत बा...

सवाल बा कि चोली आ दुपट्टा के फारमुला के बिना फिल्म के वितरण लटक जाता...? मनोज वाजपेयी, प्रकाश झा जइसन भोजपुरी माटी के लोग एहसे काहे नईखे जुड़त ? भोजपुरी लिखवइया लोग काहे चुप बा ? ई पईसा से पईसा कमाये आ बनावे खातिर बाहर के रुपया भोजपुरी फिल्म में लगा के एकर नास करे के रीत कब रुकी ? ई कुछ सवाल बा, सोचीं सभे...!

सरकार से निहोरा बा कि उ अइसन समिति बनावे जे भोजपुरी सिनेमा पर नजर रखे, अश्लीलता के सीमा तय करे। अश्लील फिल्म बनावे वालन के खुल के विरोध आ आच्छा फिल्म बनावे वालन के सम्मानित कइला के जरूरत बा। कलाकार लोग जे भोजपुरी फिल्म में काम करत बारन उ भोजपुरी टोन सीख ले त आउर अच्छा होई। विश्व स्तर पर भोजपुरी के पहचान भोजपुरी फिल्म आ साहित्य से बा एह से एह प ध्यान दिहल जरूरी बा।

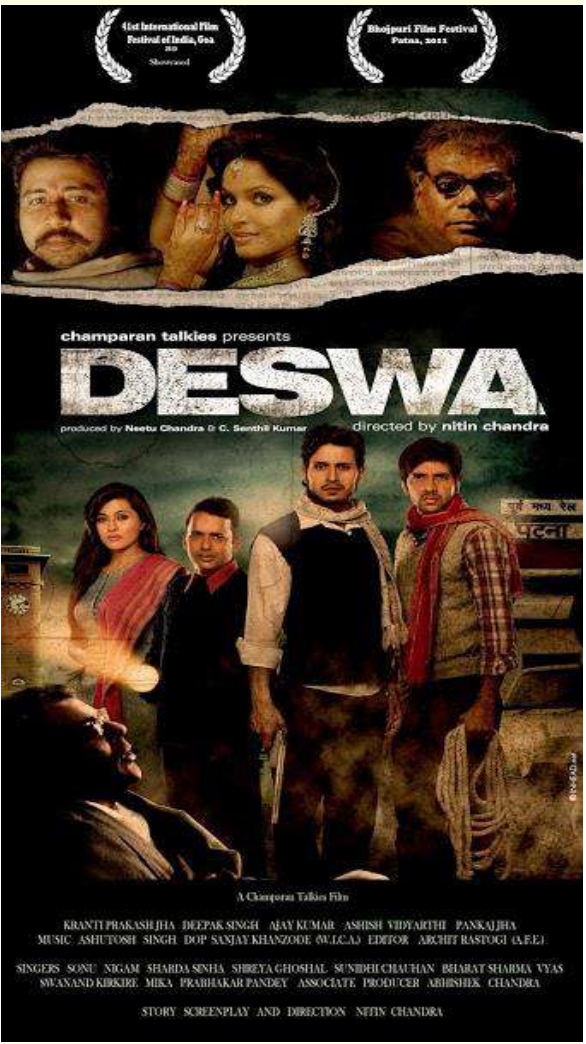


इहाँ से कहाँ ?
भोजपुरी सिनेमा के भविष्य



नितिन चंद्रा

डुमरांव , बिहार के रहे वाला युवा निर्देशक , भोजपुरी सिनेमा मे सकारात्मक चर्चा के शुरुवात करे वाला देसवा फिल्म के निर्देशक नितीन चंद्रा जी , भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति कलम से ही ना कैमरा से भी आपन शत प्रतिशत दे रहल बानी । फिलहाल इँहा के मुम्बई मे बानी ।



चारो ओरि बरफ जमल बा, श्वेत आ शांत... अमरीका उज्जर भईल बा। सिंगापुर, फिजी, टोरंटो के बाद काल्ह न्यू जर्सी में "देसवा" देखे खाति करीब 50 आदमी, - 10 डिग्री तापमान में भी जुटल रहे । जइसे-जइसे फिल्म आगा बढ़त रहे, लोगन के चेहरा पर अलग-अलग भाव देख के कम से कम मन के अतना शांति जरूर मिलत रहे कि भोजपुरी में सार्थक सिनेमा खाति दर्शकन के कवनो कमी नईखे। ना देस में ना बिदेस में।

सिनेमा चित्र के नदी में बहत भाषा आ भाव के लहर पर पात्र रूपी पतवार से खेवत एक नाव ह। अगर कहानी आ चित्रण मनोहारी होखे त उ नाव लाखन दरसकन के बइठा के कथा के ओह पार दोसरा किनारा प ले जा सकेला।

बहुत लोग के बहुते सवाल रहे, आ बेसी लोग इहे पूछत रहे के अतना बढियां फिलिम बनल बा त रिलीज काहे नईखे होत ? एह सवाल के जवाब देबे में पूरा भोजपुरी सिनेमा आ भोजपुरी भाषा के सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आ राजनितिक स्थिति के लेखा जोखा हो सकेला। एकर विश्लेषण में भोजपुरी सिनेमा के काल लुकाइल बा। इ आलेख में हम भोजपुरी सिनेमा के भविष्य प आपन व्यक्तिगत बिचार रखे के कोसिस कर रहल बानी। लोग आपन विवाद प्रकट करे खातिर आजाद बा।

सिनेमा कहानी कहे के जरिया हा। रउवा अगर महाकाली के गुफा, बराबर गुफा चाहे ऐतिहासिक कवनो गुफा के बारे में पढब त ओह मे पुरान चित्रकारी होखत रहे, जेकरा में लोग आपन कहानी, दिनचर्या चाहे कवनो दोसरा जरुरी घटना के चित्रण करत रहे। इंसान अगर अपना आपके अभिव्यक्त ना करे त ओकर पूरा अस्तित्व ख़तरा में पड़ जाई, आ ई बात व्यक्ति विशेष से लेके समाज आ राष्ट्र स्तर पर लागू होला।

लेनिन कहले रहलन - ***Of all the arts, for us the cinema is the most important.***
माने "दुनिया के मय कला में सबसे जरुरी जवन कला ह उ ह सिनेमा।"

भले ही हमनी के देस में लोग सिनेमा के खाली मनोरंजन कहे बाकि मय लो के अचेतन मन में ई बात रहेला कि सिनेमा के असर अच्छा - बुरा बा। एही से सेंसर बोर्ड के भी गठन भईल बा।

देखल जाव त जवन भाषा के साहित्य मजबूत रहल बा, ओह भाषा के सिनेमा आ गीत-संगीत मजबूत आ प्रभावी , रुचिकर रहेला। कहे के मतलब के मुख्यधारा के सिनेमा आ गीत संगीत हर वर्ग खातिर होला। बाकिर भोजपुरी में अईसन नईखे।

पिछ्ला दू साल में एगो गुजराती फिल्म ऑस्कर खाति गईल आ दू गो सुपर हिट भईल। उ कुल गुजराती फिल्म बंबई के मल्टीप्लेक्स में भी लागल रहे आ सुपर हिट रहे। कारण ई बा के गुजराती समाज भी कबो आपन भासा के ना बिसरले । इ खाली उत्तर प्रदेश आ बिहार में भईल बा। "देसवा" नीयन फिलिम एक साल में पांच गो बनी त शायद भोजपुरी सिनेमा में एगो बड़ सुधार हो सकेला लेकिन इ सोचल कि गाय के बिना दुहले डायरेक्ट पनीर निकल जाउ वाला बात होई । त आखिर होखी कईसे ? अब एकरा में जवन शार्ट टर्म मने की तुरंत से ठीक होखे वाला तरीका होखी इ कि बड़ा चेहरा जइसे की मनोज बाजपाई नीयन लोग हीरो बने। अनुराग कश्यप आ प्रकाश झा नीयन लोग भोजपुरी फिल्म बनावे। आ ना त बड़ा बजट के फिल्म बने, जेकरा में अउलाह पईसा लगा के मार्केटिंग कईल जा सके।

भोजपुरी सिनेमा के भविष्य तबे बा जब नया दर्शक जुड़े, नया दर्शक मतलब के पढ़ल लिखल भोजपुरिया मध्यम वर्ग। दोसर कवनो राह नईखे। काहे कि गते-गते भोजपुरिया समाज भी आधुनिकता के तरफ बढ़त बा, साक्षरता बढ़ रहल बा आ जवना तरीका के दर्शक बनावल गईल बा इ धीरे-धीरे कम होखे लगिहें आ जल्दिये भोजपुरी सिनेमा आपन मौत मर जाई। भोजपुरी में जवना दिन सिनेमा मरी ओह दिन शायद भाषा पर भी घात हो चुकल होखी। एहिसे उ परिस्थिति के इन्तजार कइल ठीक नईखे। भोजपुरी सिनेमा आज जवना दौर में बा एहिजा एगो बहस त हो रहल बा बाकिर हर तरह के बहस बंद भईल एगो भयावह स्थिति जइसन होखी। हमरा एकरे में अवसर लउकता, इहाँ से एकरा के मोड़ल जा सकेला, एगो नया रास्ता पर एकरा के उतारल जा सकेला , आ मोड़े के शार्टटर्म तरीका त हम बतवनी ह, आ लांगटर्म तरीका इ बा कि भोजपुरी इलाका के सारा स्कूल में भोजपुरी के पढ़ाई आ भोजपुरी माध्यम में पढ़ाई (दू तीन विषय में) बारहवीं तक अनिवार्य कईल जाव, आठवाँ सूची में डालल जाव, साहित्य आ सिनेमा खाति सरकारी अनुदान होखे, जइसे की दोसरा भासा कुल में बा। आज से 20 साल बाद सफल भोजपुरी फिल्म खातिर तुरंत पाठ्यक्रम आ साहित्य में बड़हन काम करहीं के पड़ी। दोसरा कवनो रास्ता नईखे।

आज जब दिन भर अंग्रेजी बोले वाला लोग न्यू जर्सी, सिंगापूर आ टोरंटो जईसन जगह प "देसवा" देखि के अच्छा-अच्छा बात कहता, त हमरा मन में उम्मीद के किरन जागल बा। लेकिन अगर लोग अपना पहचान के लेकर जल्दी संवेदनशील ना होइहैं, त इहे सफ़ेद आ ठंडा बरफ के चादर नीयन भोजपुरी भाषा, एकर पहचान, साहित्य आ सिनेमा ठंडा पड़ जाई आ एकरो पर उज्जर कफन चढ़ि जाई।

निहोरा

भोजपुरी साहित्य खाति एगो डेग हमनी के बढ़ल, एगो डेग रउआ भी हमनी के साथे बढ़ायीं इहे निहोरा बा । कविता, गीत, कहानी, व्यंग्य, इतिहास, विज्ञान जईसन विषय पे भोजपुरी में लिखीं । आखर नवका साहित्यकार लोगन के एक मंच दे रहल बा । आपन रचना के हमनी तक पहुँचायीं, राउर बात सुने आ पढ़े खातिर भोजपुरिया समाज आँख बिछवले बा।

रचना भेजे के कुछ जरूरी नियम :

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं । कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं । रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा - **aakharbhojpuri@gmail.com**
- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं।

* छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहना खातिर स्थान दियाई। ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं।






पूर्वी आयोजन भोजपुरी आतिर
5वाँ भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन
दिनांक-03 दिसम्बर, 2014
स्थान-प्रभा प्रकाश डिग्री कॉलेज, पंजवार, रघुनाथपुर, सिवान
आयोजक: आखर
www.facebook.com/Aakhar






आज बात शान ह
भोजपुरी हमनी के पहिचान ह..




आखर


पुरी ।
पुरी ॥







